Postal Regn. No. C.G./RYP DN/65/2022-24
रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका
प्रकाशन तिथि, 1 जनवरी 2024

आर.एन.आई.पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

किलोल

वर्ष 8 अंक 1, जनवरी 2024

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
खुदरा 80/-
वार्षिक 720/-
आजीवन 10000/-

संपादक

डॉ. रचना अजमेरा

सह-संपादक

डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, डॉ. पी सी लाल यादव, बलदाऊ राम साहू, धारा यादव, गंगाधर साहू, नेम सिंह कौशिक

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

कुन्दन लाल साहू

अपनी बात

प्यारे बच्चो,

समय हमेशा आगे बढ़ने का नाम है. घड़ी की सुई बताती हैं कि हमें अनवरत आगे बढ़ते रहना चाहिए. सफलता के लिए बस आवश्यकता है समय के साथ चलने, करने व बढ़ते रहने का. हमारे देश की गौरवशाली इतिहास से ज्ञात होता है कि जो लोग समय के साथ चले है वे निश्चित ही सफल हुए हैं. जिन्हें हम महापुरुषों के रूप में याद करते हैं.

आप भी समय प्रबंधन करते हुए अपनी पढ़ाई के साथ-साथ जीवन उपयोगी कुछ नया हुनर सीखें समझे और समय का सदुपयोग करते हुए अपनी परीक्षा की तैयारी में जुट जावें.

आप सभी को नए वर्ष की ढेर सारी बधाई शुभकामनाएं.

हाँ! एक बात और किलोल पढ़ना एवं अपनी रचना भेजना न भूलें. आपकी रचनाओं का हमें इंतिजार रहेगा.

आपकी अपनी
डॉ. रचना अजमेरा

संस्थापक : डॉ. आलोक शुक्ला

मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा
- विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में.
सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित
तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित,
संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

अनुक्रमणिका

कोयल 7

नन्हा सा हूं मैं प्यारा सा हूं 8

मैरी क्रिसमस 10

पंचतंत्र की कहानी 12

बदरा छाए धन घोर 14

बाल पहेलियाँ 16

अधूरी कहानी पूरी करो 18

माँ-पापा का कहना मानो 18

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 19

कु. भूमिका राजपूत,आठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 20

कु. प्रिया राजपूत, आठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 21

वागेश (डाकिया बाबू) पिता श्रीमान लेखराम साहू मरोद कुरूद ,धमतरी द्वारा भेजी गई कहानी 22

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 23

गरीब किसान और कंजूस जमींदार 23

बनो नवाब 24

रानी लक्ष्मीबाई मेरे सपने में आयी थी 25

मच्छर भिन भिन गाता है 27

चित्र देख कर कहानी लिखो 28

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 28

दिवाली के वे दिन 28

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 31

जाड़े का मौसम 32

पहेली 33

बगीचा 34

क्योंकि हम कवि हैं 36

चलत हे धान लुवई 37

सूरज 39

सिंघाड़ा 40

गुड़िया 42

सर्दी है 43
सर्दी है 44
4 जनवरी को ब्रेल दिवस पर विशेष 45
प्यारा बन्दर 47
लाल रंग की कार 48
बिल्लो रानी बन गई टीचर 49
राउत के दोहे 51
कहां जाबे डोकरा 53
हमको आगे बढ़ना है 56
हिम की बूंदें 57
क्रिसमस का त्योहार 58
सर्वोत्तम फल 60
कैकू और क्रैबी 65
सबसे बड़ी खुशी 68
विज्ञान पहेलियाँ 72
छत्तीसगढ़ी जनऊला 74
सूरज आओ 76
मृणालिनी 77
मुंगेसर के फूल 79
खुशी 81
तुझे आगे बढ़ना ही होगा 82
अपने लक्ष्य को अपनी निगाहों में रखो 84
संबंधों के बगैर अधूरी है जिंदगी 86
तू जिद्द पर अड़ तो सही 88
खुशी बांटो और खुश होकर जियो 90
हो सके तो मुस्कुराहट बांटिये 92
तुम भी प्रयास कर सकते हो 94
तू कोशिश तो कर 96
सफलता के बीज बोया करते हैं 98
कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है 100
नियति का सम्मान करो 102
मेरे प्यारे पापा 104

नव -वर्ष 106
बंदर के किस्सा 108
सूखा पेड़ 109
ईमानदार चिंटू 110
जाड़ के जादू हे 111
होनी के आगे कुछ नहीं कर पायेगा 113
कैसे-कैसे रंग दिखाता है समय 115
ख़ुशी से आँखें भर आई हैं 117
जो होगा वो भी अब तो देखा जायेगा 119
मेरे गीत को तुम आवाज़ दो 121
शीत ऋतु की पहेलियाँ 123
बाल 125
जीवन की सीख 127
बढ़ती ठंड 128
मैं हूं समय 129
सेंटा क्लाज 131
क्रिसमस 133
ठंड का मौसम 134
अपनी सुनो 135
गंगा अमली के रुख म 136
आईस पूस पुन्नी के तिहार 138
आ मैना आ 140
जय होय स्वामी विवेकानन्द 142
बचपन 144
बनावटी चेहरा 145
गुम है वो आवाज 146
गायों की टोली 148
आत्म नियंत्रण 150
क्रिसमस 152
बच्चा बन जाऊं 153
एक,बड़ा पहाड़ 155
बेमौसम, बादर पानी 156

दिवसो की माला 157
छम- छम बूँदें बरसीं 158
प्यारा मेरा स्कूल 160
मोक्षांश की महत्वाकांक्षा 162
नए साल की, नई शुरुआत 164
सत्य 165
कुछ तो हौसला कर 167
दर्द-ए-दिल 169
फटाखे की जिद 171
आजादी के लिए बिगुल बजादो 172
बेटियां 174
सर्दी आई 175
जीत की एक आस हो 176
देव और भेड़िया 178
लालची बंदर 179
पेड़ बोला 180
खीर 181
विकसित भारत @ 2047 - युवाओं की आवाज़ 182
अमर कहानी 186
मैं तुम्हारा टीचर हूँ 188
विघटनकारी तकनीक 191
मेरी टीचर 193
आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस 194
बाल पहेलियाँ 199
मैं विद्यार्थी हूँ 201
महू कुछ करके देखाहूँ 203
स्कूल में कैप्टन का चुनाव 205
दोस्ती 207
आलसी खरगोश 209
नवा साल मनाबो 210
एक सुंदर सुबह हुई 211

कोयल

रचनाकार- सुचित्रा सामंत सिंह, बस्तर

कोयल बागों की रानी है,
मीठी इसकी बोली,
कुहू-कुहू का गीत सुनाती,
मधुर गीत से सबको लुभाती.

आमों की डाली पर बैठी,
कभी दिखती कभी छिप जाती,
लगती प्यारी इसकी बोली,
मधुर गीत से सबको लुभाती.

लगता है कुछ कहना चाहती है,
बच्चों के संग रहना चाहती है,
लुका-छुपी खेलना चाहती है,
मधुर गीत से सभी को पुकारती.

*****

नन्हा सा हूं मैं प्यारा सा हूं

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

नन्हा सा हूं मैं प्यारा सा हूं
सबकी आंखों का तारा सा हूं.

मैं खेलू बनकर खिलौना
और सबको हंसाता हूं मैं.
रोता हूं मैं और हंसता हूं मैं
सबकी नीदें चुराता हूं मैं.

सबकी आंखों का तारा हूं मैं

नन्हा सा हूं मैं प्यारा सा हूं
सबकी आंखों का तारा सा हूं.

मैं खेलूं गोदी में खूब
झूला बाहों का झूलाते हैं सब.
कह कह के बाबू हमें
घर वाले बुलाते हैं सब.

चांद से सुन्दर प्यारा हूं मैं

नन्हा सा हूं मैं प्यारा सा हूं
सबकी आंखों का तारा सा हूं.

जो भी देखे कहे राजा हमें
राजा बेटा कहलाता हूं मैं.
जब भी हमें आती है निंदिया
मां के गोद में सो जाता हूं मैं.

सबके लिए नन्हा सा फूल प्यारा हूं मैं

नन्हा सा हूं मैं प्यारा सा हूं
सबकी आंखों का तारा सा हूं मैं.

*****

मैरी क्रिसमस

रचनाकार- भूपसिंह 'भारती', हरियाणा

पूरा करने को वादा,
सपनों का शहजादा,
देखो शांता क्लॉज आया,
ओढ़ लाल लबादा.

बर्फ पड़ती रात में,
सर्दी लगती गात में,
फिर भी उपहार तो,
शांता लाया साथ में.

स्लेज में भर के प्यारे,
लाया उपहार न्यारे,
पाकर उपहार ये,
खुश थे बच्चे सारे.

चूम लो ये चांद तारे,
पूरे हो सपने सारे,
बच्चे ही हैं कर्णधार,
कल के रखवारे.

बातों में अमृत घोलो,
मन भेद सारे खोलो,
क्रिसमस ट्री सजा के,
मैरी क्रिसमस बोलो.

खिल उठी फुलवारी,
बच्चे मारे किलकारी,
बोले मैरी क्रिसमस,
आज दुनिया सारी.

*****

पंचतंत्र की कहानी

भेड़िया आया

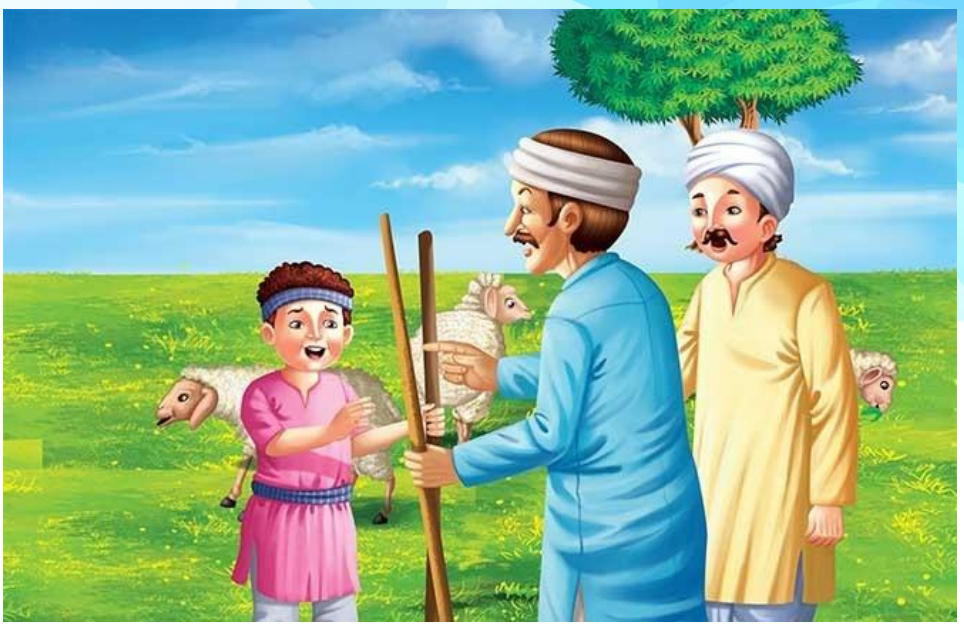

बहुत समय पहले की बात है, एक गाँव में एक चरवाहा रहा करता था. उसके पास कई सारी भेड़ थीं, जिन्हें चराने वह पास के जंगल में जाया करता था. हर रोज सुबह वह भेड़ों को जंगल ले जाता और शाम तक वापस घर लौट आता. पूरा दिन भेड़ घास चरतीं और चरवाहा बैठा-बैठा ऊबता रहता. इस वजह से वह हर रोज खुद का मनोरंजन करने के नए नए तरीके ढूँढ़ता रहता था.

एक दिन उसे एक नई शरारत सूझी. उसने सोचा, क्यों न इस बार मनोरंजन गाँव वालों के साथ किया जाए. यही सोच कर उसने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया "बचाओ-बचाओ भेड़िया आया, भेड़िया आया."

उसकी आवाज़ सुन कर गाँव वालें लाठी और डंडे लेकर दौड़ते हुए उसकी मदद करने आए. जैसे ही गाँव वालें वहाँ पहुँचे, उन्होंने देखा कि वहाँ कोई भेड़िया नहीं है और चरवाहा पेट पकड़ कर हँस रहा था. "हाहाहा, बड़ा मज़ा आया. मैं तो मज़ाक कर रहा था. कैसे दौड़ते-दौड़ते आए हो सब, हाहाहा." उसकी ये बातें सुन कर गाँव वालों का चेहरा गुस्से से लाल-पीला होने लगा. एक आदमी ने कहा कि हम सब अपना काम छोड़ कर, तुम्हें बचाने आए हैं और तुम हँस रहे हो ? ऐसा कह कर सभी लोग वापस अपने अपने काम की ओर लौट गए.

कुछ दिन बीतने के बाद, गाँव वालों ने फिर से चरवाहे की आवाज़ सुनी. "बचाओ बचाओ भेड़िया आया, बचाओ." यह सुनते ही, वो फिर से चरवाहे की मदद करने के लिए दौड़ पड़े. दौड़ते-आवाज़ गाँव वालें वहाँ पहुंचे, तो क्या देखते हैं? वो देखते हैं कि चरवाहा अपनी भेड़ों के साथ आराम से खड़ा है और गाँव वालों की तरफ़ देख कर ज़ोर-ज़ोर से हँस रहा है. इस बार गाँव वालों को और गुस्सा आया. उन सभी ने चरवाहे को खूब खरी-खोटी सुनाई, लेकिन चरवाहे को अक्ल न आई. उसने फिर दो-तीन बार ऐसा ही किया और मज़ाक में चिल्लाते हुए गाँव वालों को इकठ्ठा कर लिया. अब गाँव वालों ने चरवाहे की बात पर भरोसा करना बंद कर दिया था.

एक दिन गाँव वालें अपने खेतों में काम कर रहे थे और उन्हें फिर से चरवाहे के चिल्लाने की आवाज़ आई. "बचाओ बचाओ भेड़िया आया, भेड़िया आया बचाओ", लेकिन इस बार किसी ने भी उसकी बात पर गौर नहीं किया. सभी आपस में कहने लगे कि इसका तो काम ही है दिन भर यूँ मज़ाक करना. चरवाहा लगातार चिल्ला रहा था, "अरे कोई तो आओ, मेरी मदद करो, इस भेड़िए को भगाओ", लेकिन इस बार कोई भी उसकी मदद करने वहाँ नहीं पहुंचा.

चरवाहा चिल्लाता रहा, लेकिन गाँव वालें नहीं आए और भेड़िया एक-एक करके उसकी सारी भेड़ों को खा गया. यह सब देख चरवाहा रोने लगा. जब बहुत रात तक चरवाहा घर नहीं आया, तो गाँव वालें उसे ढूँढते हुए जंगल पहुँचे. वहाँ पहुँच कर उन्होंने देखा कि चरवाहा पेड़ पर बैठा रो रहा था.

गाँव वालों ने किसी तरह चरवाहे को पेड़ से उतारा. उस दिन चरवाहे की जान तो बच गई, लेकिन उसकी प्यारी भेड़ें भेड़िए का शिकार बन चुकी थीं. चरवाहे को अपनी गलती का एहसास हो गया था और उसने गाँव वालों से माँफ़ी माँगी. चरवाहा बोला "मुझे मॉफ कर दो भाइयों, मैंने झूठ बोल कर बहुत बड़ी गलती कर दी. मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था."

कहानी से सीख- इस कहानी से यह सीख मिलती है कि कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए. झूठ बोलना बहुत बुरी बात होती है. झूठ बोलने की वजह से हम लोगों का विश्वास खोने लगते हैं और समय आने पर कोई हमारी मदद नहीं करता.

*****

बदरा छाए धन घोर

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

चली हवा पुरुवा सर सर
बदरा छाए धन घोर.
झम झम की आवाज
होने लगा चारो ओर.

बादल चमके बिजुरी कड़के
नाच रहा वन मोर.
बढ़ने लगा जोर से
सर्दी का भारी शोर.

सूरज भी डर कर
देख रहा बादलों की ओर.
नहीं चला उसका भी
बादल पर कोई जोर.

धरती की प्यास बुझाने
पानी बरस रहा चहूं ओर.
खुश हो गए किसान सारे
खेतों में छाई हरियाली चारो ओर.

*****

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

1. गला-वक्ष को छोड़कर
इस पक्षी का रंग है नीला।
मुड़ी चोंच होती नीचे को
कीट - शिकार में है फुर्तीला।

2. सूखा - सा मेवा होता है
ऊँचे तरु में, फल अति दूर।
मीठा स्वाद, बहुत गुणकारी
खनिज - विटामिन से भरपूर।

3. लंबे - हरे, बेल से लटकें
फाइबर, विटामिन से भरपूर।
कच्चा खाओ, सलाद बनाओ
भोजन से मत रखना दूर।

4. दानों से हैं चावल मिलते
खरीफ फसल होती, लो जान।
पौधा पानी अधिक मांगता
जल्दी करो नाम अनुमान।

5. तालाबों - झीलों में उगता
फल होता है गोल - तिकोना।
कच्चा या उबालकर खाओ
हल्का मीठा, स्वाद सलोना।

6. सफेद रंग का द्रव होता है
इसमें वसा, प्रोटीन, कैसीन।
पी लो या घी - दही बना लो
देता है बल - बुद्धि नवीन।

उत्तर - 1नीलकंठ 2 खजूर 3 खीरा 4 धान 5 सिंघाड़ा 6 दूध

*****

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी–

माँ-पापा का कहना मानो

सर्दियों का मौसम था. नन्हे खरगोश के घर को चारों ओर घास-फूस लगाकर गर्म रखा जाता था.

रात होने वाली थी. नन्हे खरगोश के मम्मी-पापा ने उससे कहा, आ जाओ नन्हे, सो जाओ. रात होने वाली है और बाहर ठंड भी बहुत है.

लेकिन मुझे नींद नहीं आ रही. मुझे बाहर जाकर खेलना है. नन्हे ने कहा.

बेटा, कल सुबह खेल लेना. रात में बाहर जाओगे तो बीमार हो जाओगे.

मम्मी ने उसे समझाया. मम्मी की बात मानकर नन्हे आकर लेट गया.

लेकिन उसे जरा भी नींद नहीं आ रही थी. वह थोड़ी देर लेटा. फिर मम्मी-पापा से छिपकर बाहर आ गया और जंगल में घूमने निकल पड़ा.

वह चलता जा रहा था. इस तरह कभी भी वह जंगल की ओर नहीं आया था.

लेकिन वह रास्ता ध्यान से देख रहा था. मिट्टी में उसके पाँवों के छोटे-छोटे निशान बनते जा रहे थे.

इनकी मदद से मैं घर वापिस पहुँच जाऊँगा, उसने सोचा.

वह काफी दूर आ गया था. तभी जोर से आँधी चलने लगा. वापिस जाने का रास्ता उसके पाँवों के वो निशान ही बता सकते थे.

लेकिन तेज आँधी ने इतनी धूल उड़ाई थी कि निशान मिट गए थे. वह घबराकर इधर-उधर भागने लगा. उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें ?

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

कुछ देर पश्चात आंधी थम गई.जैसे ही वह आगे बढ़ा, उसे एक सुंदर तालाब मिला. पानी इतना साफ था कि वह नीचे तक देख सकता था और चारों ओर तैरती मछलियाँ छोटे-छोटे इंद्रधनुष की तरह लग रही थी.वह नन्हें खरगोश तालाब से इतनी प्रभावित हुआ कि उसने इसे करीब से देखने का फैसला किया.वह पानी के किनारे पर पहुँचकर बेहतर दृश्य देखने के लिए झुक गया लेकिन जैसे ही उसने पानी की ओर झुका,वह अपना संतुलन खो बैठा और वह तालाब में गिर गया.पानी के नीचे जाते ही नन्हें खरगोश घबरा गया. उसने कभी तैरना नहीं सीखा था और उसे यकीन हो गया कि वह पानी में डूबने ही वाला है.लेकिन जैसे ही वह हार मानने वाला था,वैसे ही तेज छलांग मारते हुए टांमी तालाब में कूदकर,उसे बचा लिया.टांमी कोई और नहीं,वह नन्हे खरगोश का दोस्त ही था.

नन्हे खरगोश ने अपने दोस्त टांमी को धन्यवाद देते हुए कहा-" मैंने अपने मम्मी-पापा से छुपकर यहाँ आया,उसका कहना नहीं माना.जिसके कारण मुझे मुसीबतों का सामना करना पड़ा." दोस्त अगर आप सही समय में नहीं आते और मुझे तालाब से नहीं निकालते तो मेरी मृत्यु निश्चित थी.मैं अपने घर का पता भी भूल चुका हूँ.चलिए मुझे आप मेरे मम्मी-पापा के पास पहुँचा दीजिए.मेरी मम्मी-पापा भी मेरे घर न पहुँचने पर,बहुत परेशान हो रहे होंगे.तभी टॉमी,ठीक है दोस्त कहते हुए दोनों उसके घर पहुँचते हैं.उसके मम्मी-पापा भी बहुत परेशान थे.इधर-उधर ढूंढकर, हार-थककर घर में निराश बैठे थे. अचानक अपने नन्हें खरगोश को आते देखकर

उसके मम्मी गले लगाकर उसका हाल-चाल पूछते हैं.नन्हें खरगोश 'आप बीती' जानकारी को अपनी मम्मी-पापा को बताते हैं.उन दोनों ने टाॅमी को धन्यवाद देते हैं.जिसके कारण उसके बच्चे उन्हें मिल पाया.

बच्चों हमें इस कहानी से समझा कि हमें अपने मम्मी-पापा एवं अपने से बड़ों का कहना मानना चाहिए.अगर इन बातों को हम अनदेखा करते हैं तो निश्चित ही नन्हे खरगोश की तरह हमें भी कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है.और हमें इस कहानी से एक और जानकारी प्राप्त होती है कि जिस तरह टाॅमी ने अपने दोस्त नन्हें खरगोश की जान बचाई.इसी तरह हमें भी अपने दोस्त के ऊपर आए हुए मुसीबतों को दूर करना चाहिए.

कु. भूमिका राजपूत,आठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

कुछ देर पश्चात आंधी थम गई.आंधी में फंसे हुए हंस को देखकर,नन्हे खरगोश ने कहा- तुम कौन हो? यहाँ क्या कर रहे हो?हंस ने बताया कि वह जंगल में घूमने के लिए निकला था.अचानक आंधी आ गई,जिसमें मैं बुरी तरह से यहाँ फंस गया हूँ.फिर हंस ने,नन्हे खरगोश से पूछा-तुम यहाँ क्या कर रहे हो?तुम्हारे माता-पिता कहाँ है?नन्हे खरगोश ने अपने सारी बातें बताई.

दोनों घर का रास्ता भूल गए थे.जिसके कारण वे दोनों जंगल में इधर-उधर भटक रहे थे.कुछ देर बाद उन्हें एक जामुन का पेड़ देखा.जिसमें पूरे वृक्ष,फलों से लदे हुए थे.दोनों भूख से तड़प रहे थे.हंस ने जामुन के ऊपर चढ़कर पेड़ से कुछ जामुन लाया और फिर दोनों ने जामुन खाकर वहाँ से घर की ओर निकल गए.

कुछ क्षण पश्चात वहाँ एक शेर आकर नन्हे खरगोश को शिकार बनना चाहा.लेकिन हंस बहुत ही बुद्धिमान था.शेर के निशाना बनाने के पहले उन्होंने नन्हे खरगोश को पकड़ कर आकाश की ओर उड़ गये.कुछ देर बाद उन्हें खरगोश का घर मिल गया. नन्हे खरगोश के माता-पिता अपने बच्चों को देखकर बहुत खुश हुए.नन्हे खरगोश ने अपने माँ-पापा को बीती हुई घटना की जानकारी दिया.उसके माता-पिता ने हंस को धन्यवाद दिया.जिसके कारण शेर के शिकार से हमारे बच्चे बच गए.दोनों में दोस्ती हो गई.हंस भी उन्हीं लोगों के साथ रहकर खुशी से अपना जीवन बिताए.

कु. प्रिया राजपूत, आठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

नन्हे खरगोश अपने घर जाना चाहता है.लेकिन रास्ता भूल जाने के कारण हार थककर,पास में एक बड़ा-सा पेड़ के नीचे बैठकर वह रोने लगा.उसे अपनी मम्मी-पापा का याद सताने लगा.ठंड के कारण उसकी तबीयत भी खराब हो जाती है.उधर उसके माँ-पापा जब उसे देखने के लिए उसे कमरे में जाते हैं.तब नन्हे खरगोश को न पाकर,वह परेशान हो जाते हैं और जंगल की ओर वे दोनों ढूंढने निकल जाते हैं.

इधर नन्हा खरगोश चलते-चलते अचानक गड्ढे में गिर जाता है.वह बचाओ-बचाओ की आवाज देकर जोर-जोर से रोने लगता है.तभी दूसरा खरगोश उसी रास्ते से गुजर रहा था.वह उसकी आवाज सुनकर गड्ढे को देखता है.खरगोश को गड्ढे में देखकर उसकी मदद करने को सोचता है.लेकिन उसे कुछ समझ में नहीं आता कि गड्ढे में गिरे हुए खरगोश को कैसे निकाले?तभी उसे,पास में एक रस्सी दिखाई देता है.उस रस्सी को गड्ढे में गिराकर,खरगोश को पकड़ने के लिए कहता है.खरगोश उस रस्सी के सहारे बाहर निकल जाता है. नन्हे खरगोश बाहर आने के बाद मदद किये हुए खरगोश को धन्यवाद देता है.

नन्हे खरगोश की तबीयत खराब होने के कारण चल फिर नहीं सकता था.इस कारण दूसरा खरगोश उसे अपने घर ले जाने का विचार करता है.तभी नन्हे खरगोश के माँ-पापा उसे ढूंढते-ढूंढते आ जाता है.नन्हे खरगोश अपने माँ-पापा को देखकर उसके पास चले जाते हैं और अपनी बीती हुई घटनाओं को बताते हैं.उसके माँ-पापा, दूसरे खरगोश को बहुत-बहुत धन्यवाद देते हैं.जिसकी वजह से उसके बच्चा,मौत के मुंह से वापस आए हैं.दोनों में दोस्ती हो जाती है उन दोनों खुशी से परिवार की तरह एक साथ रहते हैं.

वागेश (डाकिया बाबू) पिता श्रीमान लेखराम साहू मरोद कुरूद ,धमतरी द्वारा भेजी गई कहानी

नन्हा खरगोश जंगल के कपा देने वाली ठंडी रात में बहुत घबरा गया था, उसे यह अंदाजा नहीं था कि रात में तेज आंधी और धूल का सामना करना पड़ेगा क्योंकि वह बहुत छोटा था और उनके मम्मी पापा उसका इस तरह से ख्याल रखते थे कि आज तक उसे इस तरह की कोई भी मुसीबत का सामना नहीं करना पड़ा था, जैसे-जैसे रात बीतता गया नन्हे खरगोश के दिल की धड़कन बढ़ने लगी और उन्हें अपने मम्मी पापा की बातों की याद आने लगा नन्हा खरगोश रोते हुए सोचने लगा कि काश मैं अपने मम्मी पापा का बात मान लेता तो मैं आज इस मुसीबत में नहीं पड़ता, तेज आंधी के कारण उनके पांव के निशान भी मिट गए थे जिसके कारण वह घर भी नहीं जा पा रहा था वह हिम्मत हार चुका था, तभी उनके मम्मी पापा उन्हें ढूंढते हुए अचानक से मिले मिलते ही मानो नन्हे खरगोश के जान में जान आई फिर सभी खुशी-खुशी घर गए,

सीख - यह कहानी हमें यह सिखाती है कि " सदैव अपने मम्मी पापा का बात मानो " क्योंकि वे सदैव हमारे भलाई के बारे में ही सोचते हैं.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

गरीब किसान और कंजूस जमींदार

एक गांव में एक अमीर जमींदार रहता था. उसे अपने पैसों पर बड़ा घमंड था. जितने अधिक पैसे उसके पास थे, उतना ही वह कंजूस भी था. अपने खेतों में काम करने वाले किसानों से वह खूब काम करवाता, मगर पगार कौड़ी भर भी न देता.

मजबूर गरीब किसान मन मारकर उसके खेत में काम करते. उसी गांव में रामू नामक एक किसान रहता था.

उसके पास थोड़ी सी जमीन थी. उसी में खेती-बाड़ी कर वह अपना और अपने परिवार का गुजारा चलाता था. रामू बड़ा मेहनती था. वह दिन भर अपने खेत में काम करता और अपनी मेहनत के दम पर इतनी फसल प्राप्त कर लेता कि अपने परिवार के लिए दो वक्त की रोटी जुटा सके.

गांव के बाकी किसानों के पास रामू के मुकाबले अधिक जमीनें थीं. वे रामू की मेहनत देखकर हैरान होते कि कैसे इतनी सी जमीन में वह इतनी फसल उगा लेता है. एक साल गांव में भयंकर सूखा पड़ा.

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

बनो नवाब

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

बच्चों तुम हो फूल गुलाब,
महकाओ जीवन के ख्वाब.

जीवन के हर इक प्रश्न का,
देना हरदम सही जवाब.

बुरे बोल कभी न बोलना,
आदत ये है बड़ी खराब.

ऊंची रखना सोच सदैव,
सदा देखना ऊंचे ख्वाब.

जीवन यही बना आसान,
लाओ खुशियां बनो नवाब.

*****

रानी लक्ष्मीबाई मेरे सपने में आयी थी

रचनाकार- हार्षिता राजपूत, कक्षा 7, सातवीं शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला
खेदामारा विकासखण्ड व जिला दुर्ग

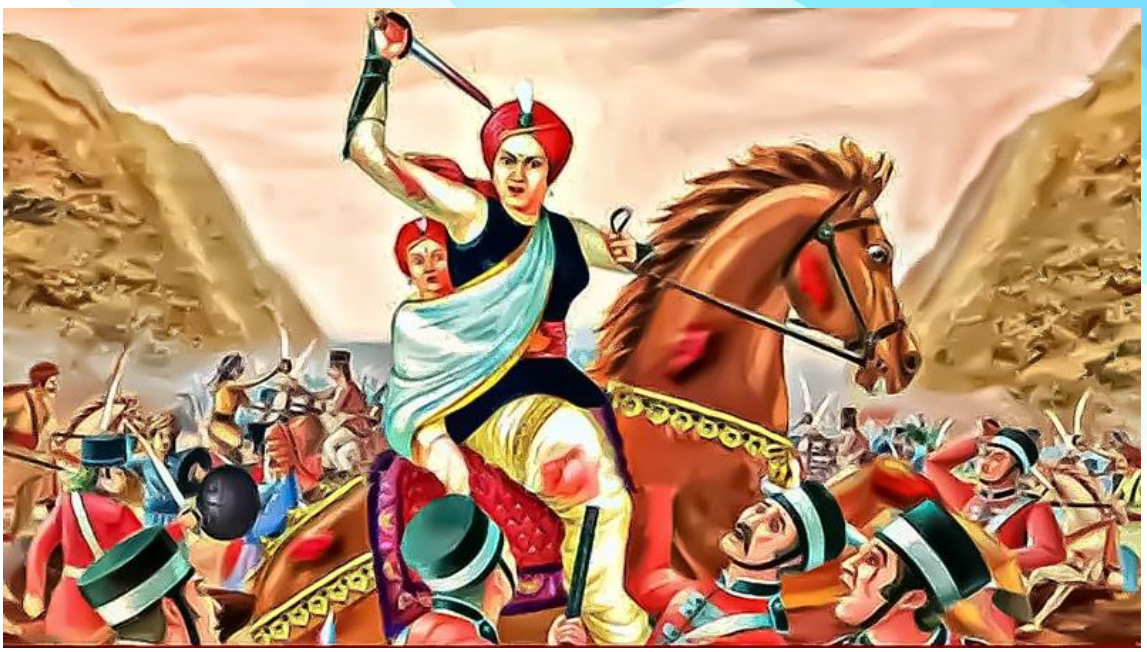

रानी लक्ष्मीबाई मेरे सपने में आयी थी.
वीरता की गौरव गाथा मुझे सुनाई थी.

जलाई सन्तावन में क्रांति की मशाल.
नारी होकर भी कर दिया कमाल .
देश के दुश्मनों को धूल चटाई थी.
रानी लक्ष्मीबाई मेरे सपने में आयी थी
कैसे उसने अंग्रेजों से लोहा लिया डटकर.
स्वराज की मांग पर अड़ी कमर कसकर .
सुनकर किस्सा मेरी आँखें भर आयी थी.
रानी लक्ष्मीबाई मेरे सपने में आयी थी.

सारंगी, पवन, बादल ने दिया साथ मेरा.
अंतिम क्षण में भी छोड़ा न हाथ मेरा.
कानों में आज़ादी की बजती शहनाई थी.
रानी लक्ष्मीबाई मेरे सपने में आयी थी.

कहने लगी मुझसे तुम जुल्म न सहना.
अपने हक़ के लिए जी जान से लड़ना.
ये बात उसने मुझे खूब समझायी थी.
रानी लक्ष्मीबाई मेरे सपने में आयी थी.

*****

मच्छर भिन भिन गाता है

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

मच्छर भिन भिन गाता है,
सबको बहुत सताता है.

रुके हुए जल में अक्सर,
अपनी फसल बढ़ाता है.

मलेरिया औ डेंगू से,
सबको बहुत सताता है.

ओडोमस से डरता है,
स्वच्छता से घबराता है.

खून चूस के मानव का,
अपनी भूख मिटाता है.

जो सोते मसहरी लगा,
मच्छर मुंह की खाता है.

*****

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी–

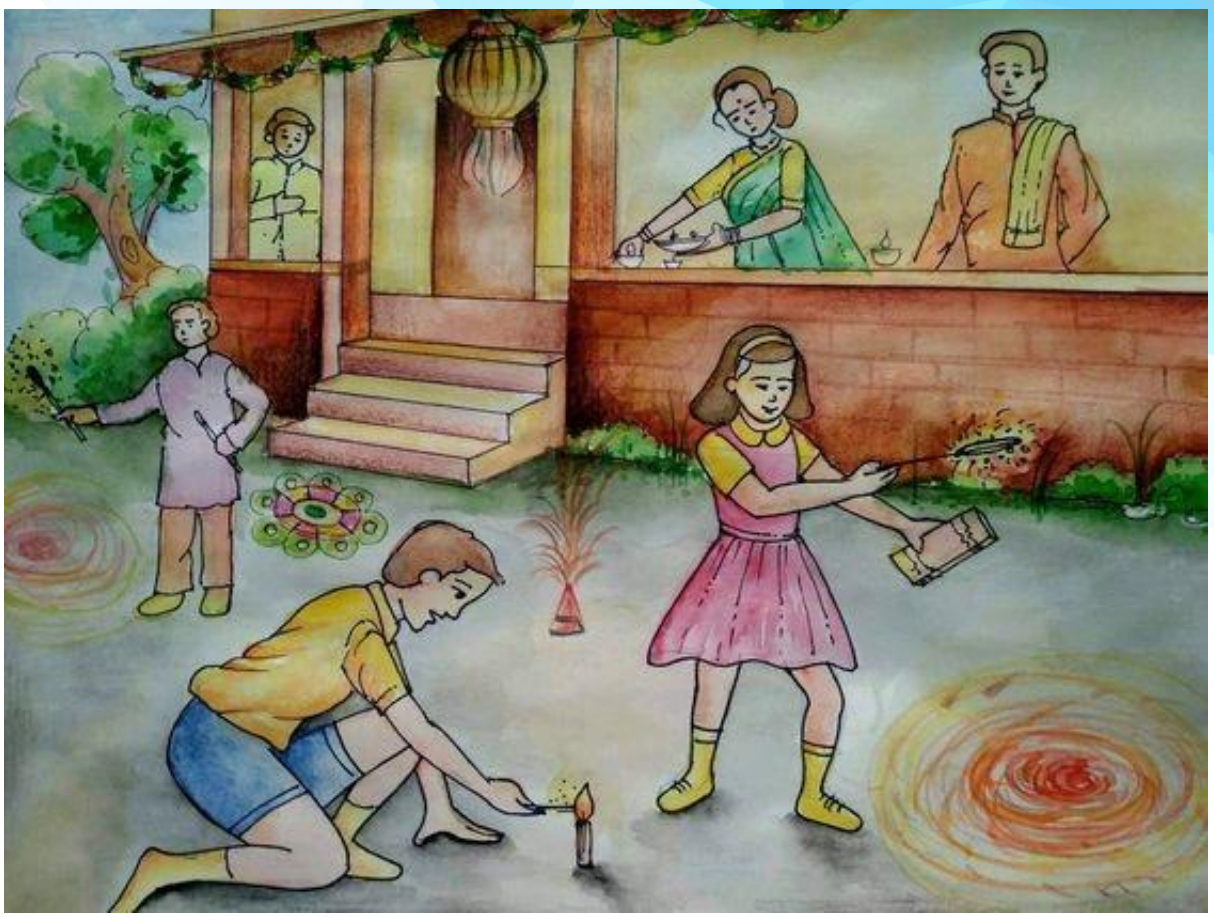

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

दिवाली के वे दिन

रीता एक गरीब परिवार में जन्मी हुई होनहार लड़की है. रीता की मां कुछ दिन पहले ही स्वर्ग सिधार गई है.जिसके कारण रीता हमेशा परेशान रहती है. पिताजी,दो वक्त की रोटी के लिए इधर-उधर भटकते रहते हैं.बड़ी मुश्किल से दो वक्त की रोटी का इंतजाम होता है.उसके पिताजी को चिंता सताए जा रही थी.कि कुछ दिन के बाद दीपावली का त्यौहार है.जिसमें गांव के सभी बच्चे नए-नए कपड़े पहनेंगे, पटाखे फोड़ेंगे और फुलझड़ियां जलाएंगे.लेकिन मेरी रीता,उन सबको देखकर दुःख होगा.मैं चाहते हुए भी रीता के लिए नए कपड़े एवं पटाखे नहीं खरीद पा रहा हूँ.तभी रीता अपने पिताजी को उदास देखकर कहती है- पिताजी आप क्या सोच

रहे हैं?आपका चेहरा चिंतित दिखाई दे रहा है.तभी उसके पिताजी कहते हैं-बेटा कुछ दिन बाद दिवाली का त्यौहार आने वाला है.गाँव के सभी बच्चे नए-नए कपड़े पहनेंगे,फटाका फोड़ेंगे, फुलझड़ियां जलाएंगे और मैं आपके लिए कुछ नहीं ले पा रहा हूँ.जिसकी वजह से मैं उदास हूँ. रीता कहती है-आप चिंता ना करें, मुझे कुछ नहीं चाहिए.हम लोग घर में लक्ष्मी माँ की प्रतिमा है. दिवाली के दिन उसी का पूजा करेंगे.लक्ष्मी माँ ही हमारे दुःखों को दूर करेंगी.बेटी की समझदारी को देखकर उसके पिताजी का आंख भर जाता है.उसका चिंता दूर हो जाता है और वह अपने काम में लग जाते है.

गाँव के मुखिया की बेटी गीता,रीता की अच्छी सहेली है.वह रीता के परिवार के स्थिति के बारे में जानती है.वह रीता के उदासीपन को दूर करने के लिए बाहर घूमने के लिए ले जाती है और खुशखबरी देती है कि मेरे पिताजी दिवाली के दिन एक बहुत बड़ा कार्यक्रम करेंगे.जिसमें रंगोली एवं दीप सजावट का प्रतियोगिता होगा. जिसमें गाँव के सभी बच्चे उसे प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं.जो भी प्रतियोगिता में प्रथम आएगा उसे इनाम दिया जाएगा.चूंकि गीता जानती है कि उसकी सहेली रीता,रंगोली बनाने में दक्ष है.इस कारण उसे प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रेरित करती है.तभी रीता कहती है-गीता बहन!अभी मेरा मन नहीं है और नहीं मेरे पास रंगोली बनाने के लिए रंग है.मेरे परिवार की स्थिति को आप जानते ही हैं.तभी गीता कहती है-आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है.वहाँ जो भी चीजों की आवश्यकता होगी,उसकी व्यवस्था मैं कर दूंगी.मैंने आपका नाम प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए दर्ज करा चुकी हूँ. रीता अपनी सहेली की कहे हुए बातों का सम्मान करती है.रीता और गीता तैयार होकर प्रतियोगिता हो रहे हैं उसे स्थान में पहुँचते हैं.

कुछ क्षण पश्चात रंगोली का प्रतियोगिता प्रारंभ होता है. प्रतियोगिता में भाग लिए बच्चे रंगोली बनाने में जुट जाते हैं.सभी कोई बहुत ही सुंदर ढंग से रंगोली बनाते हैं.कोई रीति रिवाज का, कोई परंपराओं का,कोई लोकगीतों से संबंधित,तो कोई त्यौहार से संबंधित अपने रचनात्मक कौशल को प्रदर्शित करते हैं.थोड़ी देर बाद गाँव के मुखिया एवं प्रतियोगिता के चयन कर्ता बारी-बारी से सभी के रंगोली को निरीक्षण करते हैं.सभी का रंगोली बहुत ही प्रेरणादायक थी. रीता की रंगोली दिवाली त्योहार से संबंधित था.रीता ने पटाखा फोड़ते एवं फुलझड़ियां जलाते हुए बच्चों का चित्र बनाया था.जिसे सभी को बहुत ही पसंद आया.निरक्षण करने के

पश्चातअब बारी थी इनाम के घोषणा करने की, सभी प्रतिभागी दिल थाम कर अपने-अपने जगह पर बैठे थे.हृदय की गति बढ़ी हुई थी.तभी मुखिया के द्वारा कुमारी रीता का नाम रंगोली में प्रथम आता है.सभी कोई ताली बजाते हैं और रीता को ढेर सारा इनाम एवं पैसा मिलता है. बचे हुए प्रतिभागी को सांत्वना पुरस्कार देते हैं.थोड़ी देर पश्चात दीप प्रतियोगिता होता है.जिसमें चारों ओर बच्चे दीप को सजाए रहते हैं दीपों की चमक ऐसा लग रहा था, मानो जैसे भगवान श्री राम वहाँ पहुँच गए हो और उसके लिए चारों तरफ से दीप सजाकर रखें हैं.दीप प्रतियोगिता में भाग लिए सभी प्रतिभागी को मिठाई का पैकेट देते हैं सभी खुशी से अपने-अपने घर चले जाते हैं.

रीता,गीता को धन्यवाद देती है.जिसकी वजह से वह प्रथम आई.गीता,रीता को अपने पिता जी के पास ले जाते हैं और उसका परिचय कराते हैं.गीता के पिताजी अपने तरफ से रीता को नए कपड़े एवं ढेर सारा गिफ्ट देते हैं और रीता को कहते हैं-बेटा,आपको कभी भी कोई भी चीजों की आवश्यकता होगी तो आप यहाँ आ सकती हो.आप गीता की तरह मेरी बेटी के समान हो.रीता,उसे धन्यवाद देते हैं और खुशी-खुशी से घर आकर अपने पिताजी को सारी बातों की जानकारी देती हैं.पिताजी कहते हैं बेटा,देवी माँ ने ही गीता के रूप में हमारे जरूरतों की पूर्ति किया हैं.उस लक्ष्मी माँ को बहुत-बहुत धन्यवाद जिनका आशीर्वाद हम पर हमेशा बना रहे.

बच्चों आप सब जानते ही हैं कि दीपावली का त्यौहार असत्य पर सत्य की जीत और अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है.केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं है बल्कि इसका सामाजिक, आध्यात्मिक,पौराणिक, ऐतिहासिक और आर्थिक महत्व भी है.यह त्यौहार सामाजिक एकता को बढ़ाने का कार्य करता है.

हालांकि दिवाली के त्यौहार का एक दूसरा पहलू भी है,जिसे हम अपने आनंद के लिए वर्ष-प्रतिवर्ष बढ़ावा देते जा रहे है.वो दूसरा पहलू है,आतिशबाजी और पटाखे फोड़ना.यह एक ऐसा कार्य है,जिसका दिवाली के त्यौहार से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं है और ना ही दिवाली के त्यौहार में इसका कोई ऐतिहासिक और पौराणिक वर्णन है,इसके साथ ही दिवाली पर होने वाली इस आतिशबाजी के कारण दिन-प्रतिदिन पर्यावरण प्रदूषण में वृद्धि होती जा रही है.इसके स्थान पर रंगोली,खेलकूद, दीप सजावट आदि प्रतियोगिता पर ध्यान देना चाहिए.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

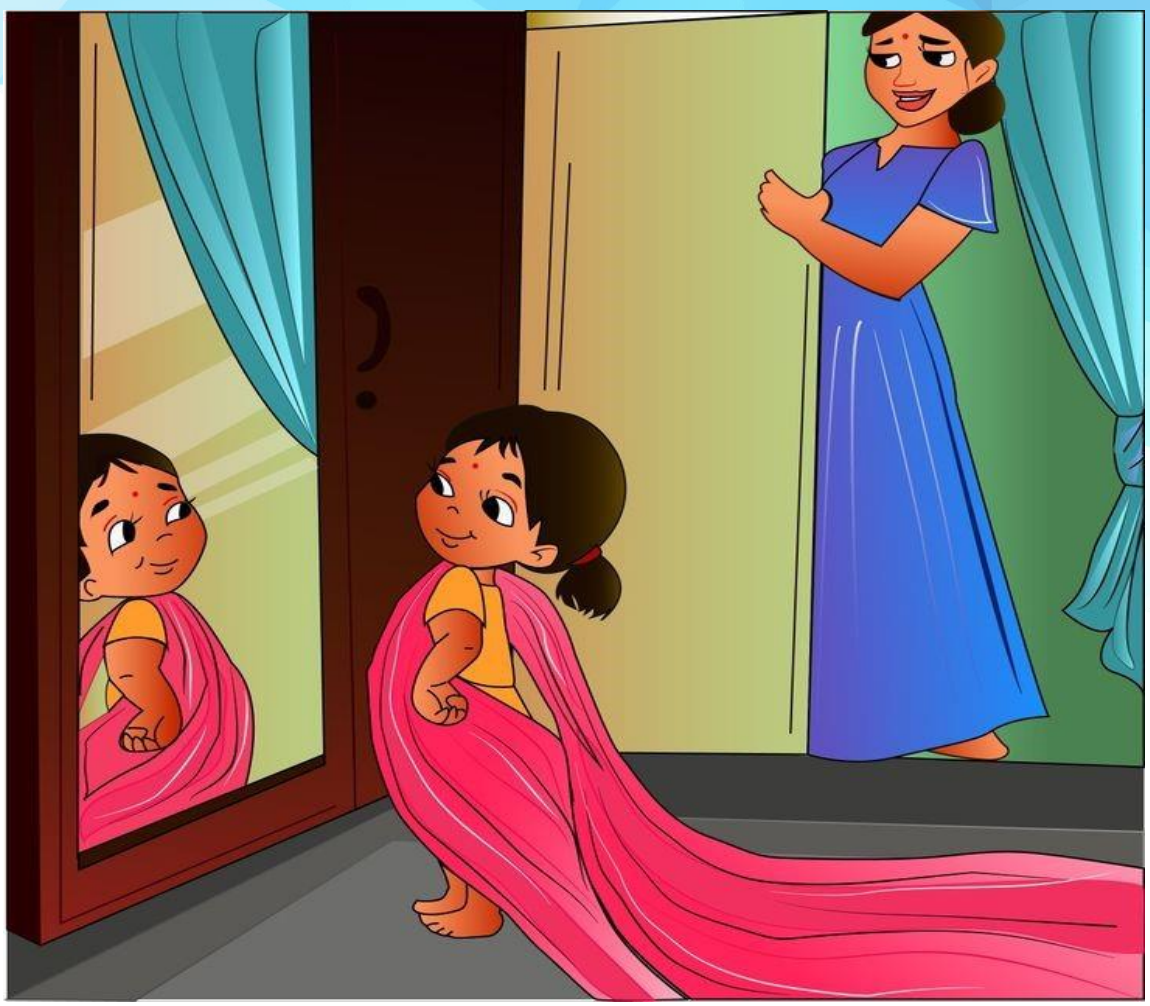

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल kilolmagazine@gmail.com पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

जाड़े का मौसम

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

धूप मलमली मन को भाया,
ख़ुशी लुटाता जाड़ा आया.

जिनको लगता ज्यादा जाड़ा,
गर्म रजाई वो ले आया.

करते कसरत जो रोजाना,
जाड़ा खुश हो के मुसकाया.

गर्म समोसे चाय देख के,
जाड़े का मौसम इठलाया.

स्वेटर कोट गर्म कम्बल से,
जाड़े का मौसम घबराया.

*****

पहेली

रचनाकार- आभा चंद्रा, सातवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम शाला तारबहार बिलासपुर

1) चार कुआं बिन पानी 18 चोर बैठ लिए एक रानी?

2) एक बर्तन में दो अंडा एक गरम एक ठंडा

3) ऐसा कौन सा मिठाई है जो फूल और फल से बनता है?

4) ऐसा क्या है जो मई में है सितंबर में नहीं आग में है पानी में नहीं?

5) हरा आटा लाल पराठा सब सखियों ने मिलकर बाटाँ?

उत्तर -1) कैरम , 2) चाँद, सूरज और आसमान,3) गुलाब जामुन, 4) गर्मी,5) मेहंदी

*****

बगीचा

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

हरा - भरा कितना सुंदर है
मेरी छत पर खिला बगीचा.

घर में इतनी जगह नहीं है
बना सकूँ पौधों की क्यारी,
भरी - भरी पौधों - फूलों से
मुझको भाती है फुलवारी,

प्रकृति के प्रति मेरे लगाव ने
सबका ध्यान खुशी से खींचा.

वातावरण सुखद मनमोहक
आकर्षक लगती हरियाली,
तितली - भौंरे हैं मड़राते
चिड़ियाँ चहकें डाली - डाली,

जैविक खाद स्वयं देता हूँ
समय-समय पर मैंने सींचा.

टूटे मग, प्लास्टिक बाल्टियाँ
पेंटबाक्स जो हुए पुराने,
मिट्टी के बर्तन, डिब्बों में
खिलते पौधे लगें सुहाने,

देख - देख ऐसा लगता है
बिछा हो ज्यों रंगीन गलीचा.

अद्भुत शांति - ताजगी मिलती
माँ देवों पर फूल चढ़ातीं,
अतिथि प्रशंसा करते मेरी
दादी मेरा मान बढ़ातीं,

चाय की वहीं चुस्कियाँ लेकर
माता-पिता ने स्नेह उलीचा.
मेरी छत पर खिला बगीचा.

*****

क्योंकि हम कवि हैं

रचनाकार- यशवंत पात्रे, कक्षा 8वीं, शास.पूर्व माध्य.शाला बिजराकापा (न), मुंगेली

हमारे आगे हमारे कलम की छवि है,
हम इतनी कविता सुनते-सुनाते हैं,
क्योंकि हम कवि हैं.
हमें कवि बनाने वाला हमारा मन ही तो है,
क्योंकि हम कवि हैं.
ना जाने हमने कितनी कविता लिखी, सुनाई है,
क्योंकि इतनी कविताएँ हमने बनाई है,
क्योंकि हम कवि हैं.
सूर्य उगता है दिन में तो दिनकर कहते हैं,
संध्या के बाद रात होती है तो निशा कहते हैं,
हमारी इतनी चर्चा है, क्योंकि हम कवि हैं.

*****

चलत हे धान लुवई

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

खेत के बोंवाए धान ह पाकगे,
हँसिया धर के निकले बनिहार.
पागी खोंच के लुवत हें जम्मों,
बिकट सोन उगले खेती-खार.

सिला बिनत हें गाँव के टूरी-टूरा,
पसर-पसर गबके लाडू अउ मुर्रा.
सुकसी मछरी के साग ह सुहावय,
जाड़ म हनय डोकरा बबा मेछर्रा.

माईलोगिन डोहारे बोझा बाँधके,
टूरा पिला मन खांध म धरे हें सुर.

रचमच-रचमच बइला-गाड़ी आगे,
कोठार म खरही गंजे परबत लुर.

अधिरतिया म किसान दउरी फांदे,
झरे धान के करे बिहनिया ओसाई.
पंखा के हावा ले उड़ागे बदरा मन,
पोठ-पोठ बीजा के करय नपाई.

कोठी-डोली म लछमी के होगे बास,
तिहार मनाए के चलय खूब तियारी.
नवा चाउर के सोहारी अउ दूधफरा,
रंधनही खोली म बनावत हे सुवारी.

*****

सूरज

रचनाकार- अशोक आनन

सूरज जल्दी आना जी.
मुन्ना को जगाना जी.

मुन्ना सोता रहता है.
नींद को अपनी कहता है.

निंदिया दूर भगाना जी.
उसकी ठंड उड़ाना जी.

वह तो राजा बेटा है.
वह तो केवल लेटा है.

*****

सिंघाड़ा

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

झीलों - तालाबों में उगता
हरा - बैंगनी रंग सिंघाड़ा.
बाजारों में धूम मचाता
दूर - दूर तक झंडा गाड़ा.

जल पर जातीं पसर लताएँ
सफेद रंग के आते फूल.
फलों के सिर पर दो काँटे- से
कहना सींग, बड़ी है भूल.

छिलका मोटा किंतु मुलायम
आकृति में है गोल - तिकोना.
कच्चा या उबालकर खाओ
हल्का मीठा, स्वाद सलोना.

कच्चे की सब्जी बनती है
सूखी गूदी, बनती आटा.
पोटैशियम, फाइबर युक्त है
खाओ, रोग करेंगे टा-टा.

*****

गुड़िया

रचनाकार- अशोक आनन

गुड़िया रूठी - रूठी है.
मुंह फुलाकर बैठी है.

गुस्सा उसका मीठा है.
नाक पर आकर बैठा है.

आओ , उसे मनाएं जी.
गुस्सा दूर भगाएं जी.

गुड़िया मान भी जाओ न.
हंसकर ज़रा दिखाओ न.

*****

सर्दी है

रचनाकार- अशोक आनन

इतनी भी क्या जल्दी है.
मम्मी ! कितनी सर्दी है.

मुझे ज़रा और सोने दो.
चाहे सवेरा होने दो.

स्कूल की तो छुट्टी है.
बस्ता- लंच की कुट्टी है.

प्लीज ! मुझे जगाओ न.
पढ़ने की रट लगाओ न.

आज न बस को आना है.
स्कूल आज न जाना है.

*****

सर्दी है

रचनाकार- अशोक आनन

तन पर ऊनी वर्दी है.
ओ हो ! कितनी सर्दी है.

जो तन को अपने ढांपे.
वह सूरज थर-थर कांपे.

गुनगुन गुनगुन गुनगुनी.
धूप गुलाबी स्वर्ण कणी.

थप्पड़ जड़ती सर्द हवा.
देंगे जिसकी हम गवाह.

दिन हैं छोटे , रात बड़ी.
ठंड ने कर दी खाट खड़ी.

*****

4 जनवरी को ब्रेल दिवस पर विशेष

रचनाकार- नरेश कुमार सोनी, कबीरधाम

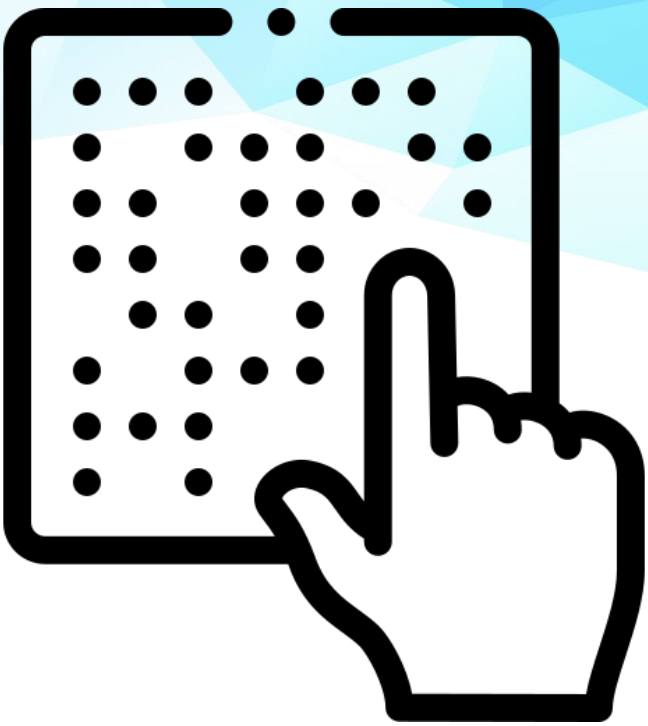

बच्चों समग्र शिक्षा के अंतर्गत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की श्रेणी में कुल 21 प्रकार की दिव्यांगता में से दृष्टि बाधित बच्चों के शिक्षण प्रशिक्षण में ब्रेल लिपि का अपना एक अलग ही स्थान है आज 4 जनवरी को विश्व ब्रेल दिवस के रूप में मनाया जाता है ब्रेल उभरी हुई 6 बिंदुओं की ऐसी लिपि है जिसके द्वारा पढ़ने व लिखने के लिए दृष्टि की आवश्यकता नहीं होती इसे स्पर्श द्वारा पढ़ा और लिखा जा सकता है इसका आविष्कार ही इसलिए किया गया है कि स्पर्श द्वारा पढ़ना लिखना संभव हो सकी उनके लिए जो दृष्टि विहीन है इस लिपि का आविष्कार श्री लुई ब्रेल स्वयं दृष्टिहीन थे संसार की अनेक विभूतियां में लुई ब्रेल का अपना ही स्थान है संसार के दृष्टि विहीन व्यक्तियों को जो देन उन्होंने दी उसके लिए युगांतर तक दृष्टिहीन उनके आभारी रहेंगे लुई ब्रेल का जन्म एक गरीब फ्रांसीसी परिवार में 4 जनवरी 1809 को हुआ इनके पिता श्री सीमौन ब्रेल पेरिस के कुपड़े नामक एक छोटे से गांव में निवास करते थे और जिन चमड़ा बनाने का काम करते थे अपने पिताजी की दुकान पर खेल-खेल में बाल लुई चमड़ा काटने की छुरी उनकी आंख में चुभ गई जिसके परिणाम स्वरूप उनकी आंखें खराब हो गई और वह दृष्टिहीन हो गए इस समय वे केवल 3 वर्ष के थे इस दुर्घटना से संपूर्ण

ब्रेल परिवार मे शोक छा गया परंतु नियति ने अपने एक विशिष्ट उद्देश्य पूर्ति के लिए उन्हीं दृष्टिहीन बनाया था इनकी उज्ज्वल ज्योति संसार कीदृष्टिहीनों को ज्ञान ज्योति देने के लिए विधि ने शायद यह विचित्र खेल खेला था लुई ब्रेल को पैरिस की अंध पाठशाला मे शिक्षा के लिये भेजे गये यहां कुछ वर्षों के पश्चात उनकी कार्यकुशलता तथा योग्यता के कारण उन्हें शिक्षक के पद पर नियुक्त गया उन्होंने 6 बिन्दुओं की सहायता से एक ऐसे लिपि का विकास किया जिसने दृष्टि हीनो के लिए शताब्दी से बंद ज्ञान की द्वार खोल दिए अविष्कार करता की स्मृति में यह लिपि ब्रेल नाम सी प्रसिद्ध हुई.

जनवरी 1952 लुई ब्रेल की मृत्यु के 100 वर्ष पश्चात फ्रांसीसी सरकार इनके सी देहावशेष को कुपरे के समाधि क्षेत्र से निकालकर पैरिस की पैथिआन मे ले आई तथा देश के महान व्यक्तियों की समाधि के मध्य स्थान देकर सम्मानित किया परंतु चिरस्थाई स्मारक तो उनकी उभरी हुई छ बिदिया ही है जो दृष्टिहिनों के जीवन में उनके एकाकी छणो में आनंद तथा ज्ञान का आधार बने रहेगी युगांतर तक उनकी राहों पर दीप दिलाती रहेगी.

*****

प्यारा बन्दर

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

प्यारा बन्दर सच कहे,खरहा बोले खेल,

जंगल में चलने लगीं,खुशियों वाली रेल,

खुशियों वाली रेल,चले हैं सभी दिवाने,

सब मस्ती में चूर,गा रहे फ़िल्मी गाने,

नदिया पेड़ पहाड़,देखते सभी नजारा,

ख़ुशी सफर पे चला,हमारा बन्दर प्यारा.

*****

लाल रंग की कार

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला", बालोद

देखो बिटिया ! सूरज की,
लाल रंग की कार.

सात रंगों वाली लाइट.
बहुत बढ़िया ब्राइट.
चक्के चमकीले चार.
लाल रंग की कार.

आई है देख गौरैया.
खड़ा है मुर्गा भैया.
कौआ पंख पसार.
लाल रंग की कार.

उनके साथ जाना है.
घूम-घाम कर आना है.
चल हो जा तैयार.
लाल रंग की कार.

*****

बिल्लो रानी बन गई टीचर

रचनाकार- डॉ0कमलेंद्र कुमार, जालौन

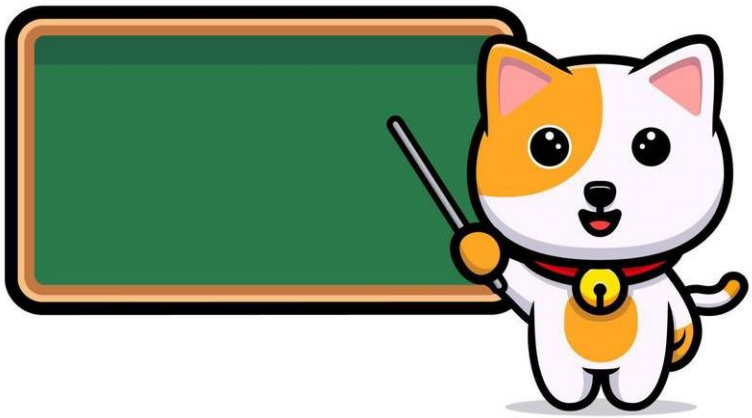

एक बार बिल्लो रानी ने बन
टीचर हुई सयानी.
लेकर लंबी छड़ी नुकीली,
आईं बिल्लो रानी.

पास चूहों के जाकर बोली,
आज पढ़ो गिनतारा.
चुनमुन आओ मुनमुन आओ,
आओ रोली तारा.

बिल्लो रानी मन मे सोंचे,
आज मिला है मौका.
तुरत पकड़कर चूहे सारे,
मारूंगी मैं चौका.

बिल से छोटी पुस्तक देकर,
बंटी चूहा बोला.
पढ़कर जरा दिखाओ बिल्लो,
पाठ एक है खोला.

टीचर तुमको मानेंगे जब,
एक सांस पढ़ जाओ.
फीस तुरत दे देंगे हम सब,
अपना नाम बताओ.

दाल नहीं गल पाई उसकी,
बिल्लो रानी बोली.
कल से पढ़ने आना बच्चों,
कोचिंग मैने खोली.

*****

राउत के दोहे

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

आगे तिहार देव उठनी के, मंडप बनायेंव कठई के हो.
कोहड़ा के पकुवा फदकाके, जेंवाबो कान्हा, तुरसी ल हो.

सिरी किसना के जय बोलावंव, पाँव परौंव हाथ जोर हो.
घेरी-बेरी मैंय माथा नवावंव, जम्मों कोती करदे अंजोर हो.

खुमरी ओढ़ के बँसुरी बजावय, खेत-खार म यादव हो.
धोतिया अउ जाकिट ह फभय, लहुट-पहुट के आवय हो.

पहट चराके आवय पहटिया, बरदी चराके बरदिहा हो.
दोहनी म दूध दूहय, खाँड़ी म चुरोवय अधिरतिया हो.

अहीरा नाचे टोली संग म, पारे सिंगार, मया के दोहा हो.
क्षत्रिय कुल के यदुवंशी आवैंय, कोनों नइ लैंय लोहा हो.

खोड़हर देव के पूजा करैंय, राउत मन जाग के मातर हो.
गड़वा बाजा के धुन म थिरके, सजे धरे लाठी पातर हो.

परसा जरी के सुहई बनयेंव, मोर पांखी ले सजायेंव हो.
अमरीत कस गोरस देवइया, गऊ माता ल पहिरायेंव हो.

देवत हन आसिस तुंहला, अन्न-धन खूब बाढ़य घर म हो.
लाख बरीस जीयव सबो झन, सुख जिनगी के तर म हो.

*****

कहां जाबे डोकरा

रचनाकार- भोला राम सिन्हा, धमतरी

खेल अइसन कला आय जेला लईका सियान अपन उमर मुताबिक सबो खेलथे.कोनो खेल म अकल जादा लागथे,कोनो ह ताकत के भरोसा अउ कोनो-कोनो खेल म अकल अउ ताकत दुनो के जरूरत होथे.माने जाय ते खेल ल महतारी के पेट ले सीख के आय रथे तभे तो नान्हे लईका ह अपन हाथ गोड़ ल फेंक -फेंक के खेलत मुस्कावत रथे.थोर बहुत बाढ़थे तहान फुग्गा ,घुन-घुना सब खेलथे..

अइसने जिनगी भर कोनो न कोनो खेल खेलथे.कतको खेल अइसन हे जेला पुरखौती खेल केहे जा सकथे अउ कतको खेल ल लईकच मन ह सिरजन कर के खेलथे.अइसने हमर छत्तीसगढ़ म कतकोन पारम्परिक खेल हावय.

अइसने एक ठन खेल हावय,, कहाँ जाबे डोकरा,

येमा 10-20 लईका खेल सकथे.येमा पहिली दांव देवइया चुनथे अउ बाकी लईका मन एक दूसर के हाथ ल धर के गोल घेरा बना के दाम देवइया ल बीच म राखथे

अब खेल सुरु होथे.गोल घेरा ल माने जाय दांव देवइया के घर, बाकी घेरा म लईका मन खडे होथे.

लईका मन कथे- कहां जाबे डोकरा.

दांव देवइया -जाहूं गली खोर.

लईका मन -रुपिया पईसा लेगबो तोर

दांव देवईया-घर ले मोला निकाल दे

लईका मन-चार चवन्नी डाल दे

दाम देवइया ह ठठ्ठा मटठा के पईसा देथे ,तहान लईका मन घेरा घेरा ल बड़े कर देथे.

दांव देवइया -येती ले जाहूं (एक जगह हाथ पकड़े लईका ल् कथे)

लईकामन -तारा लगाहूं

पहिली हमला रोटी खवाबे ,तभे ते घर ले निकल के जाबे.

डोकरा मन -मोर घर गहूं पिसान नइये.

सब लइका चिल्लाथे-हाबे,हाबे,हाबे.

अउ कोनो भी चीज ल पिसान मान ,लान के मढ़ा देथे.

डोकरा -गहूं पिसायेंव ओ रिहिस घुन हा

आज सिरागे,मोर घर नुन हा.

लइका मन कथे-रोटी खवाये के डर म

नुन लुकाये हस घर म

अइसे कही के एक खेलइया नुन लान के देथे.

डोकरा -तुमन खाहू ,महूं ल खवाहू,तभे तुंहर बर रोटी बनाहूं.

डोकरा रोटी बनाथे तब.

चोर मन कथे-रोटी ह बनगे अब नौ दस

डोकरा आज नहाय हस

डोकरा के नहाय बर घेरा ल टारथे ओहा नहाय बर चल देथे.डोकरा के आवत ले चोर मन सब रोटी ल खा देथे अउ सब येती ओती भाग जथे.ओला डोकरा बने रथे तेंहा छुये बर दंउड़ाथे.जे लईका ल छू लेथे ओ लईका ह् फेर दांव देथे.तब फेर जइसन सुरू म खेलिन ओइसने फेर खेलथे.

ये खेल म कोनो समान के जरूवत नइ परे न बड़े जान मैदान के.नोनी घलो खेलथे बाबू घलो अउ सबो झन मिझरा घलो खेलथे.कोनो जगा चोर सिपाही कथे कोनो जगा डोकरी डोकरा.नाव सार्थक राहय ते मत राहय फेर लईका मन ल ये खेल -खेल म अब्बड़ मजा आथे.काबर के येमा खेल के संगे संग लयबद्ध गोठ बात घलो होथे.

*****

हमको आगे बढ़ना है

रचनाकार- सलीम कुर्रे, कक्षा-आठवीं, शास.पूर्व माध्य.शाला बिजराकापा, मुंगेली

मैं अपने हालातों को देखकर समझा हूँ,
अपने पापा को कमाते देखकर पढ़ा हूँ.
शिक्षक नें भी साथ दिया,
मंजिल को हासिल करवा दिया.
घर वालों ने टोंका था,
कि मैं पढ़ नहीं सकता था.
एक हाथ में पेन लिए,
दूसरे हाथ में कॉपी,
विद्वानों को फेल कर दिया,
बन गया एक अच्छा विद्यार्थी.
शिक्षक नें भी साथ दिया,
मंजिल को हासिल करवा दिया.

*****

हिम की बूंँदें

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

ठंडी–ठंडी सी पुरवाई, दस्तक दे चहुंँओर.
श्वेत वस्त्र धारण की धरती, हुई सुहानी भोर.

दृश्य देख धुंँधला–धुंँधला सा,खींचे लंबी श्वास.
ठंड गुलाबी रोम–रोम में,पल जीवन में खास.

सूर्य लालिमा तारापथ से, फैलाती आलोक.
गर्म ताप अरु देह छुए गर, हम पाते ना रोक.

सौम्य भरी ये हिम की बूंँदें, करते पत्रक स्नान.
मोती जैसे चमके सारे, आकर्षित कर ध्यान.

धरा समाहित हो जाती हैं,बरसे अंबर शीत.
नई कोपलें विकसित करतीं, और बढ़ातीं मीत.

*****

क्रिसमस का त्योहार

रचनाकार- सुशीला साहू शिक्षिका, रायगढ़

आया क्रिसमस का त्योहार,
बच्चों में खुशियां बांटेअपार.
टाफी चाकलेट सांता लाते,
हम सब क्रिसमस ट्री बनाते.

गिरजाघर को फूलों से सजायें,
प्रभु ईशु का जन्मदिन मनायें.
ईसाई धर्म का प्रमुख त्योहार,
सांता अंकल देते ढेर उपहार.

मैरी क्रिसमस "मैरी क्रिसमस",
खुशियां मनायें हम सब मिलकर.
साल भर बच्चे सपने बुनते,
उपहार पाकर बच्चे झूमते.

बड़ा दिन है दिसम्बर का,
पर्व है बच्चे, बूढ़े जवानों का
ईशु मसीह का हुआ अवतार,
हमें रहता क्रिसमस का इंतजार.

*****

सर्वोत्तम फल

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हिसार

“मंजिल मिल ही जाएगी भटकते हुए ही सही, गुमराह तो वो हैं जो घर से निकले ही नहीं.”

लोग नई चीजें हासिल करने के बजाय आसान चीजों में लग जाते हैं. लोग नई चीजों का आविष्कार करने या अपना खुद का स्टार्टअप बनाने के बजाय और सुरक्षित नौकरियों में चले जाते हैं. इसके अलावा, डर से आत्मविश्वास और अपने ऊपर भरोसे की कमी भी हो सकती है. जो व्यक्ति लगातार डर के साथ जी रहे हैं, वे अपनी क्षमताओं पर संदेह करते हैं और जोखिम लेने के साथ आने वाली चुनौतियों के लिए खुद को तैयार नहीं पाते हैं. सिडनी बॉक्सिंग डे टेस्ट में सचिन तेंदुलकर पहली पारी में अपनी कम क्षमता के कारण नहीं बल्कि ऑफ स्टंप के बाहर की गेंद के डर के कारण आउट हुए. अगली पारी में उन्होंने किसी भी ऑफ स्टंप से बाहर की गेंद को न खेलने का जोखिम उठाने के लिए मानसिक रूप से तैयारी की और इसके परिणामस्वरूप ऐतिहासिक दोहरा शतक बनाया.

13वीं शताब्दी ई. में एक दर्जन से अधिक जहाज़ के कप्तान छोटे-छोटे मार्गों से होने वाले समुद्री व्यापार और खोज में व्यस्त थे. लेकिन लंबी यात्रा का डर, मौसम की अनिश्चितता का डर, समुद्र का डर और अंततः अज्ञात के डर ने उन्हें लम्बी समुद्री यात्रा में जाने से रोक दिया. बहादुर और साहस वाले व्यक्ति ने समुद्र की इस चुनौती को स्वीकार किया और लंबी तथा असंभव यात्रा शुरू की. उन्होंने सभी

प्रतिकूलताओं के खिलाफ जाने और नई दुनिया की खोज करने का जोखिम उठाया. इसके परिणामस्वरूप एक नए समुद्री मार्ग की खोज हुई और भारतीय उपमहाद्वीप के साथ यूरोपीय व्यापार शुरू हुआ. जोखिम उठाने का परिणाम उन्हें न केवल थोड़े समय में अधिशेष व्यापार के रूप में मिला, बल्कि लंबे समय तक उनका नाम भारतीय उपमहाद्वीप में आने वाले पहले व्यक्ति के रूप में इतिहास के पन्नों पर अंकित हो गया और उनका नाम है वास्को डी गामा.

डर एक प्राकृतिक मानवीय भावना है जो अक्सर जोखिम लेने में बाधा के रूप में कार्य करती है . यह एक शक्तिशाली प्रभाव है जो व्यक्तियों को पंगु बना सकती है, उन्हें उनकी वास्तविक क्षमता प्राप्त करने से रोक सकती है. यह शोध किया गया है कि कैसे डर के साथ रहना हमें जोखिम लेने से रोक सकता है, विकास और सफलता के अवसरों से वंचित कर सकता है. हालाँकि, यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि अपने आराम क्षेत्र से बाहर निकले बिना, हम कभी भी जीवन में सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त नहीं कर पाएंगे. जोखिम लेने के सकारात्मक पहलुओं की जांच करके, हम डर पर काबू पाने और व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास के अवसरों को अपनाने के महत्व को समझ सकते हैं. जोखिम लेने की क्षमता में सबसे बड़ा स्पीड ब्रेकर: डर डर विभिन्न रूपों में प्रकट हो सकता है, जैसे असफलता, अस्वीकृति या अज्ञात का डर. यह व्यक्तियों को अलग-अलग तरह से प्रभावित करता है और उनकी निर्णय लेने की क्षमता पर असर डाल सकता है.

हमारे पास पानीपत की तीसरी लड़ाई का एक बड़ा उदाहरण है जहां दुश्मन का डर खुद से ज्यादा शक्तिशाली था. इसने मराठों को मानसिक रूप से बीमार बना दिया और उनके निर्णय खंडित हो गए, और इससे मराठाओं की सबसे बड़ी हार हुई. लोग अक्सर अपनी वर्तमान परिस्थितियों के साथ सहज हो जाते हैं, जोखिम लेने के बजाय अपने आराम क्षेत्र के दायरे में रहना पसंद करते हैं. असफलता का डर व्यक्तियों को पीछे धकेल देता है, क्योंकि वे शर्मिंदगी, निराशा या वित्तीय नुकसान जैसे संभावित परिणामों से डरते हैं. डॉक्यूमेंट्री 14 पीक्स में , हम उस आदमी को देखते हैं जिसे किसी चीज का डर नहीं है, वह आसानी से जोखिम ले सकता है और कल्पना से परे जा सकता है. उस एक युवा ने मजबूत मानसिकता के साथ 14 चोटियों पर विजय प्राप्त की. साथ ही, यह डर एक बाधा बन जाता है, जो उन्हें नई संभावनाएं तलाशने से रोकता है.

लोग नई चीजें हासिल करने के बजाय आसान चीजों में लग जाते हैं. लोग नई चीजों का आविष्कार करने या अपना खुद का स्टार्टअप बनाने के बजाय और सुरक्षित नौकरियों में चले जाते हैं. इसके अलावा, डर से आत्मविश्वास और अपने ऊपर भरोसे की कमी भी हो सकती है. जो व्यक्ति लगातार डर के साथ जी रहे हैं, वे अपनी क्षमताओं पर संदेह करते हैं और जोखिम लेने के साथ आने वाली चुनौतियों के लिए खुद को तैयार नहीं पाते हैं. सिडनी बॉक्सिंग डे टेस्ट में सचिन तेंदुलकर पहली पारी में अपनी कम क्षमता के कारण नहीं बल्कि ऑफ स्टंप के बाहर की गेंद के डर के कारण आउट हुए. अगली पारी में उन्होंने किसी भी ऑफ स्टंप से बाहर की गेंद को न खेलने का जोखिम उठाने के लिए मानसिक रूप से तैयारी की और इसके परिणामस्वरूप ऐतिहासिक दोहरा शतक बनाया.

डर व्यक्तियों को किसी भी स्थिति के नकारात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करता है, जिससे जोखिम के विपरीत मानसिकता पैदा होती है . वे अज्ञात क्षेत्र में जाने की बजाय यथास्थिति पर कायम रहने के इच्छुक हो सकते हैं. जोखिम लेने के प्रति यह नापसंदगी किसी की क्षमता को सीमित कर सकती है और व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों क्षेत्रों में प्रगति में बाधा उत्पन्न कर सकती है. जोखिम उठाएं और सार्थक परिणाम पाएं हालाँकि डर के साथ जीना सुरक्षित और आरामदायक लग सकता है, लेकिन यह अंततः व्यक्तियों को जीवन से सर्वश्रेष्ठ प्राप्त करने से रोकता है. महात्मा गांधी ने बिल्कुल नई तरह का सत्याग्रह शुरू करने का जोखिम उठाया. कई लोगों ने उनकी आलोचना की लेकिन उनके अनोखे विचार ने न केवल उन्हें महानतम नेताओं में से एक बनाया बल्कि देश की आजादी हासिल करने में भी मदद की. व्यक्तिगत विकास, नवाचार और सफलता के लिए जोखिम उठाना आवश्यक है. जोखिम उठाना व्यक्तियों को अपने आराम क्षेत्र से बाहर निकलने की चुनौती देता है, जिससे उन्हें नए अवसरों और अनुभवों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है.

मैडम क्यूरी का उदाहरण यहाँ उपयुक्त है. उसने रेडियोऐक्टिविटी का प्रयोग करने का जोखिम उठाया. किसी ने भी उन पर विश्वास नहीं किया लेकिन उनके सकारात्मक दृष्टिकोण से रेडियोधर्मी तत्वों पर सफल परिणाम मिले और उन्हें अपने अनुकरणीय कार्य के लिए दो नोबेल पुरस्कार मिले. इसके अलावा, जोखिम उठाना व्यक्तिगत विकास, लचीलापन और अनुकूलन क्षमता को बढ़ावा देने के लिए एक मंच प्रदान करता है. हंगरी की एथलीट कैरोली टाकाक्स इसका

सबसे अच्छा उदाहरण है. द्वितीय विश्व युद्ध में एक हाथ खोने के बाद उन्होंने साहस दिखाया और फिर से ओलंपिक में भाग लेने का जोखिम उठाया. खुद लगातार मेहनत और जीत के सकारात्मक रवैये ने ओलंपिक में स्वर्ण पदक दिला दिया. इसके अतिरिक्त, केवल जोखिम लेने में संलग्न होकर ही व्यक्ति अपने सच्चे जुनून और क्षमता की खोज कर सकते हैं. यह व्यक्तियों को अपनी सीमाओं का परीक्षण करने के लिए प्रेरित करता है, उन्हें असफलताओं से सीखने और उन सबक को अपनाने में सक्षम बनाता है जो अन्यथा संभव नहीं होते.

क्या डर हमेशा बुरा होता है? प्रतिपक्ष पर सोच उत्तर है- नहीं. डर का आयाम सापेक्ष भी है और व्यक्तिपरक भी. बचपन में हम बच्चों को सजा का डर दिखाते हैं. इससे वे अधिक अनुशासित हो जाते हैं . इसलिए जीवन में कुछ डर जरूरी हैं. कानून का डर कानून व्यवस्था को प्रभावशाली बनाता है, समाज का डर लोगों को जिम्मेदार और जवाबदेह बनाता है और विफलता का डर लोगों को कड़ी मेहनत करने के लिए प्रेरित करता है. कल्पना से परे जाना आप जो कुछ भी चाहते हैं वह डर के दूसरी तरफ है जबकि जोखिम लेने के फायदे स्पष्ट हैं, यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि डर पर काबू पाना कहना जितना आसान है, करने में उतना आसान नहीं है. डर मानव मनोविज्ञान में गहराई से समाया हुआ है और इसका पूर्ण उन्मूलन संभव नहीं है. हालाँकि, व्यक्ति डर को कम करने और जोखिम लेने की मानसिकता विकसित करने के लिए रणनीतियाँ अपना सकते हैं.

डर अक्सर संभावित परिणामों के नकारात्मक दृष्टिकोण से उत्पन्न होता है. अपनी मानसिकता को नए सिरे से तैयार करके और जोखिम लेने के सकारात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करके, हम डर को कम कर सकते हैं और आत्मविश्वास को मजबूत कर सकते हैं. यहां शिक्षा व्यवस्था और परिवार की भूमिका सामने आती है. शिक्षा प्रणाली को स्वयं में संशोधन करने और छात्रों को असफलताओं से सीखने और जोखिम लेने, विकल्प खोजने और पाठ्यक्रम से परे जाने की शिक्षा देने की आवश्यकता है. असफलताओं को असफलता के रूप में देखने के बजाय, उन्हें सफलता और सीखने के अवसरों की दिशा में कदम के रूप में देखा जा सकता है. अगली महत्वपूर्ण बात लचीलापन विकसित करने के बारे में है. लचीले व्यक्ति विकास और सुधार के लिए ईंधन के रूप में असफलताओं का उपयोग करके असफलताओं, रुकावट और अस्वीकृति से उबर सकते हैं. हमारे पास स्पेसक्स का एक बहुत बढ़िया उदाहरण है.

हमें दूसरों को लाभ पहुंचाने की दिशा में मार्गदर्शन करने के लिए दैनिक जीवन में नैतिकता की आवश्यकता है. इसीलिए भारतीय समाज में हम प्रार्थना करते हैं. डर के साथ जीना निस्संदेह व्यक्तियों को जोखिम लेने से रोक सकता है. विफलता, अस्वीकृति और अज्ञात का डर अक्सर एक बाधा के रूप में कार्य करता है, जो व्यक्तियों को उनकी पूरी क्षमता तक पहुंचने से रोकता है. हालाँकि, व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास में जोखिम लेने के महत्व को पहचानना आवश्यक है. अपने आराम क्षेत्र से बाहर निकलकर, अवसरों को अपनाकर और अपनी सीमाओं को चुनौती देकर, हम व्यक्तिगत विकास प्राप्त कर सकते हैं, नवाचार में योगदान दे सकते हैं और सफलता प्राप्त कर सकते हैं. डर पर काबू पाने के लिए अपना दृष्टिकोण बदलना, लचीलापन बनाना, विकास की मानसिकता अपनाना, यथार्थवादी लक्ष्य निर्धारित करना और समर्थन प्राप्त करना आवश्यक है. ऐसा करने से, हम जोखिम लेने वाली मानसिकता विकसित कर सकते हैं, जो हमें जीवन में मिलने वाले सर्वोत्तम परिणामों तक पहुंचने में सक्षम बना सकती है.

*****

कैकू और क्रैबी

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा " गब्दीवाला ", बालोद

खरखरा जलाशय के आसपास के गाँवों के किसानों ने अपने सूखे खेतों में पानी ले जाने के लिए सिंचाई विभाग को अर्जी देकर जलाशय के मेन गेट को खुलवाया. पानी बड़ी तेजी से नहर नाली में बहने लगा. नहर नाली के मेड़किनारे में एक छोटा सा गड्ढा था. इस गड्ढे में मकरू केकड़ा सपरिवार रहता था. तेज जलप्रवाह के चलते मकरू का परिवार सम्भल नहीं पाया. एक भारी चट्टान से टकरा गया. पूरा परिवार तहस-नहस हो गया. मकरू के दो नन्हे बच्चों- कैकू और क्रैबी को छोड़ कर सभी काल के गाल में समा गये.

कहते हैं न कि ऊपरवाले ने जिनके तकदीर में जितने दिन लिख दिया, उतने दिन तो उन्हें जीना ही है. कैकू और क्रैबी को लगने लगा कि आज उन्हें एक नया जीवन मिला है. उन्होंने अपनी सलामती के लिए ईश्वर को धन्यवाद दिया. चूँकि कैकू बड़ा था, इसलिए क्रैबी को ढाँढस बंधाते हुए कहा- " चिंता मत करना भाई. दुनिया में हमारे जैसे कई अनाथ बच्चे हैं. हम समझें, एक विपत्ति आई; और टल गयी. शुक्र करो कि हम बच गये. यूँ समझ लो कि माता-पिता और उन भाई-बहनों का हमारा साथ इतने ही दिनों के लिए था. " अपने बड़े भाई कैकू की समझाइस से क्रैबी में हिम्मत आई. कैकू के और करीब आते हुए बोला- " भैया ! मुझे छोड़कर कहीं नहीं जाना. "

" तू कैसी बात करता है क्रैबी. मैं तुम्हें भला कैसे छोड़ सकता हूँ मेरे भाई. अब तो हम दोनों केवल एक दूसरे के लिए ही हैं. ऐसी बात कभी मत करना क्रैबी. " कैकू की बातें सुन क्रैबी उससे लिपट गया. फिर दोनों एक साथ तैरते हुए बहुत दूर निकल गये. तभी उन्हें एक बिल दिखाई दिया. बिल के निकट गये. उन्हें बिल खाली व सुरक्षित लगा. वे बिल के अंदर घुस गये.

कैकू और क्रैबी अपने इस घर में बहुत खुश थे. वे अब जवान भी होने लगे थे. वैसे क्रैबी की कद-काठी कैकू से कम थी, क्योंकि उम्र में वह कैकू से बहुत छोटा था. पर दोनों भाई एक-दूसरे को बहुत चाहते थे. बड़ी आत्मीयता थी दोनों में. होना भी था, आखिर कोई तो नहीं थे उनके एक-दूसरे के सिवाय. कहीं भी जाना होता तो दोनों घर से एक साथ निकलते थे; और एक साथ ही वापस आते. हर खाने की चीज को मिल-बाँटकर खाते थे. यह भी सच है कि विपरीत परिस्थितियों ने दोनों भाईयों को उम्र से अधिक परिपक्व बना दिया था. अच्छे और बूरे समय में जीना सीख गये थे दोनों भाई. घर के आसपास कभी भी किसी तरह के खतरे का अहसास होता, झट से उनके कान खड़े हो जाते. बड़ी चालाकी से अपने घर में घुस जाते ; और दरवाजे को मिट्टी से ऐसे ढँक लेते कि किसी को पता तक नहीं चलता कि बिल के अंदर कोई रहता भी है. इस तरह कैकू और क्रैबी के सुख के दिन बीत रहे थे.

एक बार भीषण गर्मी के चलते नाली सुखने लगी. बहुत कम पानी रह गया. कैकू और क्रैबी अपने घर से कुछ ही दूरी पर आराम फरमा रहे थे. उन्हें नींद भी आने लगी थी. तभी उड़ता हुआ बक्कू बगुला आया. वह बड़ा धूर्त था. भरपेट मछली खाकर आ रहा था. बड़ा खुश था. अपने से छोटे जीव-जंतुओं को सताने में उसे बड़ा मजा आता था. उसकी नजर कैकू और क्रैबी पर पड़ी. उन्हें देखकर बक्कू के मुँह में पानी आ गया. वह अपनी धूर्तता पर उतर आया. देखा कि कैकू अपने दोनों दाढ़ों को जोड़कर सो रहा है. बक्कू को अच्छा मौका मिल गया. सोने पे सुहागा. कैकू के दोनों दाढ़ों को पकड़ लिया. कैकू हड़बड़ा गया. वह कुछ समझ नहीं पाया. तभी बक्कू के पंखों की आवाज से क्रैबी सतर्क हो गया. उसे माजरा समझ आ गया. देखा कि कैकू भैया को बक्कू बगुला ने पकड़ लिया है; और वह कुछ नहीं कर पा रहा है. फिर क्रैबी बिजली की तरह बक्कू पर टूट पड़ा. उसने अपने दोनों दाढ़ों से बक्कू के गरदन को पकड़ लिया. बक्कू क्रैबी के दाढ़े से अपनी गरदन को

छुड़ा पाता; इससे पहले क्रैबी ने गरदन को पूरी तरह से कस लिया. बक्कू बगुला दर्द के मारे कराहने लगा. उसे दिन में तारे नजर आने लगे.

यह सब देख आँखों में आँसू लिये सरांगी नाम की मछली ने बक्कू बगुले को किसी तरह की सहायता करना उचित नहीं समझा, क्योंकि उसके सभी बच्चे भी बक्कू बगुले के भेंट चढ़ चुके थे.

*****

सबसे बड़ी खुशी

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

प्रसन्नता हमारा ऐसा अनमोल ख़जाना है, जितना लुटाओगे उतना बढ़ता चला जाएगा

जिसके पास प्रसन्नता, मन की शांती, संतोष भरा मन हो वो आज की दुनियां मे सबसे अधिक खुश है.

गोंदिया - दुनियां में जिसके पास प्रसन्नता, मन की शांती, संतोष भरा मन हो वो भाग्यशाली और खुश इंसान है. केवल आज की ही क्यूं वो इंसान हर दुनियां मे खुश है. महाभारत मे धर्मराज युधिष्ठिर से एक यक्षने प्रश्न पुछा के हे धर्मराज सबसे बडा सुख कौनसा है इस प्रश्न के उत्तर के स्वरूप युधिष्ठिरजी ने कहा समाधान ही सर्वोत्तम सुख है. मनुष्य के पास बहुत सारा पैसा हो अछी शादीशुदा जिंदगी हो अच्छे माता पिता हो लेकिन मन मे संतोष व प्रसन्नता न हो तो ऐसा व्यक्ती आज की या किसी भी दुनिया मे खुश नही हो सकता. आज की दुनिया मे पैसा अतिआवश्यक है. लेकीन मन का संतोषप्रसन्नता उससे भी अधिक आवश्यक है,और एक बात जो की आवश्यक है वो है आपकी सेहत, सेहत अछी हो तो व्यक्ती का जीवन आनंदमय होता है.

वैसे तो कुदरत द्वारा रचित इस अनमोल खूबसूरत सृष्टि में रचनाकर्ता ने मानवीय जीवन में अनेक गुण दोषों को शामिल कर संजोया है, इसका उपयोग करने सर्वश्रेष्ठ बुद्धिमता का भी सृजन कर दिया है. बस!! जरूरत है अब माननीय जीव को उसे गुण-दोष सुख-दुख खुशियां-गम प्रसन्नता-दुख इत्यादि का चुनाव कर अपने जीवन को सफल और असफल बनाएं उसके ऊपर है!! क्योंकि प्रसन्नता और सुख दुख भी बौद्धिक क्षमता के आधार पर माननीय जीव को खुद चुनना होता है! इसलिए आज हम छठ की पावन बेला पर मन की प्रसन्नता पर उसके गुणों, प्रक्रिया सुजन करने के तरीकों पर इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे.

साथियों बात अगर हम प्रसन्नता की करें तो खुलकर हंसना, मुस्कुराना, प्रसन्न रहना, मन की प्रसन्नता खुद सृजित की हुई दवा के समान है, क्योंकि इसमें सब दुख तो नष्ट होते हैं,जीव अपने कर्म में असफल नहीं होता. बुद्धि तुरंत स्थिर रहती है. सामाजिक प्रतिष्ठा और गुणों की सुगंध दूर तक जाती है एक अलग हस्मुख व्यक्तित्व की हमारी छाया हमारे अपने परिचितों सहयोगियों पर पड़ती है. प्रसन्नता हमारा ऐसा अनमोल खजाना है, जिसे जितना लूटाएंगे उतना ही बढ़ता चला जाएगा, खिलखिलाते चेहरे और प्रसन्नता की आंखों की चमक मनीषियों को दुर्लभ पूंजी है, क्योंकि प्रसन्नता सुकून से जीने की कुंजी है. यह खजाना तब बढ़ता है जब हम दूसरों की खुशीयों में अपनी खुशी को समाहित करते हैं. हमें छोटी-छोटी चीजों में प्रसन्नता, सुख ढूंढने की कोशिश करनी चाहिए, विश्वसनीय मन के भाव की खुशी का भाव अभूतपूर्व सफलता और दूरगामी सकारात्मक परिणाम होता है. आध्यात्मिकता,उदारता,परोपकार सहनशीलता, सहिष्णुता इत्यादि मन की प्रसन्नता के प्रमुख स्त्रोतों में से कुछ हैं, जिनको जीवन में अपनाने की जरूरत को रेखांकित किया जा सकता है.

साथियों बात अगर हम अंतरराष्ट्रीय प्रसन्नता दिवस, संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी विश्व प्रसन्नता इंडेक्स रिपोर्ट इत्यादि अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपर प्रसन्नता के मूल्यों की करें तो प्रसन्नता को हाई वैश्विक टॉनिक माना जाता है. प्रसन्नता दिवस मनाया जाता है अलग-अलग देशों के प्रसन्नता से रहने के क्रमांक बताए जाते हैं, परंतु बहुत हैरानी की बात है प्रसन्नता इंडेक्स में अनेक पूर्ण विकसित देशों के साथ ही भारत भी पिछड़ा हुआ है जो रेखांकित करने वाली बात है!! विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट 2022 में 146 देशों की रिपोर्ट के अनुसार फिनलैंड लगातार 5 वर्षों से प्रथम और डेनमार्क द्वितीय और आयरलैंड तृतीय स्थान पर है.जबकि इस रिपोर्ट में भारत

136 वी रैंक पर है याने लास्ट टॉप टेन इतनी ख़राब हालात जो आश्चर्य वाली बात है.

साथियों बात अगर हम मन की प्रसन्नता के गुण एवं लाभों की करें तो, प्रसन्नता तो व्यक्ति का मानसिक गुण है, जिसे व्यक्ति को अपने दैनिक जीवन के अभ्यास में लाना होता है. प्रसन्नता व्यक्ति के अंतर्मन में छिपे उदासी, तृष्णा और कुंठाजनित मनोविकारों को सदा के लिए समाप्त कर देती है. वस्तुत: प्रसन्नता चुंबकीय शक्ति संपन्न एक विशिष्ट गुण है. प्रसन्नता दैवी वरदान तो है ही, यह व्यक्ति के जीवन की साधना भी है. व्यक्ति प्रसन्न रहने के लिए एक खिलाड़ी की भांति अपनी जीवन-शैली और दृष्टिकोण को अपना लेता है. उसके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता असफलता जय-पराजय, और सुख-दुख उसके चिंतन का विषय नहीं होता. वह तो अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर बढ़ता जाता है.प्रसन्नता मानवों में पाई जाने वाली भावनाओं में सबसे सकारात्मक भावना है. इसके होने के विभिन्न कारण हो सकते हैं, अपनी इच्छाओं की पूर्ति से संतुष्ट होना. अपने दिन-रात के जीवन की गतिविधियों को अपनी इच्छाओं के अनुकूल पाना. किसीअचानक लाभ से लाभांवित होना. किसी जटिल समस्या का समाधान प्राप्त होना.

साथियों बात अगर हम प्रसन्नता के लक्ष्यों की प्राप्ति की करें तो, प्रसन्न रहने वाला व्यक्ति परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेता है. यदि वह असफल भी हो जाता है तो निराश होने और अपनी विफलता के लिए दूसरों को दोष देने की अपेक्षा अपनी चूक के लिए आत्मनिरीक्षण करना ही उचित समझता है.ज्ञानीजन और अनुभवी बताते हैं कि प्रसन्नता जैसे दैवीय-वरदान से कुतर्की और षड्यंत्रकारी लोग सदैव वंचित रह जाते हैं. प्रसन्न व्यक्ति स्वयं को प्रसन्न रखकर दूसरों को भी प्रसन्न रखने की अद्भुत सामर्थ्य रखता है. प्रसन्नता को प्रभु-प्रदत्त संपदा समझने वाले व्यक्ति ही सदैव सुखी रहते हुए यशस्वी, मनस्वी, महान और पराक्रमी बनकर समाज और राष्ट्र के लिए आदर्श स्थापित करने में सक्षम हो सकते हैं. प्रसन्नता ही सुखी जीवन का मूल मंत्र है. प्रसन्नता हमारा अनमोल खजाना है. प्रसन्नता को ज़रूर लुटाइए फ़िर देखिए, उसका खजाना बढ़ता चला जाएगा .भलाई करना कर्त्तव्य नहीं, आनन्द है . क्योंकि वह प्रसन्नता को पोषित करता है . सबको प्रसन्न करने की शक्ति सब में नहीं होती . प्रसन्नता आत्मा को शक्ति प्रदान करती है . प्रसन्नतापूर्वक उठाया

गया बोझ हल्का महसूस होता है. प्रसन्नता शब्द का प्रयोग मानसिक या भावनात्मक अवस्थाओं के संदर्भ में किया जाता है, जिसमें संतोष से लेकर तीव्र आनंद तक की सकारात्मक या सुखद भावनाएं शामिल हैं. इसका उपयोग जीवन संतुष्टि, व्यक्तिपरक कल्याण, यूडिमोनिया, उत्कर्ष और कल्याण के संदर्भ में भी किया जाता है इसलिए हर व्यक्ति ने इस गुण को अपने में समाहित कर जीवन को सफल बनाने के मंत्र को अपनाना चाहिए.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि दुनियां की सबसे बड़ी खुशी का बोध मन की शांती और हंसने से होता है प्रसन्नता हमारा ऐसा अनमोल ख़जाना है, जितना लुटाओगे उतना बढ़ता चला जाएगा.जिसके पास प्रसन्नता, मन की शांती, संतोष भरा मन हो वो आज की दुनियां मे सबसे अधिक खुश है.

*****

विज्ञान पहेलियाँ

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित'

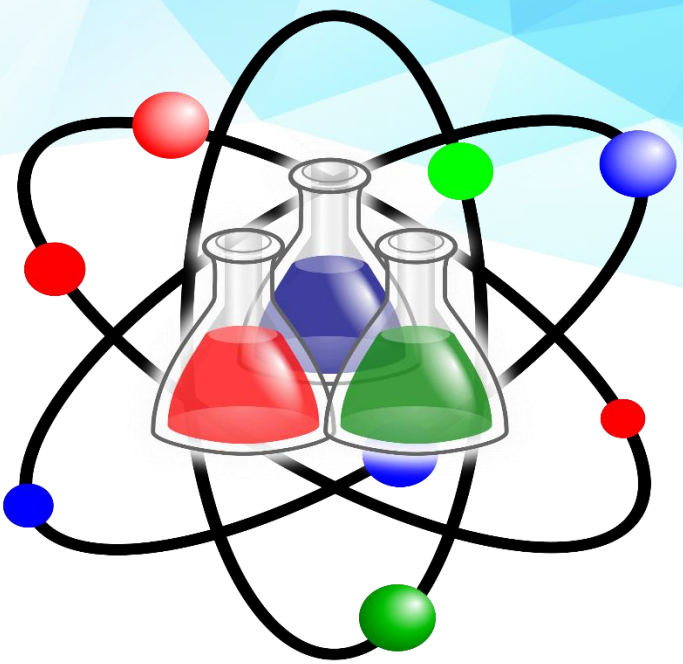

1. ज्ञान खजाना अमित अपार, घर बैठे जानों संसार.
गूगल, याहू इसके दूत, रुके थके बिन काज अकूत.

2. कम्प्यूटर का कहते 'ब्रेन', जंक्शन यह होता है 'मेन',
इससे जुड़ते सारे तार, आयत सम दिखता आकार.

3. लगते 'बटन' एक सौ चार, टाइपिंग का यह आधार.
आठ उँगलियाँ करती खेल, बिन इसके कम्प्यूटर 'फेल'.

4. जीव नहीं पर 'चूहा' नाम, हाथ नहीं पर करता काम.
'कर्सर' को करता 'कंट्रोल', ऊपर घिर्री, नीचे 'खोल'.

5. 'ग्लास स्क्रीन' यह है चौकोर, मुख अपना होता इस ओर.
'कीबोर्ड' लिखे जो भी लेख, उसे यहाँ पर तत्पर देख.

6. कम्प्यूटर का जोड़ीदार, करे छपाई बन सहकार.
छापे श्वेत, श्याम, रंगीन, कहो मित्र यह कौन मशीन.

7. उँगली सा होता आकार, मिटने-रखने को तैयार.
करता यह 'डेटा स्टोरेज', फाईल, फिल्म, दस्तावेज.

8. एक चक्र यह वृत्ताकार, प्रकाशीय किरणें आधार.
भौतिक भंडारण का काम, 'प्लेयर' से ही जुड़ता नाम.

9. 'फोटो कॉपी' जैसा काम, रंग, चित्र रखता अभिराम.
देता यह डिजिटल आकार, कम्प्यूटर का साथी सार.

10. 'डाटा' को यह करता 'स्टोर', यंत्र गोल, चपटा चौकोर.
चुम्बक लेपन भीतर खास, 'हार्ड' बड़ा इसका अहसास.

1. कम्प्यूटर 2. सी.पी.यू. 3. कीबोर्ड 4. माउस 5. मॉनिटर 6. प्रिंटर 7. पेनड्राइव 8. सी.डी. 9. स्कैनर 10. हार्ड डिस्क

*****

छत्तीसगढ़ी जनऊला

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित'

01- पहिली ये पाछू जगदीश, रद्दा खोलय इँखर असीस.
लागँय जइसे जुड़हा छाँव, साधक जपथें हरदम नाँव.

02- हाथी जइसन भारी पेट, खाथे लाडू सूँड़ लपेट.
सबले पहिली येखर नाम, शुरू होथे तब कोनो काम.

03- सार कला हे येखर अंस, सुघर सवारी सादा हंस.
छेड़य वीणा के सुर तान, इँखर कृपा ले जम्मों ज्ञान.

04- एक जघा जम्मों सकलान, बइठे पावन आखर ग्यान.
मंदिर जइसे लागय ठौर, नाँव बता अब करके गौर.

05- धन दोगानी ले झन तोल, येखर कीमत हे अनमोल.
जे पाये ग्यानी बन जाय, नइ पाये ते मुरूख कहाय.

06- ज्ञानी जइसन बोलँय बोल, बात बताथें इन अनमोल.
लइकामन बर हे भगवान, बाँटय एक बरोबर ज्ञान.

07- पेड़ नहीं पर पाना पोठ, बिन मुँहु के करथे ये गोठ.
आखर के भारी भंडार, ज्ञान कला के ये आधार.

08- कोरा-कोरा आरुग कोर, लिखना हे तब करथें सोर.
अंतस के सब भर दे भाव, नइ ते सोज्झे कागज ताव.

09- येखर आगू का तलवार, नान्हें हे येखर आकार.
स्याही सँघरा सुग्घर मेल, आखर उलगय रेलम-पेल.

10- होथे करिया-करिया रंग, उज्जर आखर येखर संग.
होय अधूरा ये बिन चाक, कक्षा भीतर येखर धाक.

1. गुरुदेव 2. गणेश भगवान 3. सरस्वती माता 4. इस्कूल 5. विद्या 6. गुरुजी 7. किताब 8. कापी 9. कलम 10. तख्ता

*****

सूरज आओ

रचनाकार- राजेंद्र श्रीवास्तव विदिशा

इस सर्दी से मुझे बचाओ
सूरज आओ ठंड भगाओ.
बिछी बर्फ की मोटी चादर
आओ जल्दी उसे गलाओ.

घना कोहरा जमा हुआ है
अपनी किरणों से हटवाओ.
पल-पल लुढ़क रहा है पारा
इसको कुछ ऊपर पहुँचाओ.

मम्मी गर्मागर्म पकौड़े
खूब चटपटे आज बनाओ.
मैं मंजन करके आया हूँ
अदरक वाली चाय पिलाओ.

*****

मृणालिनी

रचनाकार- वेद प्रकाश दिवाकर, सक्ती

बहुत पुरानी बात है , जब धरती पर चारों ओर जंगल ही जंगल थे. तभी दक्षिण के घने जंगलों में जीव - जंतु और जंगली- जानवर खूब फल - फूल रहे थे. कहीं कोई खाने-पीने की कमी नहीं थी.

इसी जंगल में मृणालिनी नाम के एक हिरणी का परिवार भी रहता था. मृणालिनी बहुत ही नेक और ममतामई थी. हिरनो के झुंड में उसकी बहुत मान - सम्मान थी. मृणालिनी अपनी छह माह की पुत्री बोना के साथ हंसी-खुशी जीवन बिता रही थी. मौसम बदलता गया और बदलते हुए मौसम के साथ बारिश में कमी होती गई , जिससे जंगल में सूखा पड़ने लगा. देखते ही देखते जंगल में खाने-पीने की भारी कमी होने लगी. हरियाली सूखने लगी साथ ही साथ झरने और तालों के जल स्तर घटने लगे.

तभी एक दिन अचानक सूरज की तेज गर्मी ने सूखे घास में आग लगा दिया और देखते ही देखते पूरा जंगल आग की ज्वाला में धधकने लगा. सभी जीव - जंतु अपनी जान बचाने के लिए छितर - बितर होकर भागने लगे.आग के इन लपटों ने सभी जीव - जंतुओं को जंगल छोड़ने पर मजबूर कर दिया. सभी जानवर इस अफरा - तफरी के साथ उत्तर दिशा की ओर निकल पड़े. मृणालिनी भी अपनी बेटी बोना के साथ उसी ओर चल पड़ी. लेकिन उत्तर दिशा में जाने के रास्ते में एक गहरी झील पार करना पड़ता था जो कि अब सुख कर आधा हो गया था और

मगरमच्छों से भरा हुआ था. सभी जानवरों के साथ मृणालिनी भी अपनी बेटी बोना को लेकर झील में कूद पड़ी. मृणालिनी आगे - आगे और बोना पीछे-पीछे तैरने लगी. लेकिन कुछ ही दूर पहुंचने पर घात लगाए एक विशाल मगरमच्छ ने बोना की ओर झपटा ,बोना और मृणालिनी ने अपनी रफ्तार तेज की. लेकिन मगरमच्छ के आगे दोनों की रफ्तार कम थी. बोना ममता भरी स्वर में मिमयाती हुई मां के साथ तेजी से तैरने लगी. तब तक मौत का सौदागर मगरमच्छ उसके निकट पहुंच ही गया और बोना को झपटने लगा. मृणालिनी समझ गई अब बचना मुश्किल है , उसने तनिक भी देर ना करते हुए अपनी बोना की तरफ ममता मई भाव से देखते हुए पीछे मुड़ गई अब बोना आगे निकल चुकी थी और मृणालिनी मगरमच्छ के विशाल जबड़े में समा गई. उधर बोना पार पहुंच अपनी मां की तरफ देखने लगी. तब तक मां का बलिदान इतिहास बन चुकी थी, सब कुछ खत्म हो गया था. मगरमच्छ के जबड़े में फंसी मृणालिनी की पथराई आंखें मानो बोना को सदा खुश रहने का आशीर्वाद दे रही थी. बोना के आंखों के सामने अंधेरा छा गया.उसकी बदन शिथिल हो गई.अपनी मां के बलिदान को भीगी आंखों से देखने के सिवा बोना कुछ न कर सकी. मृणालिनी अपनी ममता को अमर करती हुई उस भयानक काल का ग्रास बन गई और मासूम बोना अपनी मां के यादों के सहारे भरी आंखों से अपने तनमन को संभालते हुए जीवन पथ पर बढ़ने लगी.

*****

मुंगेसर के फूल

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

मोर गियां ह खोपा म खोंचे हे मुंगेसर के फूल.
बारी घुमेला जावत हे, कान म झूलत हे झूल.

तरी दिखे पिंयर-पिंयर, आगु जामुनी पंखुरिया.
लमरी-लमरी फरे हवय, हरियर-हरियर बीजा.

फुरफुंदी अउ तितली मन उड़ावैंय बनके सहेली.
ममहावत हे मोंगरा असन, भौंरा पुछत हे पहेली.

पुरवई म डोले पातर कनिहा, संग म झूमरे पाना.
लाली चोंच वाले सुआ ह मया के गावत हे गाना.

चिरई-चुरबून मन बिकट नाचत हें फूदुक-फूदुक.
साँप ह बिला ले निकल के धिड़काथे बाजा गुदुम.

कोयली अउ मैना घलोक पिरीत के टेही अलापे.
अपन मयारू परानी के बिसरना ह नगत बियापे.

आँसू ढरकावैंय चरोटा, चेंच, बोरझरिया, ढनढनी.
बोम फार के रोवत हें तीर म कांदी, गोंदा, बेमची.

*****

खुशी

रचनाकार- सीमा यादव, मुंगेली

जरा सी, इतनी सी खुशी,
मन को सुखी कर जाती है.
पल भर के लिये आकर,
सारा दिन हसीन बना देती है.

जो पकड़ लेता है खुशी का दामन.
वो बन जाता है सबसे सुन्दर और महान.

खुशी उस सुन्दर एहसास का नाम है.
जो भीतर ही भीतर मन को हँसाते रहती है.

हे नर ! खुशी की कभी भी तुम मत करना उपेक्षा.

सदा खरा उतरना उनकी उम्मीदों पर,
यही एकमात्र अपेक्षा है उसकी तुमसे.

*****

तुझे आगे बढ़ना ही होगा

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

अक्सर भीड़ में सब चलते हैं,
उस भीड़ से निकलना होगा,
तुझे आगे बढ़ना ही होगा.

ठहरा पानी सड़ने लगता है,
तुम्हें निरंतर चलना होगा,
तुझे आगे बढ़ना ही होगा.

असंभव को संभव कर दिखाना होगा,
अपने सीने में आग जलाना होगा,
तुझे आगे बढ़ना ही होगा.

तुम्हारा सपना अधूरा रह न जाए,
अपने सपने को सच करना होगा,
तुझे आगे बढ़ना ही होगा.

राहों पर बाधाए हजार आएगी,
उन बाधाओ से लड़ना होगा,
तुझे आगे बढ़ना ही होगा.

कोई साथ चले या न चले,
तुझको अकेला चलना होगा,
तुझे आगे बढ़ना ही होगा.

*****

अपने लक्ष्य को अपनी निगाहों में रखो

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

राहों में मुश्किलें हजार आएगी,
इन मुश्किलों से डर कर कभी मत रुको,
अपने लक्ष्य को अपनी निगाहों में रखो.

सफलता तेरे पास नहीं आएगी,
तुम्हें सफलता की तरफ बढ़ना होगा,
मंजिल जरूर मिलेगी न रुको न थको,
अपने लक्ष्य को अपनी निगाहों में रखो.

कुछ पाने की हमेशा एक आस रखो,
अपने सपनों को हमेशा कुछ खास रखो,
सपना जरूर सच होगा इसे दिमाग में रखो,
अपने लक्ष्य को अपनी निगाहों में रखो.

तुझमें हिम्मत है तू सब कुछ कर दिखाएगा,
हर रोज कदम बढ़ाने से मंजिल पा जाएगा,
अपने मंजिल को अपनी बाहों में रखो,
अपने लक्ष्य को अपनी निगाहों में रखो.

*****

संबंधों के बगैर अधूरी है जिंदगी

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू, गरियाबंद

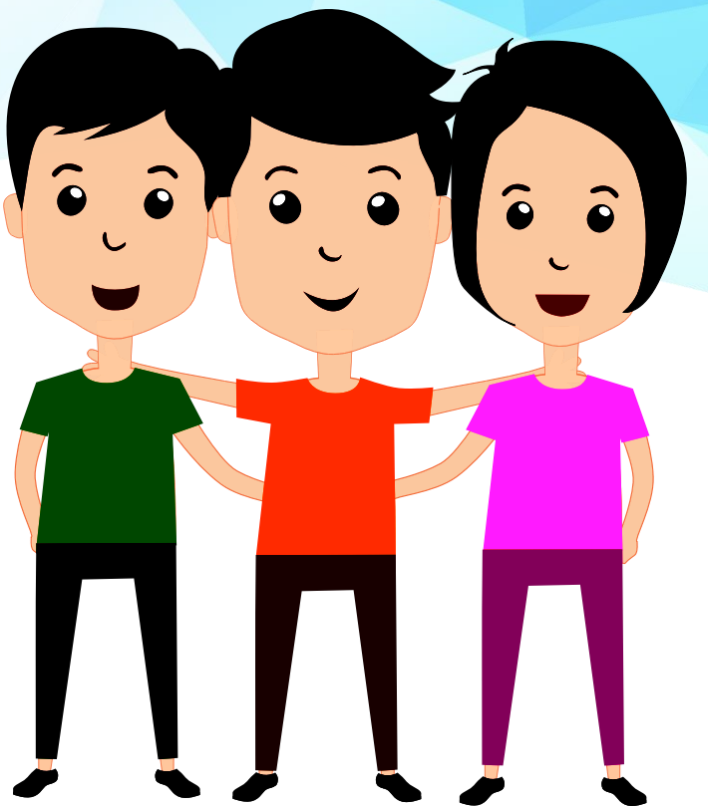

कभी याद आना कभी याद करना,
यादों के पन्नों से भरी है जिंदगी,
सुख और दुख की पहली है जिंदगी,
संबंधों के बगैर अधूरी है जिंदगी.

जीवन में प्रेम भाव से रहना,
जो रूठ गए उन्हें मनाना,
जो बिछड़ गए हैं उन्हें मिलाना
दोबारा नहीं मिलेगी यह जिंदगी
संबंधों के बगैर अधूरी है जिंदगी

सब से मिलजुल कर रहना,
किसी से मत करना लड़ाई,
सभी को करो सदा बंदगी,
यही सिखाती है जिंदगी,
संबंधों के बगैर अधूरी है जिंदगी

आज के पल को जी भर के जी ले,
पल-पल की खुशियों को सहेज ले,
ये पल नही आयेगी फिर से दोबारा ,
अपनों के साथ जी ले यह जिंदगी
संबंधों के बगैर अधूरी है जिंदगी.

*****

तू जिद्द पर अड़ तो सही

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू राजिम, गरियाबंद

खुल जाएंगे सभी रास्ते,
रुकावटों से लड़ तो सही,
सब हासिल होगा,
तू जिद्द पर अड़ तो सही.

सफलता तेरी कदम चूमेगी,
कड़ी मेहनत कर तो सही,
सब हासिल होगा,
तू जिद्द पर अड़ तो सही.

सपना तेरा जरूर सच होगा,
अपने अंदर जुनून पैदा कर तो सही,
सब हासिल होगा,
तू जिद्द पर अड़ तो सही.

राहों में चुनौतियां आएंगी,
उन चुनौतियों से लड़ तो सही,
सब हासिल होगा,
तू जिद्द पर अड़ तो सही

लंबी है डगर,मंजिल मिलेगी मगर,
सब हासिल होगा,
अपने अंदर विश्वास पैदा कर तो सही,
तू जिद्द पर अड़ तो सही.

*****

खुशी बांटो और खुश होकर जियो

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू राजिम, गरियाबंद

न किसी को नाराज करके जियो,
न किसी से नाराज होकर जियो,
गिले शिकवे को मिटाकर जियो,
खुशी बांटो और खुश होकर जियो.

दो पल की है ये जिंदगी,
यूं ही न बीत जाए ये पल,
हर पल को मुस्कुराकर जियो,
खुशी बांटो और खुश होकर जियो.

इंसान की इंसानियत कम न हो,
इंसान हो इंसान बनकर जियो,
सभी को हंसी देकर जियो,
खुशी बांटो और खुश होकर जियो.

जिंदगी एक बार मिलती है,
नहीं मिलेगी यह दोबारा,
जिंदगी जीने का नाम है,
जीवन के हर पल को जीभरकर जियो,
खुशी बांटो और खुश होकर जियो.

हर दिन जिंदगी का आखिरी दिन है,
यह सोचकर जियो,
खुलकर हंसकर मुस्कुराकर जियो,
खुशी बांटो और खुश होकर जियो.

*****

हो सके तो मुस्कुराहट बांटिये

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू राजिम, गरियाबंद

बस यूं ही भाग रहे हैं सब परछाइयों के पीछे,
अब सुकून की कोई आदत बांटिये,
हो सके तो मुस्कुराहट बांटिये.

दुखों से भरी है यह जिंदगी,
इस जिंदगी में थोड़ा सा सुख बांटिये ,
हो सके तो मुस्कुराहट बांटिये.

जिंदगी यूं ही ना बीत जाए गिले शिकवो में,
बेचैनियों को कुछ तो राहत बांटिये,
हो सके तो मुस्कुराहट बांटिये.

नीरस सी हो चली है जिंदगी,
थोड़ा सा इसमें शरारत बांटिये,
हो सके तो मुस्कुराहट बांटिये.

दूरियां बढ़ गई अपनों की बीच,
रिश्तों में कुछ सरसराहट बांटिये,
हो सके तो मुस्कुराहट बांटिये.

*****

तुम भी प्रयास कर सकते हो

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू राजिम, गरियाबंद

कड़ी मेहनत से मंजिल पा सकते हो,
अपने सपने को साकार कर सकते हो,
मैंने प्रयास किया,
तुम भी प्रयास कर सकते हो.

माता-पिता का नाम रोशन कर सकते हो,
अपने पैरों पर खड़े हो सकते हो,
मैंने प्रयास किया,
तुम भी प्रयास कर सकते हो.

जीवन में कुछ भी असंभव नहीं,
मेहनत से सब कुछ पा सकते हो,
मैंने प्रयास किया,
तुम भी प्रयास कर सकते हो.

अपने भविष्य को बेहतर बना सकते हो,
अपने लक्ष्य तक पहुँच सकते हो,
मैंने प्रयास किया,
तुम भी प्रयास कर सकते हो.

जीवन में सफल इंसान बन सकते हो,
कुछ बनकर दिखा सकते हो,
मैंने प्रयास किया,
तुम भी प्रयास कर सकते हो.

*****

तू कोशिश तो कर

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू राजिम जिला गरियाबंद

लक्ष्य लेकर आगे बढ़,
दिखा कुछ बनकर,
तू कोशिश तो कर.

सपना तेरा जरूर सच होगा,
खुद पर विश्वास कर,
तू कोशिश तो कर.

जीवन में चुनौतियां आएंगी,
उन चुनौतियों का सामना कर,
तू कोशिश तो कर.

मंजिल तेरी कदम चूमेगी,
अपने अंदर जुनून पैदा कर,
तू कोशिश तो कर.

असंभव कार्य भी संभव हो जाएगा ,
कोई कार्य नहीं है दुष्कर,
तू कोशिश तो कर.

मुश्किल हलातो से मत घबरा,
अपने अंदर साहस पैदा कर,
तू कोशिश तो कर.

*****

सफलता के बीज बोया करते हैं

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू राजिम, गरियाबंद

जो कौवे की तरह पाने की चेष्टा किया करते हैं,
वही जिंदगी में सफलता के बीज बोया करते हैं.

जो बगुले की तरह पढ़ाई में ध्यान दिया करते हैं,
वही जिंदगी में सफलता के बीज बोया करते हैं.

जो स्वान की तरह हमेशा सोया करते हैं,
वही जिंदगी में सफलता के बीज बोया करते हैं.

जो कुछ पाने के लिए नींद चैन का त्याग किया करते हैं,
वही जिंदगी में सफलता के बीज बोया करते हैं.

जो मुश्किल हालातो में भी नहीं घबराया करते हैं,
वही जिंदगी में सफलता के बीज बोया करते हैं.

जो असफलता के बाद पुनः प्रयास किया करते हैं,
वही जिंदगी में सफलता के बीज बोया करते हैं.

जो अपने मेहनत पर भरोसा किया करते हैं,
वही जिंदगी में सफलता के बीज बोया करते हैं.

जो सुबह की प्यारी नींद को खोया करते हैं,
वही जिंदगी में सफलता के बीज बोया करते हैं.

*****

कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है

रचनाकार- श्याम सुंदर साहू राजिम, गरियाबंद

पैरो में लगे काटे को निकालने के लिए
दर्द सहना पड़ता है,
कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है.

घोड़े को रेस जीतने के लिए
चाबुक का मार खाना पड़ता है,
कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है.

पंछी को ऊंची उड़ान भरने के लिए
संघर्ष करना पड़ता है,
कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है.

नदी को समुद्र से मिलने के लिए
पहाड़ों से टकराना पड़ता है,
कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है.

सफलता प्राप्त करने के लिए
नींद चैन त्यागना पड़ता है,
कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है.

कमल को खिलने के लिए
कीचड़ में रहना पड़ता है,
कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है.

सोने को निखरने के लिए
अग्नि में तपना पड़ता है,
कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है .

*****

नियति का सम्मान करो

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", धमतरी

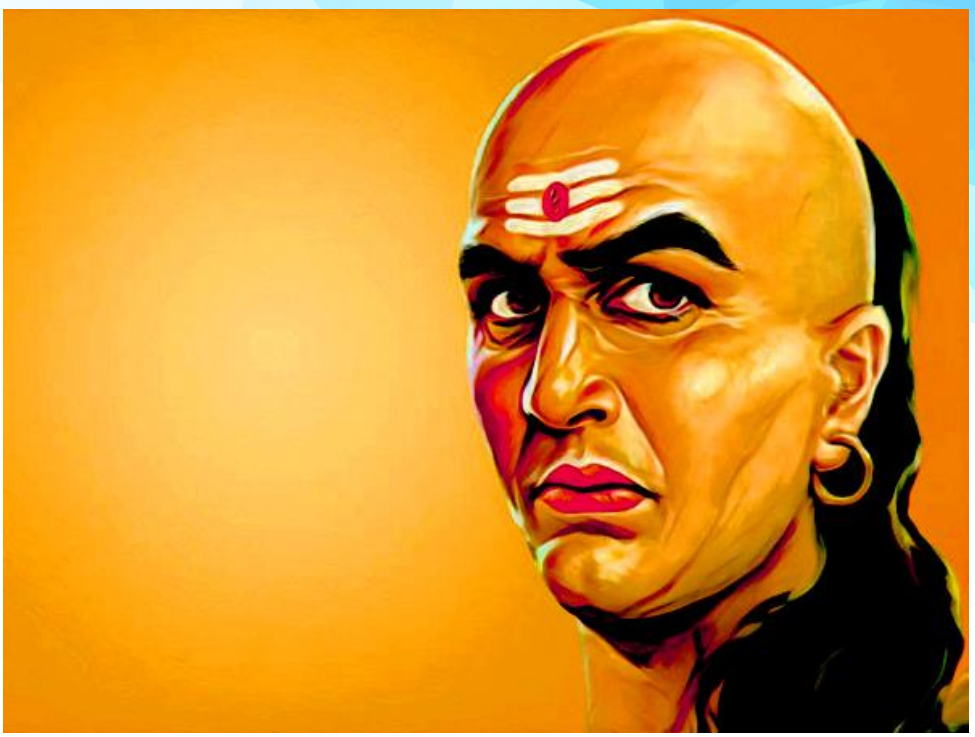

नियति के न्याय का सम्मान करो
जो हो रहा, उसको स्वीकार करो
नियति की नजरें सब देख रही है
धूल झोंकने की दुस्साहस न करो.

नियति बलवान है, गुमान न करो
और वर्तमान से अभिमान न करो
जो आज है वह तो, बदल जाएगा
अपनी सहोरत का गुणगान न करो.

अच्छे दिन आएंगे ये चाह न करो
जो होगा उसकी, परवाह न करो

जो नियति चाहेगी , वही तो होगा
अभी से इतनी उछल-कुद न करो.

जो चाहते हैं उसकी आस न करो
नियति के न्याय, पर विश्वास करो
कर्म कर तु,अच्छे तेरे, भाग्य बनेगे
किस्मत लेखा पर,अहंकार न करो.

*****

मेरे प्यारे पापा

रचनाकार- श्रीमती नंदिनी राजपूत, कोरबा

पापा आप हो सबसे प्यारे, लगते जग में सबसे न्यारे.
जीवन की हर समस्या में, खड़े रहते पाँव पसारे.

बचपन में आपने लाड़ लड़ाया, उँगली पकड़ चलना सिखाया,
अपने ही गोदी में बिठाकर, खाना खाना भी सिखलाया.

गलती करने पर डॉट लगाते,अगर मेरे आँखों में आँसू बह जाते,
पास आकर प्यार से सहलाकर, चुप भी मुझको खुद कराते.

थक-हार कर काम से आते,घर की जिम्मेदारी भी ना भूल पाते,
एक पल आराम ना करके,मेरा होमवर्क भी खुद कराते.

अगर कभी बीमार मैं हो जाती ,तुरंत डॉक्टर के पास ले जाते,
मेरी चिंता कर-करके पापा, चैन से रात को सो भी नहीं पाते.

मांॅ के जैसे प्यारे पापा, इन आंॅखों के तारे पापा,
अपनी इस बेटी को, कभी न करना बेसहारे पापा.

*****

नव -वर्ष

रचनाकार- संतोष कुमार कर्ष, कोरबा

आओ हम सब मिलकर
नया साल मनाएंगे
खुशियों में डूब जाएंगे
खीर मलाई खाएंगे
दादा- दादी मिलकर
नई कहानी सुनाएंगे
मामा -मामी आएंगे
खूब मजे उड़ाएंगे
काका -काकी मिलकर
नूतन गाने गाएंगे
मम्मी -पापा पर हम
खूब प्यार लुटाएंगे
देश की रक्षा की खातिर
हम मर -मिट जाएंगे

पीठ नहीं दिखाएंगे
आगे बढ़ते जाएंगे
छल कपट से दूर रहेंगे
सबको गले लगाएंगे
आओ हम सब मिलकर
नूतन वर्ष मनाएंगे

*****

बंदर के किस्सा

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

चढ़े पेड़ मा बंदर मामा,अब्बड़ खावैं ओहर आमा.
संझा–बिहना कूदय डारा,घूमय दिनभर पारा–पारा.

खीस–खीस ले दांँत दिखाये,नान–नान लइका डरिये.
लूटय जम्मों खई–खजानी,नइ मांँगय कोनो ले पानी.

अपन पिला ला पीठ चघाये,पुचकारत वो मया दिखाये.
नहीं कलेचुप बंदर बइठे,कोनजनी काबर बड़ अइठे.

कोरी भर राहै संँगवारी,जाये सँघरा कोला बारी.
छिदिर –बिदिर कर के सब जावैं,जाम पपीता छीता खावैं.

भेद–भाव बंदर नइ जाने,इक दूसर ला अपने माने.
जीयत भर ले साथ निभावैं,बिपत परे मा आगू आवैं.

*****

सूखा पेड़

रचनाकार- वीरेंद्र बहादुर सिंह, नोएडा

सूखे पेड़ को भी हरा भरा होने की आश है,
जैसे किसी प्यासे को पानी की प्यास है.
दूसरे हरे भरे वृक्ष को देख कर , थोड़ा उदास है.
मैं दूसरों को छाया दूं, सूरज का ऐसा प्रकाश है.
सूखे पेड़ को हराभरा होने की आश है.
खाद, बीज, पानी की जरूरत इसे खास है.
फिर फूल आए या फल आए, इसमें भी वैसी ही मिठास है.
सूखे पेड़ को भी हराभरा होने की आश है.
जीवन है इसमें देखभाल की इसे तलाश है,
देगा आक्सीजन यह इसमें भी सांस है.
सूखे पेड़ को भी हराभरा होने की आश है.
न करें इसका पतन करें, इसका जतन इसमें भी सुहास है.
है यह धरती का अनमोल रतन, प्रकृति का इसमें वास है.
सूखे पेड़ को भी हराभरा होने की आश है.

*****

ईमानदार चिंटू

रचनाकार- उर्मी साहू, छठवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम स्कूल, तारबाहर बिलासपुर-

चिंटू पार्क में फुटबॉल खेल रहा था. इतने में ही उसकी नजर पास पड़े एक पर्स पर पड़ी. वह पर्स को हाथ में लेकर आस -पास देखने लगा कि कही कोई मिल जाए जो इस पर्स का मालिक हो. परंतु कोई नहीं दिखा. चिंटू ने उस पर्स को खोलकर देखा तो उसमे कुछ पैसे तथा आधार कार्ड था , जिसमे एक बुजुर्ग व्यक्ति की फोटो थी.चिंटू बड़ा ही ईमानदार तथा सत्यनिष्ठ बालक था इसलिए उसने वह पर्स पुलिस थाने में देना उचित समझा. पुलिस थाने पहुंचते ही चिंटू ने उन्ही बुजुर्गो को देखा , जिसका यह पर्स है. चिंटू यह देखते ही, खुश हो गया तथा उसने यह पुलिस अंकल के माध्यम से उन बुजुर्गो को देदी. बुजुर्गो ने उसकी ईमानदारी की तारीफ की और उसे आशीर्वाद देते चले गए. शिक्षा - हमे सदा ईमानदारी वा सत्यनिष्ठता से कार्य करना चाहिए.

*****

जाड़ के जादू हे

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

ठंडा-ठंडा चले पुरवई, बरसत हवय गुंगुर.
जाड़ के दिन म हाथ-पाँव ह जावथे चंगुर.
जुन्ना सेटर संदूक भीतरी सूते खटखटावत हे.
कथरी, चद्दर अउ कमरा मन बकबकावत हे.
साल, कंटोप, बेंदरा टोपी, गलबंधनी ह हाँसे.
हतथा अउ मोजा ह लुकाके खिरकी ले झाँके.
बिलई लुकागे गोड़ा म, कुकुर खुसरगे कोनहा.
छेरी, गरुवा कोठा म सपटगे, देखत हे कोटना.
चिरई बइठे खोंधरा म, साँप, मुसवा मन बिला.
तरिया म तउंरे मछरी, बघवा के देंह होगे ढिला.
बरफ अउ करा जईसे गउकिन लागत हे पानी.
पोटा काँपैय नहाए बर, धरसा जोहथे नहानी.
सँझा जुहर गोरसी ल भरथें डोकरी-डोकरा.

कुनकुनावत सुतथें संगी खटिया हे झोलगा.
खुरा के भोकंड ढेकुना करथे जी कुसूर-मुसूर.
परानी मन ओढ़े गोठियाथें खूब फुसूर-फुसूर.
रात म ओढ़ना के चलत हे झिंकी-के-झिंका.
तापैंय भूरी बारके बिहनिया जुहर माई पिला.
तात करे पंजा घंसर के, मुँह के धुआँ बेकाबू हे.
गाँव, सहर म ए बछर बिकट जाड़ के जादू हे.

*****

होनी के आगे कुछ नहीं कर पायेगा

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी

जैसे बोयेगा वैसे ही फल तू पायेगा
जरूरत पर कोई साथ नहीं आयेगा
ये जग की रीत समझ नहीं आयेगा
होनी के आगे कुछ नहीं कर पायेगा

मानव तन तो मिट्टी का ही मकान है
पल-पल बदलती इसकी पहचान है
मानवता नहीं तो स्वयं तू पछतायेगा
होनी के आगे कुछ नहीं कर पायेगा

जान है तो सब रिश्तों का काफिला है
जाने के बाद यहाँ किसे क्या मिला है
अपनी ही करनी का फल तू पायेगा
होनी के आगे कुछ नहीं कर पायेगा

जीवन पथ मे जरा संभलकर के चले
इंसानियत से गुलशन को सींचते चले
भवसागर से तू सहज ही तर जायेगा
होनी के आगे कुछ नहीं कर पायेगा

आओ जीवन को प्रतिपल जीवंत करें
निज तेज से स्वयं को अब तो संत करें
ऐसे जीने से जीवन सफल हो जायेगा
होनी के आगे कुछ नहीं कर पायेगा

*****

कैसे-कैसे रंग दिखाता है समय

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी

जीवन से जब भी मोह न हो
अपनों से भी जब स्नेह न हो
हँसाता कभी रुलाता है समय
कैसे-कैसे रंग दिखाता है समय

जीवन के पथ पर कितने बढ़े
निजकर्म से नित जो आगे बढ़े
सभी को राह दिखाता है समय
कैसे-कैसे रंग दिखाता है समय

अपने और पराये का क्या अर्थ
कर्म बिना जैसे यह जीवन व्यर्थ
रिश्तों की परख कराता है समय
कैसे-कैसे रंग दिखाता है समय

मृग तृष्णा मे सब भटक रहे है
मायाजाल मे सब लटक रहे है
सच से वास्ता कराता है समय
कैसे-कैसे रंग दिखाता है समय

अब समय किसी के पास नही
जीवन से अब झूठी आस नही
खुद की महिमा बताता है समय
कैसे-कैसे रंग दिखाता है समय

*****

ख़ुशी से आँखें भर आई हैं

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी

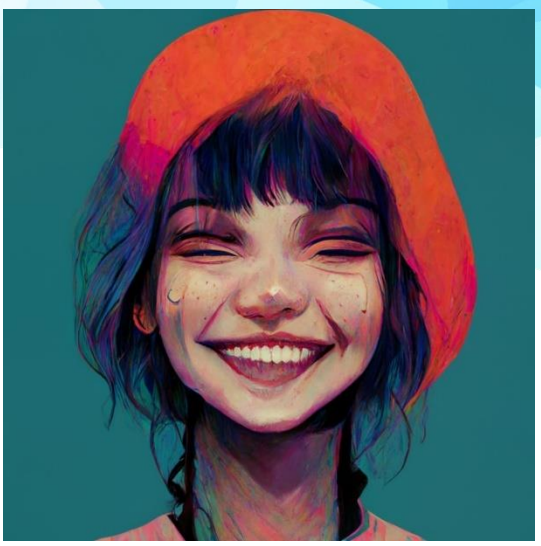

फिज़ा में मदमस्त बहार आई है,
ख़ुशियों ने फिर ली अंगड़ाई है,
बाग में बासन्ती फिज़ा छाई है,
ख़ुशी से आँखें भर आई हैं.

आज की तो बात कुछ और है,
बिखरी ख़ुशियाँ ही हर ठौर है,
बाग की हर कली मुस्कराई है,
ख़ुशी से आँखें भर आई हैं.

जीवन में एक नई पहल हुई है,
जीवन में साथी का दखल हुआ है,
उसके संग-संग खुशियाँ आई हैं,
ख़ुशी से आँखें भर आई हैं.

हर क्षण अब सुहाना लग रहा है,
जीवन मधुर तराना लग रहा है,
प्रकृति के रग-रग में खुमार छाया है,
ख़ुशी से आँखें भर आई हैं.

जीने की तो आज समझ बनी है,
बीतता जीवन केवल तना-तनी है,
जीवन के नए सफर की बधाई है,
ख़ुशी से आँखें भर आई हैं.

*****

जो होगा वो भी अब तो देखा जायेगा

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी

कल की फ़िक्र मे आज बर्बाद ना कर
व्यर्थ ही चिंता में जीवन ख्वार ना कर
नियति में जो है वो तो होकर ही रहेगा
जो होगा वो भी अब तो देखा जायेगा

आज के हर पल को जी भर जी ले
पल-पल की खुशियों को सहेज ले
ये पल फिर कभी दुबारा ना आयेगा
जो होगा वो भी अब तो देखा जायेगा

ये पल फिर कभी दुबारा मिले ना मिले
गुलशन में फिर ये फूल खिले ना खिले
बिता हुआ पल फिर कभी ना आयेगा
जो होगा वो भी अब तो देखा जायेगा

वही दिन होगी फिर वही रातें होंगी
जग में फिर रंजो गम की बातें होंगी
टूटा फूल डाली पर नही सज पायेगा
जो होगा वो भी अब तो देखा जायेगा

इस जीवन समर में प्रतिपल लड़ करके
जीवन सफर में प्रतिपल आगे बढ़ करके
कर्मठता से ही अपनी मंजिल को पायेगा
जो होगा वो भी अब तो देखा जायेगा

*****

मेरे गीत को तुम आवाज़ दो

रचनाकार- प्रमेशदीप मानिकपुरी, धमतरी

मेरे गीत को तुम आवाज़ दो
जीवन को नया सूर साज दो

मैंने लिखी गीत और गजल
हर गीत तेरी,तेरी हर ग़ज़ल
मेरे गीत को नया अंदाज दो
मेरे गीत को तुम आवाज़ दो

मेरे गीतों की जान हो तुम
जीवन की पहचान हो तुम
नित नया मुझे पहचान दो
मेरे गीत को तुम आवाज़ दो

उमंगों की बहार हो जीवन में
प्रतिपल त्योहार हो जीवन में

जीवन को नया पैगाम दो
मेरे गीत को तुम आवाज़ दो

महक जाए शाम तेरे नाम से
खुशबू आए अब गुलफाम से
हर शाम को नया अंजाम दो
मेरे गीत को तुम आवाज़ दो

खोल दे झरोखे हवा आने दे
सुगंध को आज बह जाने दे
महकती कली को बाग दो
मेरे गीत को तुम आवाज़ दो

*****

शीत ऋतु की पहेलियाँ

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

1 लगे गुनगुनी, छत पर जाऊँ
हाथ न आए, जीभर खाऊँ
मिलती नहीं घरों के अंदर
विटामिन 'डी' का स्रोत है सुंदर

2 गर्मी में न कोई पहने
जाड़े में उसके क्या कहने
पहन लो, ठण्डक नहीं सताए
बुना ऊन का, क्या कहलाए

3 गर्म पेय है, ठण्ड भगाता
पीने को हर कोई दौड़े
चुस्की लेकर पीते, कहते
मिलें साथ में गर्म पकौड़े

4 सर्दी में ही ओढ़ी जाती
सबको मीठी नींद सुलाती
इसमें भरी रुई, गरमाती
पलभर में ही ठण्ड भगाती

5 कड़ी ठण्ड में सेकें हाथ
आसपास मिल बैठें साथ
लकड़ी या कोयला जलाएँ
लोहे की है, कहीं ले जाएँ

6 'टाइम पास' है, मिलजुल खाएँ
झटपट सर्दी दूर भगाएँ
सस्ता मेवा, अति गुणकारी
चिक्की - गजक में भागीदारी

1 धूप 2 स्वेटर 3 चाय 4 रजाई 5 अँगीठी 6 मूँगफली

*****

बाल

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

सुंदर काले - काले बाल
लहराते घुँघराले बाल

कंघी कर धीरे-धीरे
सीधी माँग निकाले बाल

दीदी की लंबी चोटी
माँ ने खूब सँभाले बाल

चाचा जी रँग लेते हैं
दिखते मेंहदी वाले बाल

दादी जी के सन जैसे
फैला रहे उजाले बाल

काट-छांट कर नाई ने
फिर छोटे कर डाले बाल

तेल आँवले का मलकर
बड़ी जतन से पाले बाल

भैया जी के फैशन में
लगते गड़बड़झाले बाल

*****

जीवन की सीख

रचनाकार- सीमा यादव, मुंगेली

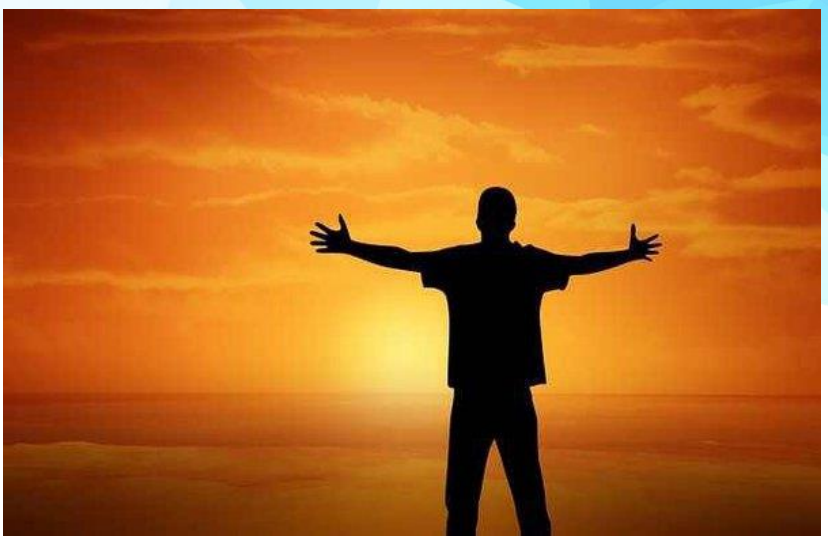

संघर्ष करने से घबराना नहीं
भले काम के लिये कभी हटना नहीं

धर्म के पथ पर चलकर अधर्म कभी करना नहीं
सत्य का वरण करके बिसराना नहीं

अपने कर्तव्य पथ से दूर जाना नहीं
नेक कार्य को मन से भूलना नहीं

माँ भारती के लिये कुपात्र होना नहीं
जग में रहकर किसी को रुलाना नहीं

माता -पिता की सेवा से घबराना नहीं
गुरु की निंदा कभी किसी से करना नहीं

*****

बढ़ती ठंड

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

कैसा ये मौसम है आया, कभी धूप सँग होती छाँव.
बैठे बिस्तर में है सारे, नहीं धरा पर रखते पाँव.

ठिठुर रहे हैं लोग यहाँ पर, किटकिट करते सब के दाँत.
इक दूजे को करे इशारे, नहीं निकलती मुँह से बात.

तेज सूर्य की किरणें आतीं, मिलती है ऊर्जा भरपूर.
चौराहे पर बैठे–बैठे, ठंडी को करते हैं दूर.

स्वेटर मफलर तन को भाये, स्पर्श नहीं करते हैं नीर.
छोटे बच्चे रोते रहते, क्या ठंडी में होती पीर.

बादल में छुप जाता सूरज, और पवन की बहती धार.
दुबके मानव घर के अंदर, काम काज से माने हार.

बहुत बढ़ी है ठंड धरा पर, थोड़ा कम कर दो भगवान.
देह बर्फ सी जमती जाती, कहीं निकल ना जाये प्राण.

*****

मैं हूं समय

रचनाकार- श्रीमती ज्योती बनाफर, बेमेतरा

पीछे चलना मेरा काम नहीं,
सदैव आगे बढ़ता जाता हूँ.

जो चले हर पल साथ मेरे,
पथ प्रदर्शक बनकर राह दिखाता हूं.

लोग बुनते हैं ख्वाब साथ मेरे,
उन्हें उनके ख्वाबों तक पहुंचता हूं.

चारों ओर जब छा जाए अंधेरा,
आशा की किरण दिखलाता हूं.

सदैव जो समझे महत्व मेरा,
उन्हें जिंदगी में आगे बढ़ाता हूं.

मैं कभी न थकता और न रुकता,
निरंतर आगे ही बढ़ते जाता हूं.

जो चले ना साथ मेरे,
बुरा बनकर उनके सामने भी आ जाता हूं.

ना मैं रुकता किसी के लिए,
न रुकना सिखाता हूं.

निरंतर आगे की ओर बढ़ो,
सदैव यह संदेश दे जाता हूं.

*****

सेंटा क्लाज

रचनाकार- श्रीमती ज्योती बनाफर, बेमेतरा

दिसंबर का महीना मुझे बहुत ही भाता,
संग अपने बहुत सारी खुशियां लाता.

इस महीने सेंटा क्लॉज है आता,
संग अपने ढेर सारे गिफ्ट लाता.

गोलू मोलू सजाने लगे क्रिसमस ट्री,
अब इन्हें मिलेगा गिफ्ट फ्री.

चॉकलेट,कैंडी की अब आई बहार,
सोनू मोनू को भी मिल गए उपहार.

गुदगुदाते ठंड में छुट्टियों की बौछार,
आने वाला है नए साल का त्यौहार.

चुन्नू को मिला साइकिल लाल,
मुन्नी को मिल गया गले का हार.

राजू के पास अब है कार,
खुशियां इन्हें मिली अपार.

देखो देखो सानिया आई,
चलो पूछे उसे क्या मिला भाई.

कटे केक और बटी मिठाई,
जगमग सी रात है आई.

क्यों ना हर माह दिसंबर बन जाए,
सेंटा क्लॉज से हर दिन हमें मिलाये.

*****

क्रिसमस

रचनाकार- मोनिका कौशिक कक्षा चौथी, जनपद प्राथमिक शाला बिल्हा, बिलासपुर

क्रिसमस ईसाई धर्म का प्रमुख त्योहार है. यह पर्व हर साल 25 दिसंबर को प्रभु ईसा मसीह के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है. वे ईसाई धर्म के संस्थापक थे. इस दिन लोग प्रभु ईसा मसीह एवम् उनकी बातों को याद करते है. इस दिन लोग अपने घरों में क्रिसमस ट्री रखते है. जिसे रंगीन लाइटों, मोजे, घंटियों तथा सितारों से सजाते हैं. इस दिन लोग गिरजा घरों में विषेश प्रार्थना करने जाते हैं. लोग अपने दोस्तों तथा रिश्तेदारों को उपहार देते हैं. इस प्रकार यह त्योहार बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाए जाते हैं.

*****

ठंड का मौसम

रचनाकार- छवि पटेल, कक्षा पांचवीं, शासकीय प्राथमिक शाला निपनिया, बिलासपुर

ठंड का मौसम नवंबर - दिसंबर में शुरू होता है. इस मौसम में बहुत ठंड रहता है. ठंड के मौसम में हम सुबह उठकर मॉर्निंग वॉक के लिए जाते हैं. ठंड एक ऐसा मौसम है जहाँ पर हम खेलकूद, कबड्डी और अन्य खेल खेलते हैं. ठंड के मौसम में हम ऊनी कपड़े पहनते हैं. सर्दी के मौसम सुबह गुनगुना पानी से नहाना बहुत अच्छा लगता है. इस मौसम में सुबह - सुबह गरमा गरम चुस्की लेकर चाय पीना मुझे बहुत अच्छा लगता है. इस मौसम में दिन छोटे और रात बड़ी होते है. ज्यादा ठंडी होने के कारण इस मौसम में लोगों को सर्दी, खाँसी, बुखार भी आ जाते है. ठंड के मौसम में नई-नई पर्यटन स्थल घूमने जाते है जिससे दिमाक और शरीर स्वास्थ्य रहते हैं.

*****

अपनी सुनो

रचनाकार- सृष्टि प्रजापती, आठवी, स्वामी आत्मानंद तारबहार बिलासपुर

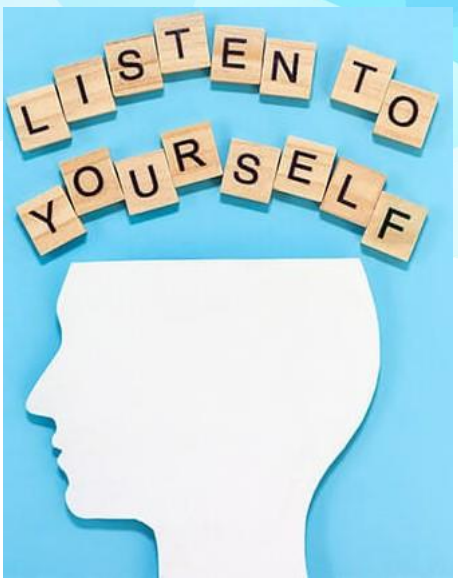

जमाने की छोड़ो तुम.
तुम्हे खुद में जमाना नजर आयेगा.
आत्मविश्वास के साथ आगे चलो.
तुम्हे कोई रोक न पायेगा.

लोगो की सुनकर क्यो,
अपने ख्वाहिशो पे ताला लगाते हो.
पिंजड़े मे बंद न रहकर भी,
तुम क्यों उड़ नही पाते हो.

तुम सुनते हो सबकी.
पर खुद को समझते नहीं हो.
गलती तुम्हारी ये है की,
तुम खुद से ज्यादा महत्व दुसरो को देते हो.

*****

गंगा अमली के रुख म

रचनाकार- मीनाक्षी शर्मा, भाटापारा

कहाँ जाबे रे परदेशी
टेहर्रा तैं भुख म.
आ जाबे मोर घर पिछोत
गंगा अमली के रुख म।
ए डारा के जम्मो पंछी
पड़की अऊ परेवा
राखही अपन घर म
बना के तोला दुलरवा
दुसर रुख के कोनो चिरई
कहाँअ इसन सुख म।
कहाँ जाबे रे परदेशी टेहर्रा.

गंगा अमली गुदा मिठ के
थोकिन देख तो तैं चिखके
एकर सुवाद म तैं अपन

भुला जाबे सरी दुख ल
कहाँ जाबे रे परदेशी टेहर्रा.
ए रुख के छँइया
अऊ ये गांव के भुँइया एकर सुरता ल परदेशी
ले जाथे अपन संदुक म
कहां जाबे रे परदेशी टेहर्रा.

सोज सोज म जाबे जे डहर
महानदी के बोहावत हे
नहर
पाबे अमृत के सुवाद
डारे जे बूँद मुख म
कहाँ जाबे रे परदेशी टेहर्रा.

नहर के खालहे उतर के देख
हरियर हरियर खेते खेत
ओ पार दुसर गाँव के शिकारी
झन तुके तोला बंदूक म
कहाँ जाबे रे परदेशी
टेहर्रा तैं भुख म.

आ जाबे मोर घर पिछोत
गंगा अमली के रुख म

*****

आईस पूस पुन्नी के तिहार्

रचनाकार- रूद्र प्रसाद शर्मा , रायगढ़

आईस पूस के तिहार.
छाईस पूस के बहार.

गोर्रा ह बनय पैंरा के गदिया ,
कुहरा शीशर खेत खार नदिया.
सुलसली बईहर के धार.
आईस पूस के तिहार.
छाईस पूस के बहार.

अर्रर् तततत बैला के गाड़ा.
धान डोहारय पूस के जाड़ा.
धान गादा जम्मो कोठार.
आईस पूस के तिहार.
छाईस पूस के बहार.

भैंसा पड़वा जुआ म फान्दय .
सुमेला डोरा के नाहना बान्धय.
टेकनी ,टट्टा, तुतारी औजार.
आईस पूस के तिहार.
छाईस पूस के बहार.

धरती महतारी धान देवय.
किसान ह साजय सेवय.
पिंवर सेरसों फूल के सिंगार.
आईस पूस के तिहार.
छाईस पूस के बहार.

पुस पुन्नी म बनय रोटी पीठा.
देढ़ौरी , खुरमी , अईरसा मीठा.
पुस म साग भाजी भरमार.
आईस पूस के तिहार.
छाईस पूस के बहार.

गांव के लईका मांगयॅ छेरछेरा.
तोर् कोठार के धान हेरहेरा.
देवईया के करयॅ जै जै कार.
आईस पूस के तिहार.
छाईस पूस के बहार.

*****

आ मैना आ

रचनाकार- रुद्र प्रसाद शर्मा , रायगढ़

हमर सुग्घर रईपुर म ,
आ मैना आ आ आ.
पाके जाम , चार , केन्दू
खा खा खा.
आ मैना आ आ आ.

उड़िहावत आबे बूढ़ापारा.
पीपर रुख म बनाबे घारा.
पसार के अपन डेना
ला ला ला.
आ मैना आ आ आ.

चोंच हवय तोर सुग्घर भारी.
मया करय छत्तीसगढ़ महतारी.
देखके तोला कहंयं जम्मो
वा वा वा.
आ मैना आ आ आ.

मोरे बोलत मैना आ उड़ि के.
परदेसिया चलती डगर मुड़ि के.
दूसर देस ल कभु झनि
जा जा जा.
आ मैना आ आ आ.

बस्तर के पहिचान तैं,
छत्तीसगढ़िया अभिमान तैं.
गा ले तहूं जय जोहार
गा गा गा.
आ मैना आ आ आ.

*****

जय होय स्वामी विवेकानन्द

रचनाकार- रुद्र प्रसाद शर्मा ,रायगढ़

भुवनेश्वरी ,विश्वनाथ के नन्द.
नरेन्द्र के नाम ,ख्यात होईन विवेकानन्द.
जय होय स्वामी विवेकानन्द.1.

🙏🙏🙏

ज्ञान अऊ कर्म योग के दाता.
रामकृष्ण तुँहर गुरू पितु माता.
वेदान्त के गोठ जेन ल जिनगी म रहिस पसन्द.
जय होय स्वामी विवेकानन्द.2.

🙏🙏🙏

सत्य के भाव ले भर के जीव के सेवा .
जगत ल सिखाईन विवेकानन्द देवा.
सन्यास अऊ शिवोहम के कंठस्थ जम्मो छन्द.
जय होय स्वामी विवेकानन्द.3.

🙏🙏🙏

दुनियाँ ल भाई-बहिनी के नाता सिखोईया.
इंसानियत,सतकरम के डगर देखोईया.
कभू नईँ विषम जेन ह सदा रहय निर्द्वन्द्व.
जय होय स्वामी विवेकानन्द.4.

🙏🙏🙏

बताईन सेवा नर रूप म नरायन के .
सिखाईन अग्निमंत्र आत्मज्ञान गायन के.
संन्यासी भेष म देस बिदेस ला देईन आनन्द.
जय होय स्वामी विवेकानन्द.5.

🙏🙏🙏

अनुसरण अष्टांगिक मार्ग गौतम बुध्द .
हठयोगी सर्वदा जेकर चित्त ह शुध्द.
लक्ष्य पाए के बाट बतोईया युवाशक्ति अनुसंध.
जय होय स्वामी विवेकानन्द.6.

🙏🙏🙏

धन धन होईस हमर भारत भुईयाँ .
रामकृष्ण मठ के दुआरी परौं पईयाँ.
मनखे मनखे म तुँहर अमर विचार के रहय सम्बन्ध.
जय होय स्वामी विवेकानन्द.7.

*****

बचपन

रचनाकार- वर्षा जैन,बेमेतरा

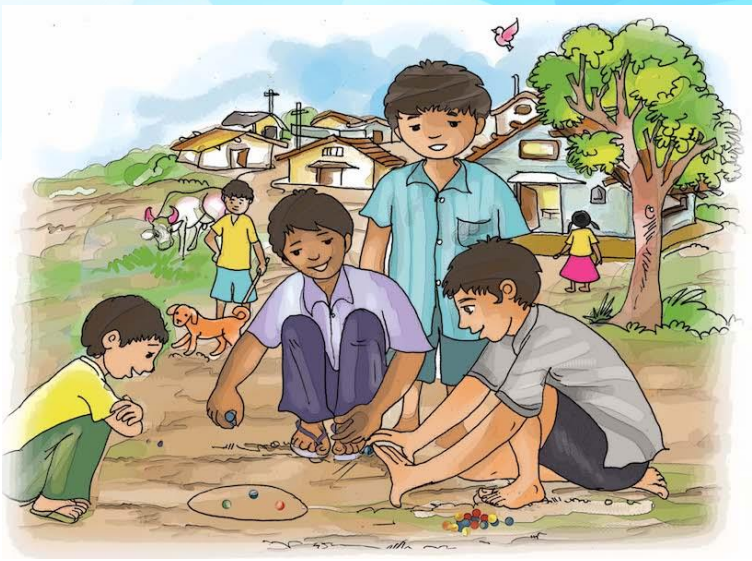

विश्वास भरे कदमों की आहट है बचपन.
जिज्ञासा भरी सोच का नाम है बचपन.
निर्मल मन की उत्तम परिभाषा है बचपन.
छल, द्वेष, दम्भ, पाखंड से परे है बचपन.

झूठी चकाचौंध और दिखावे से दूर है बचपन.
मन की सच्चाई का दर्पण है बचपन.
रिश्तों की गरिमा का मान है बचपन.
चिंतामुक्त और उन्मुक्त है बचपन.

सचमुच कितना प्यारा और भोला है बचपन.
तराशें तो कोहिनूर सा चमकता है बचपन.

*****

बनावटी चेहरा

रचनाकार- सीमा यादव, मुंगेली

अपने मूल स्वभाव में रहकर जीवन जीना बहुत ही सरल है. फिर भी लोग दूसरे के जैसा ही बनना चाहते हैं. अपने भीतर और बाहर की सुंदरता को ध्यान से एकाग्रचित्त होकर देखेंगे, तो आप एक अद्भुत शक्ति से परिचित होंगे जो आपको आपकी खूबसूरती का एहसास दिलायेगी. हर हाल में खुश रहें. यही जीवन जीने का सबसे सुन्दर सलीका है. अपना आँकलन पूर्णतः ईमानदारी से करें. जब हम निष्पक्ष, तटस्थ और निष्काम भाव से अपनी ताकत-कमजोरी को पहचान लेंगे, तो यह सुधार की दिशा में उच्चतम श्रेणी का कार्य माना जाएगा.

आइये! आज से और इसी क्षण से संकल्प लेते हैं कि हम अपनी प्रेरणा स्वयं बनेंगे. आखिर हम सभी जीवधारी एक ही पिता की संतान जो हैं.

*****

गुम है वो आवाज

रचनाकार- कुन्ती साहू, धमतरी

अये चिड़िया तुम कहां गुम हो गई,
मुझे सुनना है तेरी आवाज.
ये दुनिया की ध्वनि बहुत है शोर मचाती,
अब एक पल भी मुझे चैन की नींद नहीं आती.
दाना दाना भी तरस रहा है तुझे ढूंढने को,
हर लम्हा तड़प रहा है तेरी आवाज सुनने को.
पानी की हर बूंद भी तुझे हर वक्त ढूंढने जाती,
और है मेरी यही आश तुम कहीं तो मिल जाती.
अये चिड़िया तुम कहां गुम हो गई,
मुझे सुनना है तेरी आवाज.

आज सारे वृक्ष उजाड़ कर यह दुनिया तुझे भगाती,
और वही सकोर बना बनाकर फिर है तुझे बुलाती.
सुबह-सुबह लोगों को जगाना तेरा काम,

कोई समझ न पाता
अब मोबाइल करता यह काम .
हर रोज अलार्म लगती.
अये चिड़िया तुम कहां गुम हो गई,
मुझे सुनना है तेरी आवाज.

जिस आवाज में आज, लोगों को खुशी मिलती है,
वही आवाज उसे परेशान कर जाती.
एक वक्त था जब सूरज की किरणें देखकर
लोग समय का पता लगाती,
फूलों की मुस्कुराहट भी विचार करने लग जाती.
क्यों वह रंग बिरंगी पक्षियां मुझे देखने नहीं आती,
तरु पर लगी फलें भी कहती.
कि वो मीठी बोल वाली गुड़िया क्यों मुझे नहीं खाती,
मै हर पल यही कहती कि
क्युं तुम वापस नहीं आती.
क्युं तुम वापस नहीं आती
अये चिड़िया तुम कहां गुम हो गई मुझे सुनना है तेरी आवाज..

*****

गायों की टोली

रचनाकार- वसुंधरा कुर्रे, कोरबा

गायों की टोली जब निकलती सुबह,
जैसे-जैसे टोली रास्तों में आगे बढ़ती.
हर घर से गाय, बछड़ा, बैल और भैंस,
भैस निकलते सब झुंडों में
टोली बढ़ती गलियों में
लंबी झुंड आगे बढ़ती
सैकड़ो की संख्या में निकलते सब,
चरने को घरों से वनों की ओर,
गले में घंटी टन -टन टन -टन बाजे
गायो की खड़फड़ खडफड़ -खड़फड़ आती आवाज
मधुर सुंदर आवाज छेड़े
जब -जब टोलियां सुबह शाम निकलती
समय का अंदाजा यूं लगाते
सांझ ढलने से पहले जब टोली आती

बछड़ों की सुंदर मधुर आवाज
मां के संग आगे- पीछे उछलते लौटते
झुंडों में सब अपने-अपने घरों में जाते
गलियों की सुंदरता बढ़ाए
लंबी टोलिया आगे -आगे बढ़ते
कोई लड़ते ,कोई झगड़ते ऐसे चलते मन को बहुत ही सुंदर लगते
जानवरों की टोली जब निकलती
चरवाहा की बोली सब अच्छे से समझते

*****

आत्म नियंत्रण

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 8 वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम शाला तारबहार बिलासपुर

अपनी चाबी,
अपने हाथ.
ना किसी से मतलब,
ना किसी के साथ.

कब कहां है हंसना,
कब कहां है शांत होना.
कब कितना है खाना,
कब कितना है सोना.

ना ज्यादा बोलना,
ना हर चीज किसी को बताना.
आत्म नियंत्रण से ही मिलता,
जिंदगी का खजाना.

आराम तुम जितना कर लो,
ये तुम जानते हो कि वो कितना गलत है.
इसलिए खुद को नियंत्रित करो,
बाकी सब सिर्फ समय व्यर्थ है.

आराम की लालसा त्याग कर,
संघर्ष की सीढ़ी चढ़ो.
लक्ष्य पर केंद्रित होकर,
तुम सिर्फ आगे बढ़ो.

जब तुम लक्ष्य तक पहुंचते रहोगे,
बहुत सी चीज चमकेंगी.
लेकिन जब तुम उन पर ध्यान ना दोगे
तभी तुम्हारी किस्मत चमकेगी.

आत्म नियंत्रण को कहते हैं,
सफलता की चाबी.
खुद को तुमने संभाल लिया तो,
पक्की है कामयाबी..

*****

क्रिसमस

रचनाकार- ईशिता यादव, शासकीय प्राथमिक शाला निपनिया , संकुल केंद्र कन्या बिल्हा, विकास खण्ड बिल्हा, जिला बिलासपुर

क्रिसमस ईसाइ धर्म का एक प्रसिद्ध त्योहार है. यह त्योहार हर साल 25 दिसंबर को मनाया जाता है. इस दिन प्रभु ईसा मसीह का जन्म हुआ था. वह ईसाई धर्म के संस्थापक थे. इस दिन लोग अपने घरों को क्रिसमस ट्री से सजाते हैं. और इस दिन लोग गिरजा घर में जाकर प्रार्थना करते हैं. इस त्योहार में सांता क्लॉज बच्चों के लिए ढेर सारे उपहार लेकर आते है. क्रिसमस पर स्वादिष्ट केक और पेस्टी बनाई जाती है . इस दिन लोग एक-दूसरे को मेरी क्रिसमस की बधाई देते हैं. क्रिसमस का त्योहार हमें प्रेम, शांति और भाई चारे का संदेश देताहै.

*****

बच्चा बन जाऊं

रचनाकार- युवा कवि- प्रेमयदु, धमतरी

सोच रहा हूं फिर बच्चा बन जाऊं,
जल्दी से जाकर मां के आंचल में छुप जाऊ.

बहुत हो गई ये दुनियादारी,
अब नहीं सुहाती ये समझदारी.

हम बच्चे नासमझ ही अच्छे थे,
क्योंकि बचपन में हम सच्चे थे.

बड़े होकर यह क्या
हम जाल बुनने लगे.

जिसमें केवल अपना भला हो
वह रास्ता चुनने लगे.
ना लोगों की परवाह,
ना अपनों का ध्यान.

लगे हुए हैं सभी,
बनने में धनवान.
यह रुपया पैसा मान बड़ाई,
अब नहीं सुहाता है.

अब तो वही बचपन याद आता है.
मां अपनी दुआओं की बरसात कर
फिर से मेरा बचपन लौट आए
ऐसा चमत्कार कर.

*****

एक,बड़ा पहाड़

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", दुर्ग

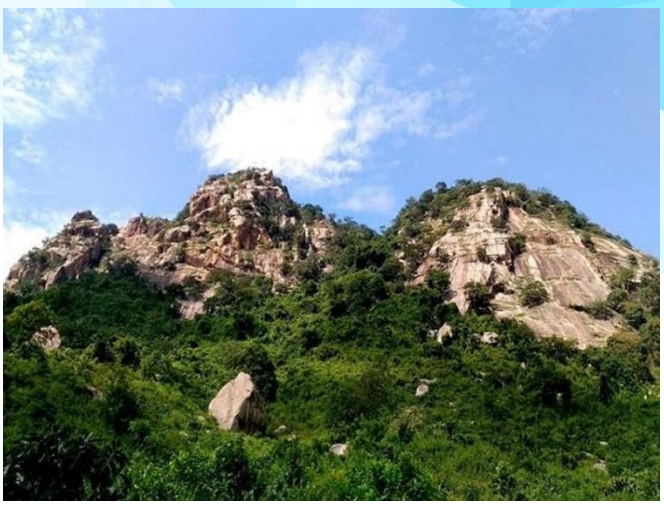

बहुत बड़ा है, एक पहाड़.
रंग बिरंगे,जिसमें हैं झाड़.
पेड़ों पर हैं,फल मीठे-खट्टे.
खाकर वनचर हैं, हट्टे-कट्टे.
नीचे,नदिया है कल कल कल,
झर झर झरने हैं,अविरल.
भांति-भांति के,पशु पक्षी हैं.
जिनकी,आवाजें अच्छी हैं.
जिसकी सुंदरता को देखने,
चाहूं,जाऊँ मैं, वहां हर बार.
बहुत बड़ा है, एक पहाड़.

*****

बेमौसम, बादर पानी

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", दुर्ग

बिन मौसम के,बादर पानी,
चौपट कर दिस,हमर किसानी.

धूंका पानी मा, धान लथरगे.
धनहा डोली मा,पानी भरगे.

बिसाय रेहेंव,महंगी मा बीज,
जागे उतेरा,जम्मो सरगे.

पील-पील,पील-पील होगे खार,
कइसे सकेलन करन विचार.

हार्वेस्टर बर,होगे मुश्किल,
मिलत नइ हे जी,अब बनिहार.

लेगत हस तैं दे के काबर
हाड़ा-गोड़ टूटगे जाँगर.

*****

दिवसो की माला

रचनाकार- मंजू पाठक ,शिक्षिका, दुर्ग

सात दिवसो की माला,
कहलाता है सप्ताह.
सबसे पहले आता है,
सबका प्यारा सोमवार.
मंगल को सब मंगल है,जिसको
कहती दादी मंगलवार.
बुद्धि बढ़ाए चंदा मामा,
आ गया देखो बुधवार.
गुरु की जो महिमा बतलाए,कहलाता वह
दिवस है वह गुरुवार.
मां कहती है सुन ले बेटा,
आज दिन है शुक्रवार.
सप्ताहांत होने को आया,
आ गया दिन शनिवार.
लो खत्म हुआ सबका इंतजार,
आ गया देखो रविवार.

*****

छम- छम बूँदें बरसीं

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत

चम-चम नभ में
बिजली चमकी.
छम-छम भू पर
बूँदें बरसीं.

वन-खेतों में
खुशियाँ धमकीं.
सब बगिया में
चिड़ियाँ चहकीं.

ठंडी-ठंडी
हवा सुहानी.
देकर दस्तक
हर घर बहकी.

फूलों ने भी
खुशबू देकर.
भेजा सबको
झोली भरकर.

*****

प्यारा मेरा स्कूल

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", दुर्ग

बहुत ही प्यारा लगता है,
हमको अपना स्कूल.
जिसके आँगन में पाते हैं,
हरियाली व रंग-बिरंगे फूल.

बड़े साफ और सुंदर हैं,
कक्षा की दीवारें.
चारों ओर लगे हैं जिसमें,
ज्ञान की बातें और सुविचार.

अनुशासन पूर्वक करते हैं,
हम अपनी नित पढ़ाई.

मदद खूब करते एक दूजे की,
नहीं करते कभी लड़ाई.

हर पल हो उपयोगी,
अपना यही उसूल.
बहुत ही प्यारा मेरा स्कूल.

*****

मोक्षांश की महत्वाकांक्षा

रचनाकार- बाल कहानी

मोक्षांश कक्षा आठवीं का होशियार बच्चा था,उसे अपनी होशियारी पर बड़ा घमंड था और हो भी क्यों न,अपनी क्लास में वो टॉपर था इसीलिए वह अपने सहपाठियों से न सीधी मुह बात करता था और न ही कभी उनसे दोस्ती की ख्वाहीश रखता.उसके इस व्यवहार से उसके सहपाठी हमेशा रुष्ट रहा करते थे.स्कूल सत्र का वह अंतिम महिना था जब, अचानक मोक्षांश के पिता का स्थानांतरण किसी दूसरे शहर में हो जाता है.यह जानकर वह बहुत दुखी होता है.और मन ही मन सोचता है-

"काश! पिता जी का स्थानांतरण नही हुआ होता! तो इस वर्ष भी मै अपनी क्लास में अच्छे नम्बरों से पास होता और टॉपर रहने का रिकॉर्ड बनाया होता.पर अफशोस!! पता नही दूसरे स्कूल में मै....!"

कहते हुए सोचना बंद कर देता है.

आज मोक्षांश के लिए नई जगह में स्कूल का पहला दिन था,कुछ सहमा, झिझका, पर आत्मविश्वास का अहम साफ झलक रहा था.

क्लास में बच्चों की नजर मोक्षांश में जाके टिक गई.कुछ बच्चों ने दोस्ती करना चाहा पर,उसने उन बच्चों को अपने से तुच्छ समझकर,अनदेखा कर दिया.उसे अपनी होशियारी और टॉपर होने का अहंकार जो था.और फिर वार्षिक परीक्षा का

टाईम-टेबल आ गया.सारे बच्चे तैयारी में लग गये.और नियत तिथि में परीक्षा सम्पन्न भी हुई.इधर मोक्षांश रिजल्ट के नम्बर का गुणा-भाग करना शुरू कर दिया.और फिर कुछ दिनों बाद रिजल्ट भी आ गया. सभी बच्चों की जिज्ञासा और धड़कनें तेज हो गई थी. पर मोक्षांश की महत्वाकांक्षा सिर चढ़ कर बोल रही थी.क्लास में वह हर किसी से यही कह रहा था-

मै टॉपर हूँ,टॉपर रहूँगा.

तभी क्लास टीचर आते ही सन्नाटा छा जाता है.टीचर ने सभी बच्चों को शुभकामनाएं देते हुए उन बच्चों को पास बुलाती हैं जिनका रिजल्ट इस वर्ष क्लास में सबसे अच्छा था.

तभी-

"सबसे पहले स्थान पर हैं !!... मिस लिली,दूसरे स्थान !!..निधि,तीसरे !!..निशि."

उत्साह के साथ घोषणा करते हैं.

पुरी क्लास तालियों की गड़-गड़ाहट से गूंज उठी.इधर मोक्षांश रिजल्ट सुनकर सिर पीट लिया,और सिर लटका लिया.

उसकी महत्वाकांक्षा पर पानी फिर गया था. तभी टीचर की नजर उस पर पड़ी और पास आकर उन्होंने कहा-

मोक्षांश ! देख लिया न अपना रिजल्ट ?

तुम अन्य बच्चों को तुच्छ समझते रहे. उनकी सतत् निगरानी करते रहे.उनके रिजल्ट को अपने रिजल्ट से तुलना करते रहे. सारा समय गुणा-भाग में बर्बाद कर दिया."काश!!अपनी ऊँची महत्वाकांक्षाओं को भूल कर पढ़ाई में ध्यान लगाया होता, तो यह दिन देखना नही पड़ता."

मोक्षांश के महत्वाकांक्षी होने का भूत उतर चुका था.और सिर नीचे किए टीचर के हर-एक शब्दों को गौर करते हुए पश्चाताप के आंसु बहा रहा था.

*****

नए साल की, नई शुरुआत

रचनाकार- जानवी कश्यप, आठवीं ,तारबहार बिलासपुर

नया साल है तो, नई चीजों को करना मत भूलना, जिंदगी एक बार मिलती है, जी भर के जी लो. अब हमें आगे बढ़ना है, पीछे नहीं जाना है, इस बार तो अपना सपना पूरा करना ही है. इस नए साल मां -पापा को भी खुश कर देंगे. भूल कर बीती बातों को, एक नए मुकाम को पाना है. नए साल में हमको, एक नया इतिहास बनाना है. एक खूबसूरती, एक ताजगी, एक सपना ,एक सच्चाई, एक आस्था, एक विश्वास यही है एक अच्छे साल की शुरुआत.. HAPPY NEW YEAR

*****

सत्य

रचनाकार- प्रेमयदु, धमतरी

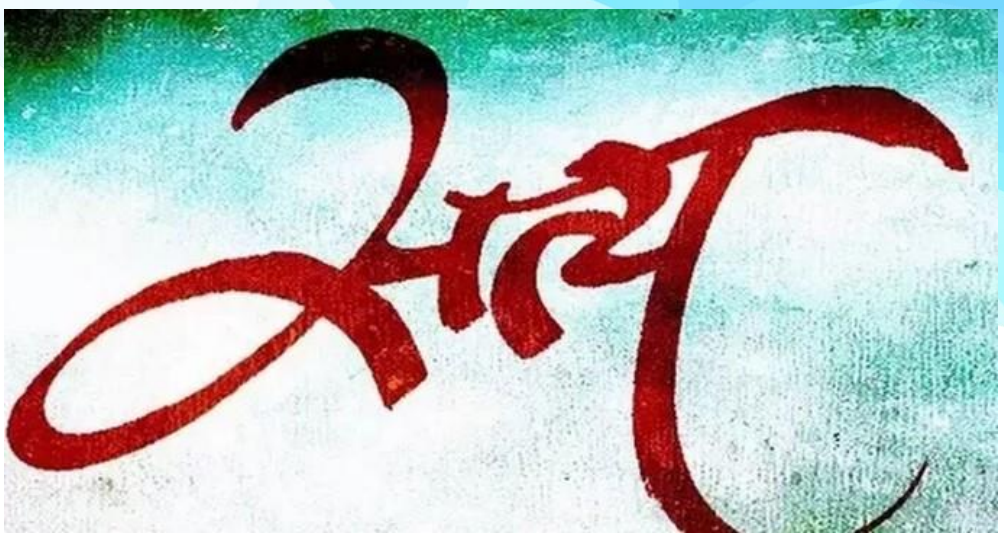

यहां भाग्य नहीं कर्म बड़ा है
करनी का ही खेल है
भाग्य पर जिसने छोड़ा जीवन
उसे दुनिया लगती जेल है

बात प्रेमयदु की मान ले बंदे
कर्म अपना तू करते चल
निश्छल जीवन जी ले मनुवा
तू ना कर किसी से छल

तेरी धन- दौलत और मान बड़ाई
तेरा झूठा अभिमान है
तेरी सच्ची मेहनत ही
तेरे जीवन का वरदान है

तेरे बाजुओ के ही बल से
चाहु ओर हरियाली है
तेरे ही अनवर संघर्षों से ही
दुनिया में खुशहाली है.

*****

कुछ तो हौसला कर

रचनाकार- अशोक पटेल"आशु", धमतरी

कुछ, तो मन में, हौसला कर
अभी तो पुरी जिंदगी बाकी है
वक्त कब और कैसे बीतेगा?
पर अभी तो अवसर बाकी है.

सोचने ,से तेरा, क्या फायदा
तेरा तो अभी मुकद्दर बाकी है.
तेरे हाथों वक्त है, सब कुछ है
अपना नसीब बनाना बाकी है.

सोंच मत तू, कुछ तो ठान ले
अभी तुझमे ये जुनून बाकी है.
कुछ करेगा तो, जरूर बढ़ेगा
मंजिल को, इंतजार बाकी है.

तुझमे, हौसला है, हिम्मत है
अभी तो, चमत्कार बाकी है.
तेरे लिए असम्भव कुछ नही
तेरी कोशिश हजार बाकी है.

इस जिंदगी का नाम है संघर्ष
अभी तो लम्बी सफर बाकी है
अभी तो तालीम, शुरू हुई है
अभी पूरा इम्तिहान, बाकी है.

*****

दर्द-ए-दिल

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

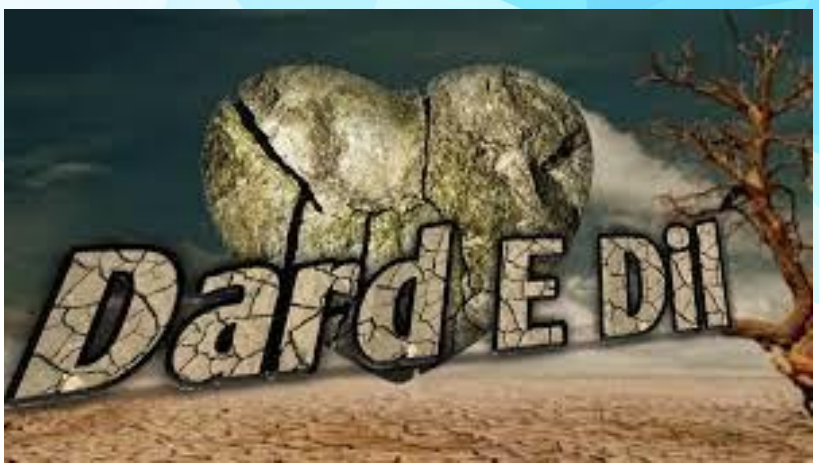

शीला मुझे तुम्हारी बहुत फिक्र हो रही है,और होगी भी क्यों नहीं; उन्तीस बरस की जो हो गई हो. शादी की उम्र हो गई है तुम्हारी. पता नहीं तुमसे कौन शादी करेगा. शीला की बड़ी माँ मालती के स्वर में चिंता से ज्यादा ताना था. चारों तरफ से सिर्फ एक ही आवाज कानों में गूँजती कि तुमसे शादी कौन करेगा शीला....?

यह समाज शीला के माता-पिता को प्रश्नों से आहत कर डालते थे. जिंदगी भर बिठा के रखने के तानों ने उनका जीना हराम कर दिया था. डूबते को तिनके का सहारा भी नहीं मिलता. अब करें तो करें क्या ? शीला को अपनी ही जिंदगी पहाड़ लगने लगी थी. बार-बार वह अपने आप को कोसती कि आखिर क्यों उसके साथ ही इस तरह का व्यवहार किया जाता है.

एक दिन शीला ने भी ठान लिया कि उसे समाज को क्या और कैसे जवाब देना है. शीला को देखते ही लोग तरह-तरह की बातें करते, लेकिन शीला को लोगों की बातें ही अंदर से मजबूत बनाती थी.

लोगों को जरा भी उम्मीद नहीं थी कि वह कुछ कर पायेगी. पर शीला ने भी हार नहीं मानी. पढ़ाई-लिखाई में लग गई. आखिरकार उसकी मेहनत रंग लाई. वह जिलाधिकारी बन गई. सबकी आँखें फटी की फटी रह गई.

शीला के लिए अब बड़े-बड़े घरों से रिश्ते आने लगे. जिन लड़कों ने पाँच साल पहले उसे ठुकरा दिया था ; वे पछताने लगे. शीला के माता-पिता ने उसके

जिलाधिकारी बनने की खुशी में एक छोटा-सा बधाई समारोह रखा ,जिसमें जाति-समाज के लोगों के साथ पूरा गाँव आमंत्रित था. उत्सव का कार्यक्रम चल ही रहा था, तभी एक लड़के ने शीला को प्रपोज किया. बातों ही बातों में उसने शीला के माता–पिता के समक्ष अपनी बात रख दी.

लड़के की बातें सुन शीला भौंचक रह गई. उसे लगा कि आज अचानक मेरे प्रति इसका प्रेम कैसे उमड़ आया. शीला ने तुरंत इंकार करते हुए लोगों के समक्ष अपनी बातें रखी- " क्या हो गया है आज लोगों को माँ ? कल तक तो जो लोग मुझे देखना पसंद नहीं करते थें, वे मेरी खुशी में शामिल हो गए. आखिर क्यों ? यह समाज चाहता क्या है ? यही न, चाहे लड़की अच्छी हो या बुरी; अगर उसके पास पैसे हैं तो उसकी शादी हो सकती है, और नहीं है तो नहीं ? है न ? " शीला बौखला-सी गयी थी- " मैं कल भी अपाहिज थी; और आज भी हूँ. बैसाखी ही मेरा सहारा रही है. लेकिन सिर्फ अपने पैरों से हूँ , न कि दिमाग से. दो साल पहले मेरे पड़ोसी उमेश की शादी धूमधाम से हुई ; जबकि वह हाथ और पैर से अपंग है. अब मेरी बारी आई तो सब तरफ से ऊंगलियाँ उठ रही हैं, क्योंकि उस समय मैं अपाहिज थी; या मेरे पास पैसे नहीं थे ? क्या अपाहिज होना लड़कियों के लिए अभिशाप है ? अब बेचारी उमेश की पत्नी को ही देख लो, ठीक-ठाक होकर भी अपाहिज पति से पाला पड़ा है उसका. क्या उनके सपने नहीं होंगे, उनकी जिंदगी बर्बाद नहीं हुई ? आप लोगों की सोच के अनुसार एक अच्छी-भली लड़की अपाहिज लड़के से शादी कर सकती है, लेकिन लड़का नहीं. आज लोगों के इस भेदभाव ने साबित कर ही दिया कि उनकी सोच अपाहिज है. मुझ जैसी अन्य लड़कियों को, सिर्फ शरीर के कुछ अंग काम न कर पाने पर ऐसी सोच ही उन्हें कमजोर बनाती है. जहाँ हमें सहारे की जरूरत होती हैं, वहाँ अपाहिज होने की बात याद दिलायी जाती है.

आज शीला अपना दर्द सबके सामने रख दी. फिर क्या, न सिर्फ शीला के; बल्कि उसके माता–पिता की आँखों से आँसू झरते जा रहे थे. पार्टी से लोग नजरें झुका कर खिसकने लग गये.

*****

फटाखे की जिद

रचनाकार- दक्ष मानिकपुरी, कक्षा 4थी, शास. प्राथमिक शाला सिल्ली, संकुल दाबो, मुंगेली

एक गाँव में सोनू और बंटी दो भाई अपने माता-पिता के साथ रहते थे. दोनों भाई पढ़ने विद्यालय जाते थे वो दोनों भाई पढ़ने लिखने में काफी होशियार थे ,लेकिन स्वभाव से जिद्दी थे.

एक दिन वो अपने पिताजी से फटाखे के लिए जिद करने लगे. पिताजी के लाख समझाने के बाद भी नहीं माने. पिताजी मजबूर होकर फटाखे ले आए. दोनों भाई खुश हुए और सोनू ने जैसे ही फटाखे फोड़े फटाखे के कुछ टुकड़े सोनू के आँख में चली गई. सोनू जोर - जोर से रोने लगा. उनके पिताजी डर गए और इलाज कराने अस्पताल ले गए. डॉक्टर ने बताया सोनू अब एक आँख से नहीं देख पाएगा.

आज सोनू एक आँख से देखता है. फटाखे खरीदने के लिए पिताजी से जिद करने वाले दिन को याद करके बहुत पछताता है.

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि बच्चों को फटाखे की जिद कभी नहीं करनी चाहिए और अपने माता-पिता की बात को मानना चाहिए.

*****

आजादी के लिए बिगुल बजादो

रचनाकार- अशोक कुमार यादव मुंगेली

मूक-बधिरों सा जीवन है, बैठे मत रहो अंधों की बस्ती में.
मन समुद्र में लहरें उठ रही, छेद है कागज की कश्ती में.
भक्ति के नाम पर झाँझ, मंजीरा बजाना शुरू कर दोगे,
अपनी आजादी के लिए घर में ताला लगाकर घुसोगे.
बात बनेगी नहीं, और भी बिगड़ेगी बात.
कोई भी बली, शक्ति तुम्हारी गर्दन पकड़ेगी.
फिर क्या करोगे? कोई जवाब तो मुझे दो?
कुछ नहीं बता पा रहे हो, तो बस अब रहने दो.
मुर्दों के देश में, जिंदा आदमी का कोई काम नहीं है.
सभी लोग मुर्दा बन जाएँ, यही ख्वाहिश है सबकी.
यदि सबको जिंदा रहना है, तो मुर्दों को जगाना पड़ेगा.
गहरी नींद में सोई हुई जनता को उठाना पड़ेगा.
सबके दिलों में साहस और उत्साह को भरना होगा.

एकता होकर सभी को नया सवेरा लाना होगा.
स्वयं प्रेरित होकर अपनी लड़ाई लड़नी होगी.
समाज में परिवर्तन की लहर लानी होगी.
पहले हम बदलेंगे, तभी तो जन-जन में बदलाव होगा.
बहुत पुराने फोड़े में, अभी भी तो गहरा घाव होगा.
कोई दवाई लिए बैठा है, सबके लिए राह में?
लगता है एक दिन तो क्रांति होगी? यही चाह में.
तो अब जागो! मातृभूमि तुझे पुकार रही है.
बेड़ियों में जकड़ी हुई, पराधीन गुहार लगा रही है.
भारत माँ के वीर सपूतों, कोई बजादो रणभेदी बिगुल.
ताकि सभी स्वतंत्र हो जाएँ, फँसे हैं अभी तक चंगुल.

*****

बेटियां

रचनाकार- Astha Pandey, Class - 6, Swami Atmanand Sheikh Gaffar Government English Medium School Tarbahar Bilaspur

कितनी प्यारी और मासूम होती है ऐ हमारी बेटियां
पिता का गर्व और मां की परछाई होती है ऐ बेटियां
रानी लक्ष्मीबाई तो कहीं होती है ऐ कल्पना चावला ऐ है हमारी बेटियां बेटियां
क्यों फिर इन्हें दुनिया में आने से रोक दिया जाता है
मां के गर्भ में ही क्यों इन्हें मार दिया जाता है
क्यों समझा जाता है इन्हे बोझ और दहेज के लिए में जलाया जाता है
बेटी यदि न होती तो बहू कहा से लाते तुम
लाओगे वंश को आगे बढ़ाने वाले निर्वंश ही रह जाओगे.

*****

सर्दी आई

रचनाकार- मयंक बघेल, 5 वी, शास. प्राथ. शाला भोजपुरी

सर्दी आई,
सर्दी आई.
देर से सूरज पड़े दिखाई.
सर्दी आई,
सर्दी आई.

ठण्डी हवा लगी है बहने.
कपड़े गर्म सभी ने पहने.
गेहूँ-चने की शुरू बुआई.
सर्दी आई,
सर्दी आई.

*****

जीत की एक आस हो

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरिनारायन

जीत की एक आस हो
मन में पूरा विश्वास हो
चाहे कुछ भी हो जाए
मन से न हताश हो.

मन में अटल दृढ़ता हो
निष्ठा और जीवटता हो
चाहे कुछ भी हो जाए
बेबसी न विवशता हो.

लक्ष्य में बस निशाना हो
अंतिम यही ठिकाना हो
चाहे कुछ भी हो जाए
आँखें बस यहीं टिकाना हो.

मन में हौसल हो ताकत हो
मंजिल पाने की चाहत हो
चाहे कुछ भी हो जाए
यह जज्बा सलामत हो.

मन में ये सदा साहस हो
लक्ष्य पाने का दुस्साहस हो
चाहे कुछ भी हो जाए
अंधेरा ना अमावस हो.

*****

देव और भेड़िया

रचनाकार- दीपक पात्रे, कक्षा 5वीं, शास. प्राथ. शाला सिल्ली, संकुल दाबो, मुंगेली

महलपुर राज्य में एक राजा राज करता था. राजा ने धूमधाम से शादी की. शादी के कुछ साल बाद उनकी रानी का एक पुत्र पैदा हुआ. राजा और रानी ने अपने पुत्र का नाम देव रखा. देव धीरे धीरे बड़ा होता गया. 6 साल बाद राजा ने अपने पुत्र को एक ऋषि के आश्रम में भेज दिया. देव आश्रम में ऋषि के पास कई वर्षों तक अस्त्र शस्त्र चलाने में निपुण होकर ऋषि के आज्ञा से अपने माता-पिता के पास लौट आया. कुछ दिन बाद उनके राज्य में एक शिकारी भेड़िया आया और धीरे धीरे आदमियों को मारकर खाने लगा. इससे राजा और समस्त प्रजा परेशान हो गए. इस बात का पता चलने पर देव ने भेड़िए को मारने के लिए सोचा. फिर दूसरे दिन भेड़िया शिकार के तलाश में किसी आदमी को मारने आया. देव देखते ही हथियार लेकर भेड़िया को मारने के लिए दौड़ा. भेड़िया भी देव को अपना शिकार समझ झपटा. दोनों में लड़ाई होने लगी और कुछ ही देर में देव ने भेड़िया को मार गिराया. इस तरह देव ने अपने राज्य का रक्षा किया.

*****

लालची बंदर

रचनाकार- कु. खुशबू घृतलहरे, कक्षा 5वीं, शास. प्राथ शाला सिल्ली, संकुल दाबो, मुंगेली

एक लालची बंदर था. बंदर खूब उछल-कूद करता और जानवरों के भोजन चुरा कर खा जाता. सभी जानवर उससे परेशान रहते थे. एक दिन खाने की तलाश में घूम रहा था. रास्ते में एक चिड़िया रोटी का एक टुकड़ा ले जा रही थी. देखते ही बंदर चुप के से रोटी का टुकड़ा छीन लिया. चिड़िया रोने लगी. रोते-रोते हाथी से मदद मांगने गई. हाथी बंदर को सबक सिखाने के लिए आम के कुछ फल रास्ते में रख दिया और बंदर के आने का इंतज़ार करने लगा. कुछ देर में बंदर आम चुराने आया, मौका पाकर हाथी ने अपनी सूंढ़ से बंदर की पूँछ पकड़कर गोल गोल घुमाया और नदी में फेंक दिया. बंदर नदी में डूबने ही वाला था. हाथी ने तरस खा कर बंदर को बाहर निकाला.

इस तरह लालची बंदर को अपनी गलती का एहसास हुआ. सभी जानवरों से माफी मांगा.

सीख- लालची स्वभाव से इंसान भटक जाता है. मेहनत कर आत्मनिर्भर बनना चाहिए.

*****

पेड़ बोला

रचनाकार- कु. प्रियंका साहू, कक्षा 5वीं, शास. प्राथ. शाला सिल्ली, संकुल दाबो, मुंगेली

माहीपुर गाँव के एक गरीब परिवार में नारायण नाम का एक लड़का था. नारायण बहुत होशियार व समझदार था. गांव के ही विद्यालय में कक्षा पांचवी पढ़ता था. उनके माता-पिता मजदूरी का काम करते थे. नारायण घर के कामों में अपने माता-पिता का मदद करते थे.

एक दिन नारायण जलाऊ लकड़ी लाने के लिए जंगल गया. एक पेड़ को काटना शुरू ही किया था कि उई-उई की आवाज आई. नारायण इधर-उधर देखा पर कोई दिखाई नहीं दिया. फिर पेड़ काटना शुरू किया फिर उई-उई मुझे मत काटो मैं सबको छायाँ और हवा देती हूँ. नारायण ठीक है कहकर दूसरे पेड़ की काटने लगा, पेड़ बोला- उई-उई मुझे मत काटो मैं सबको खाने के लिए ताजे ताजे फल देती हूँ. नारायण ठीक है कहकर चला गया इसी तरह जिस पेड़ के पास जाता पेड़ लकड़ी काटने से मना कर देते. अंत में नारायण निराश होकर एक पेड़ के नीचे बैठ गया. सोचने लगा बिना लकड़ी के ही घर जाना पड़ेगा फिर शाम को माँ खाना कैसे बनाएगी? तभी एक बुजुर्ग पेड़ ने अपनी एक सूखी टहनी दे दी और नारायण खुशी से लकड़ी लेकर घर आ गया.

सीख- पेड़ पौधों से शुद्ध हवा पानी मिलता है. पेड़ पौधों को नहीं काटना चाहिए. बल्कि उनकी देखभाल करना चाहिए.

*****

खीर

रचनाकार- श्रीमती योगेश्वरी साहू, बलौदाबाजार

खाके खीर पीके पानी,
मेरी दीदी बड़ी सयानी.

पापा लेकर आये शक्कर,
खीर खाने का है चक्कर.

दूध लेकर दादी आई,
खीर खाने जुगत लगाई.

मम्मी लाई किशमिश काजू,
आओ धानी ,शानू ,राजू.

नानी की रेसिपी है भाई,
मम्मी और मैंने मिलकर खीर बनाई.

*****

विकसित भारत @ 2047 - युवाओं की आवाज़

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

यही समय है सही समय है - भारत विकसित राष्ट्र बनने के लिए लंबी छलांग लगाने को तैयार है, युवाओं का युवा देश भारत अपने विकसित राष्ट्र होने की ओर चल पड़ा है.

वैश्विक स्तरपर सर्वविदित है किभारत की 140 करोड़ जनसंख्या जो विश्व में सबसे सर्वाधिक है यह एक ऐसा अकेला देश है जहां 60 प्रतिशत से अधिक युवा है. याने भारत एक युवा राष्ट्र है जिसमें जितने कार्यकुशल हैंड भारत में है उतने दुनियां के किसी भी देश में नहीं है. बस!! जरूरत है हमें उन हाथों में काम की दिशा में बढ़कर अपने लक्ष को हासिल करने की, जिसका बंदोबस्त भी भारत सरकार ने कर रखा है कि एक अलग से कौशलता विकास मंत्रालय बनाया गया है जो उन हाथों में कौशलता रूपी ज्ञान का अस्त्र प्रदान करता है ताकि वह रोजगार लेने वाले की जगह रोजगार देने वाले बने. अगर ऐसी तैयारी हमारी है तो स्वाभाविक रूप से हम 2047 तक विकसित राष्ट्र बने का विजन बनाकर सटीक रणनीति बनाई गई है, जिसमें मेरा मानना है कि 2047 के पूर्व ही भारत को विकसित देश राष्ट्र का दर्जा प्राप्त हो जाएगा, इसलिए ही दिनांक 11 दिसंबर 2023 को माननीय पीएम ने विकसित भारत एट द रेट ऑफ 2047 युवाओं की आवाज, कार्यशाला का शुभारंभ किया है क्योंकि युवाओं का युवा देश भारत अपने विकसित भारत बनने की ओर चल पड़ा है इसलिए आज हम पीआई बी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में

उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे यही समय है सही समय है, भारत विकसित भारत बनने के लिए लंबी चलांग लगाने को तैयार है.

साथियों बात अगर हम माननीय पीएम द्वारा दिनांक 11 दिसंबर 2023 को एक कार्यक्रम में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से संबोधन करने की करें तो, उन्होंने आज वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से विकसित भारत@2047: युवाओं की आवाज का शुभारंभ किया. उन्होंने कार्यक्रम के दौरान, इस पहल की शुरुआत को चिह्नित करने के लिए देश भर के राजभवनों में आयोजित कार्यशालाओं में विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, संस्थानों के प्रमुखों और संकाय सदस्यों को संबोधित किया. उन्होंने प्रत्येक विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों और युवाओं की ऊर्जा को विकसित भारत के सामान्य लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में लगाने की आवश्यकता को रेखांकित किया. विचारों की विविधता को ध्यान में रखते हुए, पीएम ने विकसित भारत के निर्माण की दिशा में सभी धाराओं को जोड़ने पर बल दिया. सभी से विकसित भारत@2047 के दृष्टिकोण में योगदान करने के लिए अपनी सीमा से परे जाने का आग्रह किया. उन्होंने अधिक से अधिक युवाओं को इस अभियान से जोड़ने के लिए देश के हर महाविद्यालय और विश्वविद्यालय में विशेष अभियान चलाने का सुझाव दिया. विकसित भारत से जुड़े आइडियाज पोर्टल के शुभारंभ का जिक्र किया और बताया कि 5 अलग-अलग विषयों पर सुझाव दिए जा सकते हैं. उन्होंने कहा कि सर्वश्रेष्ठ 10 सुझावों के लिए पुरस्कार की भी व्यवस्था की गई है. आप अपने सुझाव माई गव प्लेटफॉर्म के माध्यम से भी दे सकते हैं. उन्होंने कहा, विचार की शुरुआत 'मैं' से होती है, जैसे भारत की शुरुआत 'मैं' से होती है. उन्होंने रेखांकित किया कि विकास का विचार केवल स्वयं के 'मैं' से शुरू हो सकता है. उन्होंने 'विकसित भारत' के विकास की अवधि को एक परीक्षा की अवधि से उपमा देते हुए, लक्ष्य को पूरा करने के लिए आवश्यक अनुशासन बनाए रखने में विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, तैयारी और समर्पण के साथ-साथ परिवारों के योगदान का भी उल्लेख किया. उन्होंने टिप्पणी की कि देश के नागरिक होने के नाते हमारे लिए भी परीक्षा की तारीख घोषित कर दी गई है. उन्होंने बल देकर कहा,हमारे सामने 25 साल का अमृत काल है. हमें विकसित भारत के लक्ष्य के लिए 24 घंटे काम करना है. यह वह वातावरण है जिसे हमें एक परिवार के रूप में बनाना है. यह देखते हुए कि देश की तेजी से बढ़ती आबादी युवाओं द्वारा सशक्त हो रही है, उन्होंने बताया कि भारत आने वाले 25-30 वर्षों

तक कामकाजी उम्र की आबादी के मामले में अग्रणी बनने जा रहा है और दुनिया इस बात को मानती है. प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, "युवा शक्ति परिवर्तन की वाहक भी है और परिवर्तन की लाभार्थी भी है." उन्होंने इस बात पर बल दिया कि अगले 25 वर्ष आज के महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में युवाओं के करियर के लिए निर्णायक होंगे. यह देखते हुए कि ये युवा ही हैं जो भविष्य में नए परिवार और एक नया समाज बनाएंगे, उन्हें यह तय करने का अधिकार है कि एक विकसित भारत कैसा होना चाहिए. प्रधानमंत्री ने कहा कि इसी भावना के साथ सरकार देश के हर युवा को विकसित भारत की कार्ययोजना से जोड़ना चाहती है. उन्होंने विकसित भारत के निर्माण के लिए देश के युवाओं की आवाज को नीतिगत रणनीति में ढालने पर बल दिया और युवाओं के साथ अधिकतम संपर्क बनाए रखने वाले शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका पर प्रकाश डाला.माननीय शिक्षा मंत्री ने कहा कि यह पहल अमृत काल विमर्श को एक जन-आंदोलन में बदलने जा रही है. उन्होंने युवा शक्ति और शिक्षा समुदाय को 2047 तक विकसित भारत के भव्य दृष्टिकोण से लगातार मार्गदर्शन करने और जोड़ने के लिए पीएम को धन्यवाद दिया.उन्होंने यह भी कहा कि आज के कार्यक्रम के शुभारंभ ने एक नई दृष्टि और दिशा दी है. उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि विश्वविद्यालय, महाविद्यालय और शैक्षणिक संस्थान इस पहल को नई गति प्रदान करेंगे. उन्होंने कहा कि सबका प्रयास के मंत्र से प्रेरित होकर एक ऐसा वातावरण बनाना होगा जो अमृत पीढी और नागरिकों को विकसित भारत के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रेरित करे.

साथियों बातें कर हम भारत एट द रेट ऑफ 2047 की पृष्ठभूमि की करें तो, देश की राष्ट्रीय योजनाओं, प्राथमिकताओं और लक्ष्यों के निर्माण में देश के युवाओं को सक्रिय रूप से सम्मिलित करने के प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण के अनुरूप, विकसित भारत @2047: युवाओं की आवाज़' पहल विकसित भारत @2047 के दृष्टिकोण में विचारों का योगदान करने के लिए देश के युवाओं को एक मंच प्रदान करेगी. यह कार्यशालाएँ विकसित भारत @2047 के लिए अपने विचारों और सुझावों को साझा करने के लिए युवाओं को सम्मिलित करने की प्रक्रिया शुरू करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होंगी.विकसित भारत @ 2047 का उद्देश्य आजादी के 100वें वर्ष यानी वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है. यह दृष्टिकोण आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता और सुशासन सहित विकास के विभिन्न पहलुओं को सम्मिलित करता है.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि विकसित भारत @ 2047 - युवाओं की आवाज़ यही समय है सही समय है - भारत विकसित राष्ट्र बनने के लिए लंबी छलांग लगाने को तैयार है युवाओं का युवा देश भारत अपने विकसित राष्ट्र होने की ओर चल पड़ा है.

*****

अमर कहानी

रचनाकार- नरेन्द्र सिंह " नीहार"

फतेह सिंह जोरावर सिंह की,
कथा अमर बलिदानी है.
साहस,शौर्य और निडरता की,
अद्भुत अमिट निशानी है.
गुरु गोविंद के सुत लाडले,
दादी गुजरी के नयन सितारे.
जिंदा दीवारों में चुनवाये,
डर प्रलोभन सारे हारे.
मुगलों के जुल्मों के आगे,
सिंह शावक से निडर दहाड़े.
दुष्ट काजी को किया निरुत्तर,
स्वाभिमान के झंडे गाड़े.

शीश कुर्बान किये धर्म हित,
लगा लिया माटी का चंदन.
वीरों का यह बाल दिवस
कोटि-कोटि वन्दन- अभिनंदन.

*****

मैं तुम्हारा टीचर हूँ

रचनाकार- राजेन्द्र जायसवाल (सूरजपुर)

भूल गए मुझे तुम,
ए फॉर एप्पल से लेकर,
फुल स्टॉप और कोमा तक,
कबीर और तुलसी से लेकर
अल्फा, बीटा और गामा तक,
मैं ही तो तुम्हारे साथ था.

तुम्हे याद है कि,
मैं फिर से याद दिलाऊं,
उन भूली बिसरी बातों को,
फिर से मैं गिनवाऊँ,

जिसकी छड़ी से कांपते थे तुम,
घबरा जाते थे तुम सब

अनुशासन सिखाया जिसने,
तुम्हारा वही पी॰टी॰वाला सर हूँ मैं

तुम्हारी खूबसूरती को जिसने पहचाना,

जिसने तुम्हे सुना, समझा और जाना,
तुम्हारी वही इंग्लिश वाली मैडम हूँ,मैं

जिसने तुम्हारी आँखों को ख्वाब दिखाया,
कुछ कर गुजरने का पहला इंकलाब हूँ, मैं
कठिन सवाल कान पकड़कर हल कराया,
तुम्हारा वही गणित वाला सर हूँ,मैं

खून का रिश्ता भले ना हो,
पर शिष्यों का एक वंश है मेरा,
तुम्हारी हर सफ़लता में पसीने का,
थोड़ा ही सही पर अंश है मेरा,

तुम्हारी तरह हर साल एक नयी फसल आती है,
ख़ुशी होती है, जब वो खूब लहलहाती है,
तुम्हारे भीतर का थोड़ा सा स्वाद हूँ मैं,
खेत में पड़ा वही पुराना ऊर्वरक खाद हूँ मैं,

तुम जैसे दीपक हर साल आते हैं,

ख़ुशी होती है, जब वो नयी रौशनी फैलाते हैं,
तुम्हारे प्रकाश में ऊर्जा का मेल हूँ मैं,
तुम्हारे दिए में पड़ा वही पुराना तेल हूँ मैं,

चर्चा में रहती है तुम्हारी सूरत और सीरत,
खूब लगती है बाजार में तुम्हारी कीमत,
तुम्हारे भीतर की कच्ची मिटटी का आकार हूँ, मैं
जिसके हांथो गढ़े हो तुम,वही कुम्भकार हूँ,मैं

मुझे चन्द्रगुप्त जो मिल जाए,
तो मैं एक नया राष्ट्र बना दूँ,
मुझे सचिन लाकर दो तो सही,
खेल जगत में तूती बजवा दूँ,
मैं वही चाणक्य और वही आचरेकर हूँ,
मेरे रहन सहन गफ़लत मत कर लेना,
मत सोच लेना कि मैं कोई फटीचर हूँ,
तुम्हारा कल, आज मेरे हाँथ में है,
मैं वही तुम्हारा टीचर हूँ.

*****

विघटनकारी तकनीक

रचनाकार- राजेन्द्र जायसवाल (सूरजपुर)

जब टीवी मेरे घर आया,
तो मैं किताबें पढ़ना भूल गया.

जब कार मेरे दरवाजे पर आई,
तो मैं चलना भूल गया.

हाथ में मोबाइल आते ही मैं
चिट्ठी लिखना भूल गया•

जब मेरे घर में कम्प्यूटर आया,
तो मैं स्पेलिंग भूल गया.

जब मेरे घर में एसी आया
तो मैंने ठंडी हवा के लिए
पेड़ के नीचे जाना बंद कर दिया.

जब मैं शहर में रहा,
तो मैं मिट्टी की गंध को भूल गया.

मैं बैंकों और कार्डों से
लेन-देन करके
पैसे की कीमत भूल गया.

परफ्यूम की महक से मैं
ताजे फूलों की महक भूल गया.

फास्ट फूड के आने से
घरों में लोग
पारंपरिक व्यंजन बनाना भूल गये

हमेशा इधर-उधर भागता रहा
मैं रुकना कब,कैसे और कहाँ ये भूल गया

जब मुझे व्हाट्सएप मिला,
तो मैं बात करना भूल गया.

*****

मेरी टीचर

रचनाकार- साक्षी साहू, 5 वी, शा. प्राथ शाला भोजपुरी

प्यारी है,
बातें करती न्यारी है.
पढ़ाती भी अच्छा है,
मेरी टीचर प्यारी है.

टीचर जी हमें ज्ञान देती हैं,
खेलने के लिए टाइम देती हैं.
वह बगिया की क्यारी है,
मेरी टीचर प्यारी है.

प्रतियोगित कभी कराती है,
महत्व खेल का बताती है.
कभी नहीं वो मारी है,
मेरी टीचर प्यारी है.
मेरी टीचर प्यारी है.

*****

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

21वीं सदी में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विकास और तबाही दोनों का टूल बन सकता है, भारत को विकास की नई ऊंचाइयों तक ले जाने में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अहम रोल होगा.

वैश्विक स्तरपर सर्वविदित है कि मानवीय सुख सुविधाओं को प्राप्त करने में जहां एक और सुख सुविधाओं का अंबार होता है तो वहीं दूसरी ओर जलवायु परिवर्तन के नतीजो जैसा भयंकर तबाही का आलम भी होता है जो हम सदियों से देखते आ रहे हैं. परंतु मानव जाति है कि सिर्फ अपने वर्तमान सुख सुविधाओं में ही रमी रहती है, भविष्य में आने वाली हमारी पीढ़ियों के बारे में ध्यान नहीं देते हैं, अब समय आ गया है कि हमें अपनी इस सोच को रेखांकित करना होगा क्योंकि आज तकनीकी और प्रौद्योगिकी चार कदम आगे बढ़करआर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की ओर दुनियां बढ़ गई है, जिसमें विकास की अपार संभावनाएं हैं तो तबाही की भी काफी संभावनाएं आ सकती है जो हमें वर्तमान डीपफेक के रूप में नजर आ रही है, इसके अलावा साइबर सिक्योरिटी, डाटा थेफ्ट और सबसे बड़ी बात यह है कि आतंकवादियों के हाथ में एआई टूल्स आ जाने से बहुत बड़ा खतरा उत्पन्न हो जाएगा जिसका विश्व के सभी देशों को मंथन करना जरूरी हो गया है. इसलिए ही एआई पर वैश्विक साझेदारी करना,तकनीक काआदान-प्रदान, विचार विमर्श करना जरूरी हो गया है, इसलिए ही 29 देशों का एआई पर वैश्विक साझेदारी शिखर सम्मेलन 12-14 दिसंबर 2023 को भारत में शुरू हो गया है, जिसका उद्घाटन

माननीय पीएम ने 12 दिसंबर 2023 को किया जिसका उद्देश्य एआई के निरंतर विकसित हो रहे क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सहयोग और ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा मिल सके क्योंकि एआई विकास और तबाही दोनों का टूल बन सकता है, इसलिए आज हम मीडिया व पीआईबी में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, भारत को विकास की नई ऊंचाइयों तक ले जाने में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अहम रोल होगा.

साथियों बात अगर हम दिनांक 12 दिसंबर 2023 को माननीय पीएम द्वारा एआई शिखर सम्मेलन के उद्घाटन की करें तो, आज नई दिल्ली के भारत मंडपम में ग्लोबल पार्टनरशिप ऑन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (जीपीएआई) शिखर सम्मेलन का उद्घाटन किया. उन्होंने ग्लोबल एआई एक्सपो का भी अवलोकन किया. जीपीएआई 29 सदस्य देशों के साथ एक बहु-हितधारक पहल है, जिसका लक्ष्य एआई से संबंधित प्राथमिकताओं पर अत्याधुनिक अनुसंधान और व्यावहारिक गतिविधियों का समर्थन करके एआई पर सिद्धांत और व्यवहार के बीच अंतर को पाटना है. भारत 2024 में जीपीएआई का लीड चेयर है.

साथियों बात अगर हम एआई शिखर सम्मेलन को जानने की करें तो, यह अनुसंधान संगोष्ठी है, वार्षिक जीपीएआई शिखर सम्मेलन के हिस्से के रूप में इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकीमंत्रालय(एमईआईटीवाई) आईआईटी मद्रास में सेंटर फॉर रिस्पॉन्सिबल एआई (सीईआरएआई) के सहयोग से एक शोध संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है.संगोष्ठी, जिसका विषय है सार्वजनिक क्षेत्र के अनुप्रयोगों में जिम्मेदार एआई को आगे बढ़ाना, जिम्मेदार एआई पहल पर सहयोग करने के लिए भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर के शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है. जून 2020 में स्थापित ग्लोबल पार्टनरशिप ऑन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (जीपीएआई) एक अभूतपूर्व बहु-हितधारक पहल है. भारत 2020 में जीपीएआई के संस्थापक सदस्यों में से एक है.एआई के क्षेत्र में सिद्धांत और व्यवहार के बीच अंतर को पाटने के प्राथमिक उद्देश्य के साथ, जीपीएआई एआई से संबंधित प्राथमिकताओं पर अत्याधुनिक अनुसंधान और व्यावहारिक गतिविधियों का समर्थन करता है.प्रारंभ में 15 सदस्य देशों के साथ शुरू किए गए, जीपीएआई ने 28 सदस्य देशों और यूरोपीय संघ को शामिल करने के लिए अपनी सदस्यता का उल्लेखनीय रूप से विस्तार किया है. विशिष्ट प्रतिभागीसंगोष्ठी में इंजीनियरिंग और सार्वजनिक नीति क्षेत्रों के

प्रतिष्ठित विद्वानों और चिकित्सकों की भागीदारी है.न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, इंस्टीट्यूट ऑफ इलेक्ट्रिकल एंड इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर्स, कार्नेगी मेलॉन यूनिवर्सिटी और पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एजुकेशन एंड रिसर्च, चंडीगढ़ जैसे प्रसिद्ध संस्थानों के प्रतिनिधि चर्चा में योगदान देंगे.कॉन्फ्रेंस शॉर्टलिस्ट ट्रैक के लिए कागजात की मांग 24 जुलाई, 2023 को जारी की गई थी. 36 से अधिक देशों के शोधकर्ताओं से जबरदस्त प्रतिक्रिया प्राप्त हुई थी.सबमिशन में विभिन्न विषयों को शामिल किया गया, जिनमें जिम्मेदार एआई सिद्धांत, एल्गोरिदमिक जवाबदेही, और स्पष्टीकरण, जिम्मेदार एआई आकलन और बहुत कुछ शामिल हैं.शिक्षा जगत उद्योग और सरकार के सदस्यों वाली एक प्रतिष्ठित समिति द्वारा आयोजित एक कठोर समीक्षा प्रक्रिया के बाद, संगोष्ठी में शामिल करने के लिए 11 प्रस्तुतियाँ चुनी गईंआर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के क्षेत्र में असाधारण काम करने वाले विश्व के दिग्गज इस सम्मेलन में भाग ले रहे हैं. तीन दिनों तक चलने वाले इस शिखर सम्मेलन के दौरान, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और वैश्विक स्वास्थ्य, शिक्षा और कौशल, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डाटा गवर्नेंस जैसे विषयों पर कई सत्र आयोजित किएजा रहे हैं

जीपीएआई एक बहुपक्षीय पहल है जिसके हित धारकों का उद्देश्य इससे जुड़े प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में अत्याधुनिक शोध और अनुप्रयोग संबंधी गतिविधियों को बढ़ावा देकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के सिद्धांत और व्यवहार के बीच की दूरी को पाटना है.शिखर सम्मेलन में देशभर से 50 से अधिक जीपीएआई विशेषज्ञ और 150 से अधिक वक्ता भाग ले रहे हैं. इसके अलावा इंटेल, रिलायंस जियो, गूगल, मेटा, एडब्ल्यूएस, योटा, नेटवेब,पेटीएममाइक्रोसॉफ्ट मास्टरकार्ड, एनआईसी, एसटीपीआई, इमर्स, जियो हैप्टिक, भाषिनी आदि समेत दुनिया भर के शीर्ष एआई गेमचेंजर्स विभिन्न कार्यक्रमों में भाग ले रहे हैं. इसमें युवा एआई पहल के तहत विजेता छात्र और स्टार्ट-अप भी अपने एआई मॉडल और समाधान प्रदर्शित करेंगे.भारत सरकार की ओर से जारी एक बयान में कहा गया है कि शिखर सम्मेलन में ऐसे मुद्दों पर चर्चा होगी जिनमें एआई का इस्तेमाल सामाजिक परिवर्तन को सक्षम करने और स्वास्थ्य देखभाल, पहुंच, जलवायु परिवर्तन, टिकाऊ कृषि समेत वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिए होगी.इसके अलावा जलवायु कार्रवाई के लिए एआई पर भी एक सत्र का आयोजन होगा. एआई और सतत कृषि के नाम से भी एक सत्र का आयोजन होगा. इस सत्र का

उद्देश्य स्थिति अध्ययन और सफल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तैनाती मॉडल के उदाहरणों पर चर्चा करके ग्लोबल साउथ में टिकाऊ कृषि के लिए एआई इनोवेशन का लाभ उठाने के अवसरों की पहचान करना है.

साथियों बात अगर हम एआई शिखर सम्मेलन में माननीय पीएम के संबोधन की करें तो, उन्होंने एआई के नकारात्मक पहलुओं की ओर ध्यान खींचते हुए कहा कि भले ही इसमें 21वीं सदी में विकास का सबसे मजबूत उपकरण बनने की क्षमता है, लेकिन यह इसके विनाश में भी अपनी भूमिका निभा सकता है. डीपफेक, साइबर सुरक्षा, डेटा चोरी और आतंकवादी संगठनों द्वारा एआई उपकरणों पर हाथ डालने की चुनौतियों की ओर इशारा करतेहुए उन्होंने जवाबी उपायों की आवश्यकता पर बल दिया. उन्होंने भारत की जी20 अध्यक्षता के दौरान जिम्मेदार मानव-केंद्रित एआई शासन के लिए एक रूपरेखा बनाने के भारत के प्रस्ताव पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जी-20 नई दिल्ली घोषणा ने एआई सिद्धांतों के प्रति सभी सदस्य देशों की प्रतिबद्धता की पुष्टि की है. उन्होंने विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर समझौतों और प्रोटोकॉल की तरह एक साथ काम करने व एआई के नैतिक उपयोग के लिए एक रूपरेखा तैयार करने पर जोर दिया,जिसमें उच्च जोखिम वाले या सीमांत एआईउपकरणों का परीक्षण और विकास शामिल है. पीएम ने दृढ़ विश्वास प्रतिबद्धता, समन्वय और सहयोग की आवश्यकता पर जोर देते हुए पूरी दुनिया से इस दिशा में एक क्षण भी बर्बाद न करने का आह्वान किया. उन्होंने कहा,हमें वैश्विक ढांचे को एक निश्चित समय-सीमा के भीतर पूरा करना होगामानवता की रक्षा के लिए ऐसा करना बहुत जरूरी है. एआई को एक विश्वव्यापी अभियान बताते हुएउन्होंने सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया. उन्होंने एआई उपकरणों के परीक्षण और प्रशिक्षण के लिए डेटा सेट, किसी भी उत्पाद को बाजार में जारी करने से पहले परीक्षण की अवधि जैसे कुछ प्रश्न सुझाए, जिन्हें एआई की विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए हल करने की आवश्यकता है. उन्होंने यह भी पूछा कि क्या किसी सूचना या उत्पाद को एआई जनरेटेड के रूप में चिह्नित करने के लिए एक सॉफ्टवेयर वॉटरमार्क पेश किया जा सकता है. उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि किसी भी प्रणाली को टिकाऊ बनाने के लिए उसे परिवर्तनकारी, पारदर्शी और विश्वसनीय बनाना महत्वपूर्ण है. उन्होंने कहा, इसमें कोई संदेह नहीं है कि एआई परिवर्तनकारी है लेकिन इसे अधिक से अधिक पारदर्शी बनाना हम पर निर्भर है. उन्होंने कहा कि इस्तेमाल किए जा रहे डेटा को पारदर्शी और पूर्वाग्रह से मुक्त रखना एक अच्छी शुरुआत होगी. यह भी

कहा कि सभी देशों को यह आश्वस्त करना जरूरी है कि एआई की विकास यात्रा में कोई भी पीछे नहीं रहेगा. एआई पर भरोसा तभी बढ़ेगा जब संबंधित नैतिक, आर्थिक और सामाजिक पहलुओं पर ध्यान दिया जाएगा. उन्होंने कहा, ऐसा करने का एक तरीका अप-स्किलिंग और री-स्किलिंग को एआई ग्रोथ कर्व का हिस्सा बनाना है. वैश्विक दक्षिण में डेटा सुरक्षा और आश्वासन भी कई चिंताओं को दूर करेंगे.संबोधन का समापन करते हुए, उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि जीपीएआई शिखर सम्मेलन विचारों के आदान-प्रदान का एक उत्कृष्ट अवसर और प्रत्येक प्रतिनिधि के लिए सीखने का एक महत्वपूर्ण अनुभव साबित होगा. अंत में कहा,अगले दो दिनों में, आप एआई के विभिन्न पहलुओं पर गौर करेंगे.मुझे उम्मीद है कि इसके लागू होने के फलस्वरूप, निश्चित रूप से एक जिम्मेदार और टिकाऊ भविष्य के निर्माण का मार्ग प्रशस्त होगा.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर वैश्विक साझेदारी शिखर सम्मेलन 12-14 दिसंबर 2023 पर विशेष.21वीं सदी में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस विकास और तबाही दोनों का टूल बन सकता है भारत को विकास की नई ऊंचाइयों तक ले जाने में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अहम रोल होगा.

*****

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- प्रीतम कुमार साहू,शिक्षक,दुर्ग

1. ऊंचे लम्बे पेड़ों पर रहता,
फल के अंदर पानी रहता
"ना"से उनका नाम हैं आता
बतलाओ वह क्या कहलाता?

2. उछल कूद हर दम करता
पेड़ो की डाली में रहता
"ब"से उनका नाम है आता
बतलाओ वह क्या कहलाता?

3. टिक-टिक वह करता रहता
दिन रात वह चलता रहता
"घ" से उनका नाम हैं आता
बतलाओ वह क्या कहलाता?

4. रात में जगता दिन में सोता
कभी बड़ा कभी छोटा होता
“चां” से उनका नाम है आता
बतलाओ वह क्या कहलाता?

5. पंख नहीं पर उड़ता है वह
आसमान को छूता है वह
“प” से उनका नाम है आता
बतलाओ वह क्या कहलाता?

1. नारियल, 2. बंदर, 3. घड़ी, 4. चांद, 5. पतंग

*****

मैं विद्यार्थी हूँ

रचनाकार- यशवंत पात्रे, कक्षा 8 वीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला बिजराकापा, मुंगेली

करने की कुछ चाह है.
आगे बढ़ने के कई राह है.
मैं विद्यार्थी कुछ करने की चाह है

पेन, कॉपी है मुझे पकड़ना.
कठिन परिश्रम करके है पढ़ना.
कठिन परिश्रम पिताजी के,
व्यर्थ नहीं करने की चाह है.
आगे बढ़ने के कई राह है.
यह शिक्षा एक सीढ़ी है.
कक्षा ऊपर, कक्षा की पीढ़ी है.
सीढ़ी में चढ़ने की चाह है.

आगे बढ़ने के कई राह है.
हमनें कितनी पढ़ाई की है,
पता लगाने के लिए आई परीक्षा.
परीक्षा को भी हमें पास करने की चाह है.
आगे बढ़ने के कई राह है.
हम जब कुछ करके दिखलाएँगे.
तब हमारे शिक्षक खुश हो जाएँगे.
तब हमें कई इनाम दिलवाएँगे.
हमें आगे बढ़ाने के कई राह बताएँगे.
दूर से आए मेरे उद्धारकर्ता, उन्हें न कोई रोको.
है राजा के समान पर नाम है शिक्षक,
तो उन्हें न कोई टोको.

*****

महू कुछु करके देखाहूँ

रचनाकार- यशवंत पात्रे, कक्षा 8 वीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला बिजराकापा, मुंगेली

मैं ह पढ़े ल गेंव त छेंकेव मोला,
का करके देखाही, कहेव मोला.
महू पढ़-लिख के कुछु जीनिस बिसाहूँ,
जग मा कुछ करके देखाहूँ.
मैं ह कॉपी, पुस्तक लेवौ त,
मोर ददा ल भड़कावैंय,
काय करही, नागर तो चलाही,
कहिके मोर ददा ल पढ़ावैंय.
मोर ददा ह कहिस, मैंय नागर नई चलवावौं,
अपन बेटा ल मैं डॉक्टर, इंजीनियर बनाहौंव.
कसम खाएँव, महू कुछु करके देखाहूँ,
अपन ददा के नाव ला रोशन करहूँ.
संसार म नवा इतिहास रचहूँ,
जग मा कुछ करके देखाहूँ.

एक दिन अइसन आइस,
मैं ह बेग धर के स्कूल जावत रहेंव,
त मोला दउड़ावैंय,
मोर परुवार ल गाँव ले भगवावैंय.
अतका मुश्किल म मैंय ह पढ़ेंव,
गाँव ल उबारे बर आगू बढ़ेंव.
जग मा कुछ करके देखाहूँ.
गाँव ल शिक्षित बनाहूँ.

*****

स्कूल में कैप्टन का चुनाव

रचनाकार- यशवंत पात्रे, कक्षा 8 वीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला बिजराकापा, मुंगेली

एक गाँव था. उस गाँव में एक स्कूल था. उस स्कूल के बच्चे बहुत ही शोरगुल करते थे. वहाँ के शिक्षक बहुत अच्छे थे. उस स्कूल में जब शिक्षक एक कक्षा में अध्यापन कराते तो दूसरे कक्षा के बच्चे बहुत शोरगुल करते थे.तब शिक्षक ने कहा- तुम लोग बहुत शोरगुल करते हो. एक कक्षा को पढ़ाओ तो दूसरे मटरगस्ती करते हो, तो आज तुम लोगों के लिए क्लास कैप्टन का चुनाव करते हैं, जिसमें उप-कैप्टन और मुख्य कैप्टन रहेंगे. ऐसा शिक्षक ने बच्चों से कहा तो उस स्कूल के बच्चों ने पूछा शिक्षक क्लास कैप्टन का काम क्या होता है? तब शिक्षक बोले की क्लास कैप्टन यदि शिक्षक समय पर ना आए तो सही समय में प्रार्थना कराना, क्लास के विद्यार्थी यदि हल्ला करें तो उसे चुप कराना, यदि शिक्षक दूसरे क्लास को पढ़ा रहे हैं तो खुद अपने क्लास को पढाना, क्लास कैप्टन ऐसे काम करते हैं,यदि कोई बच्चा आपस में लड़ाई करे तो मुख्य कैप्टन उसे सुलझाने में मदद करते हैं. शिक्षक ने कहा- तुम लोगों का चुनाव करते हैं, तो बताओ कौन-कौन क्लास कैप्टन के चुनाव में भाग लेना चाहते हो? तीन बच्चे खड़े हुए नाम चिंकू, मोहन और पिंकी. इन लोगों ने कहा- सर हम क्लास कैप्टन के चुनाव में खड़े होंगे. शिक्षक ने कहा- ठीक है, तुम लोगों का मतदान कराते हैं. सभी बच्चों ने चिंकू और मोहन को मतदान किया तो शिक्षक बोले- चिंकू और मोहन में से मोहन मुख्य कैप्टन और चिंकू उप कैप्टन बनाया जाता है, तो एक बच्चा ने कहा- सर चिंकू और मोहन ने धोखेबाजी किया है. शिक्षक बोला- कैसे? इन्होंने कई

सारे अपने नाम के पर्ची खुद बनाकर डाले हैं. शिक्षक ने कहा- तो कुछ बच्चे ने तो इन्हें दिए हैं, तो वह बच्चा बोलता है- सर इन्होंने वह वोट खरीदे हैं. सर बोले- क्यों ऐसा करते हो? ईमानदारी से कैप्टन बना करो. शिक्षक ने कहा- तुम दोनों ने धोखेबाजी किया है. पिंकी को क्लास कैप्टन बनाया जाता है. मोहन मुख्य कैप्टन बन रहा था तो उसे उप कैप्टन बनाया जाता है, कहकर पिंकी और मोहन को कैप्टन बना दिया.

*****

दोस्ती

रचनाकार- प्रेमयादु, धमतरी

मां की ममत्व भरी डांट है दोस्ती

पिता के गुस्से की फटकार है दोस्ती

भाई-बहन की मीठी खटास है दोस्ती

दो दिलों की अमिट प्यार है दोस्ती

दोस्तों की दोस्ती का एहसास है दोस्ती

गुरू और शिष्य के संस्कार है दोस्ती

भगवान को पाने का विश्वास है दोस्ती

प्रकृति का प्राणियों पर उपकार है दोस्ती

सरगम के साथ सुरो का राग है दोस्ती

भगवान का दिया प्राण है दोस्ती

ना पूछो मेरे दोस्तों, क्या है दोस्ती

तोषण की प्रत्येक पंक्ति का सारांश है दोस्ती

*****

आलसी खरगोश

रचनाकार- कु. नीलम भद्रे, कक्षा - चौथी, शासकीय प्राथमिक शाला सिल्ली, मुंगेली

जंगल में खरगोशों का झुंड रहता था. उनमें से एक खरगोश बहुत ही आलसी था. वह दिन भर बहुत सोता था. इसलिए कमजोर भी हो गया था. एक दिन खरगोशों का झुंड किसान के खेत में गाजर खाने गया. किसान ने झुंड को गाजर खाते देख डंडे लेकर दौड़ाया आलसी खरगोश गाजर खाता रहा. किसान को देख भागना चाहा पर भाग नहीं सका और पकड़ा गया. किसान ने आलसी खरगोश को पिंजड़ा में बंद कर दिया. कुछ दिन बाद बड़ी मुश्किल से खरगोश भागने में सफल हुआ.

सीख- हमें कभी भी आलस नहीं करना चाहिए. आलसी व्यक्ति कभी सफल नहीं होता है.

*****

नवा साल मनाबो

रचनाकार- शशिकांत कौशिक, परसदा

आवाहो संगी आवो नवा साल मनाबो,
आज नइ आ पाहू त काल मनाबो.

जउन इसकुल जाथे, वहू ला बलाबो
नइ जावय तेला a b c पढाबो,
आवो संगी आवो नवा साल मनाबो.

छोटे-बड़े सबो ल बलाबो
मिलजुलके संगी नवा साल बनाबो,
आवो संगी आवो नवा साल मनाबो.

कउनो झन राहय जी ठलहा
मेहनत के फल बढ़िया होथे बताबो,
आवो संगी आवो नवा साल मनाबो.

*****

एक सुंदर सुबह हुई

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवारीनारायण

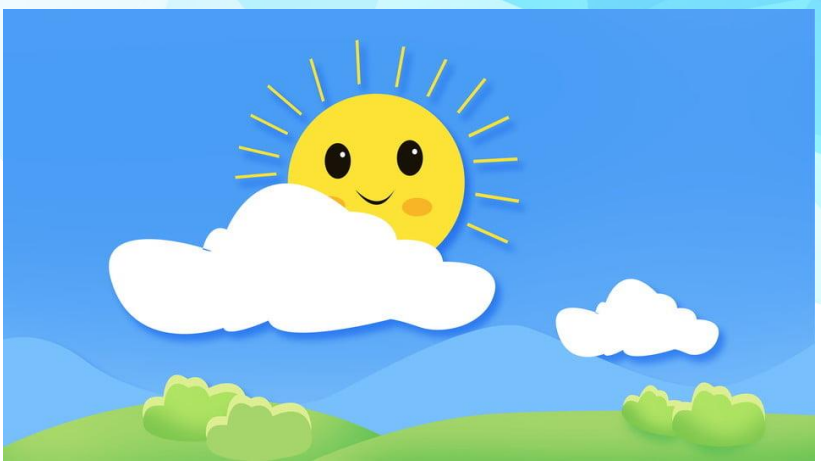

एक प्यारी-सी सुंदर सुबह हुई
रवि की सुनहरी किरणे छाई,
आसमान पर है सिंदूरी लाली
चिड़ियों ने स्वागत गीत गाई.

धन्य-धरा यह मगन हो रही है,
कण-कण में है संगीत समाई.
फुल-कली अब खिलने लगे हैं,
फुलवारी में सौरभता है छाई.

तितली अठखेलियाँ करती हैं
गुन-गुन-गुन-गुन भौरें गाते हैं
रस से भरे यह फुल ललचाते
सुहानी सुबह सबको भाते हैं.

*****

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 ह		2		3 रि	4		5 अ		6
		7	8		9 ट				
		10 न		11			12	13	
	14					15 चि			
	16 छे		17						
18 टू					19 ची				20
		21 ह					22	23 ई	
24				25 म		26			
						27 ल	28		29
30 आ							31 ज		

बाएँ से दाएँ

1. छत्तीसगढ़ का प्रथम त्यौहार
3. उड़ेल 5. थक हार जाना
7. मचान 9. खिसका
10. विवाह का एक रस्म
12. रात 15. चिथड़ा
16. कृषकों, गांव का अंतिम त्यौहार 18. लड़की
19. चांवल की पतली रोटी
21. शर्म (उर्दू) 22. एक कसैला फल का नाम 24. नारायण भक्त
25. मरियल. 27. हितैषी
30. कृष्ण जन्माष्मी 31. जला हुआ

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

1 गु	2 घ	3 री		4 प			5 बो	क	6 रा
7 न	र	वा		8 झ	9 क	न	हा		त
मु		10 ज	11 ब	र	न		य		रा
12 न	वा		खा		13 क	भू		14 ब	नी
हा		15 क	न	16 प	ट्टा			न	
		न्ने		नी		17 ब	न	गं	वा
18 गु	ड़ा	खु		य		घा		ई	
र			19 भ	र	20 मा	र		21 हा	22 ल
23 मे	छ	रा	य		खु				घि
ट			रा		24 र	म	के	लि	या

ऊपर से नीचे

1. सगाई 2. कछुआ 4. हिरण
5. व्यर्थ , अकारण 6. काला
8. इच्छा(हिंदी) 11. बूढ़ा
13. विश्राम किया
14. कचहरी 15. कीचड़
17. बकरी 18. बांस का बड़ा टोकरा 19. बाण 20. गरम
21. धम्म /एकाएक
23. रविवार 25. गांव का मेला 26 हिल, हिलना
28. एक नाप का नाम/हाथी (हिंदी) 29. रुको